धर्म्मपुस्तक

अर्थात्

पुराना और नया धर्म्म नियम

जो

इबरी और यूनानी भाषा से हिन्दी में किया गया।

Bible. Hindustan. 1909.

THE

HOLY BIBLE

CONTAINING THE

OLD AND NEW TESTAMENTS

IN THE

HINDI LANGUAGE,

TRANSLATED OUT OF THE ORIGINAL TONGUES.

ALLAHABAD.
BRITISH AND FOREIGN BIBLE SOCIETY,
(NORTH INDIA AUXILIARY.)

1909.

School of Theology Library
Anderson College & Theological Seminary
Anderson, Indiana

BS 315 .H4 1907

पुराने और नये धर्म्म नियम

की पुस्तकों के नाम

और

उन का सूचीपत्र और पर्ब्बों की संख्या ।

पुराने नियम की पुस्तकें ।

पुस्तकों के नाम ।	अध्याय ।	पुस्तकों के नाम ।	अध्याय ।
उत्पत्ति ...	५०	सभोपदेशक ।	१२
निर्गमन ।	४०	श्रेष्ठगीत ।	८
लैव्यव्यवस्था ।	२७	यशायाह ।	६६
गणना ।	३६	यिर्मयाह ।	५२
व्यवस्थाविवरण ।	३४	बिलापगीत ।	५
यहोशू ।	२४	यहेजकेल ।	४८
न्यायियों का बृत्तान्त ।	२१	दानिय्येल ।	१२
रूत का बृत्तान्त ।	४	होशे ।	१४
शमूएल नाम पहिली पुस्तक ।	३१	योएल ।	३
शमूएल नाम दूसरी पुस्तक ।	२४	आमोस ।	९
राजाओं के बृत्तान्त पहिला भाग ।	२२	ओबद्याह ।	१
राजाओं के बृत्तान्त दूसरा भाग ।	२५	योना ।	४
तवारीख की पहिली पुस्तक ।	२९	मीका ।	७
तवारीख की दूसरी पुस्तक ।	३६	नहूम ।	३
एज्रा ।	१०	हबक्कूक ।	३
नहेम्याह ।	१३	सपन्याह ।	३
एस्तेर ।	१०	हाग्गै ।	२
अय्यूब ।	४२	जकर्याह ।	१४
स्तोत्रसंहिता ।	१५०	मलाकी ।	४
नीतिबचन ।	३१		

23633

School of Theology Library
Anderson College & Theological Seminary
Anderson, Indiana

नये नियम की पुस्तकें।

पुस्तकों के नाम।	अध्याय।	पुस्तकों के नाम।	अध्याय।
मत्ती रचित सुसमाचार।	२८	तिमोथियु को पावल प्रेरित की पहिली पत्री।	६
मार्क रचित सुसमाचार।	१६	तिमोथियु को पावल प्रेरित की दूसरी पत्री।	४
लूक रचित सुसमाचार।	२४	तीतस को पावल प्रेरित की पत्री। ...	३
योहन रचित सुसमाचार	२१	फिलीमोन को पावल प्रेरित की पत्री। ...	१
प्रेरितों की क्रियाओं का वृत्तान्त।	२८	इब्रियों को (पावल प्रेरित की) पत्री। ...	१३
रोमियों को पावल प्रेरित की पत्री। ...	१६	याकूब प्रेरित की पत्री।	५
कारिन्थियों को पावल प्रेरित की पहिली पत्री।	१६	पितर प्रेरित की पहिली पत्री।	५
कारिन्थियों को पावल प्रेरित की दूसरी पत्री।	१३	पितर प्रेरित की दूसरी पत्री।	३
गलातियों को पावल प्रेरित की पत्री। ...	६	योहन प्रेरित की पहिली पत्री।	५
इफिसियों को पावल प्रेरित की पत्री। ...	६	योहन प्रेरित की दूसरी पत्री।	१
फिलिपीयों को पावल प्रेरित की पत्री। ...	४	योहन प्रेरित की तीसरी पत्री।	१
कलस्सीयों को पावल प्रेरित की पत्री। ...	४	यिहूदा की पत्री	१
थिसलोनिकियों को पावल प्रेरित की पहिली पत्री।	५	योहन का प्रकाशितवाक्य।	२२
थिसलोनिकियों को पावल प्रेरित की दूसरी पत्री।	३		

उत्पत्ति नाम पुस्तक।

(सृष्टि का वर्णन.)

आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथिवी को सिरजा ॥ २। और पृथिवी यों ही सुनसान पड़ी थी और गहिरे जल के ऊपर अंधियारा था और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर ऊपर मण्डलाता था ॥ ३। तब परमेश्वर ने कहा उजियाला होवे सो उजियाला हो गया ॥ ४। और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है और परमेश्वर ने उजियाले और अंधियारे को अलग अलग किया ॥ ५। और परमेश्वर ने उजियाले को दिन कहा और अंधियारे को उस ने रात कहा और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो एक दिन हो गया ॥

६। फिर परमेश्वर ने कहा जल के बीच ऐसा एक अन्तर होवे कि जल दो भाग हो जावे ॥ ७। सो परमेश्वर ने एक अन्तर करके उस के नीचे के जल और उस के ऊपर के जल को अलग अलग किया और वैसा ही हो गया ॥ ८। और परमेश्वर ने उस अन्तर को आकाश कहा और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो दूसरा दिन हो गया ॥

९। फिर परमेश्वर ने कहा आकाश के नीचे का जल एक स्थान में एकट्ठा होवे और सूखी भूमि दिखाई देवे और वैसा ही हो गया ॥ १०। और परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथिवी कहा और जो जल एकट्ठा हुआ उस को उस ने समुद्र कहा और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है ॥ ११। फिर परमेश्वर ने कहा पृथिवी से हरी घास और बीजवाले छोटे छोटे पेड़ उगने लगें और फलदाई वृक्ष भी जो अपनी अपनी जाति के अनुसार फलें और जिन के बीज पृथिवी पर उन्हीं में होवें सो भी उगने लगें और वैसा ही हो गया ॥ १२। सो पृथिवी से हरी घास और छोटे छोटे पेड़ उगने लगे जिन में अपनी अपनी जाति के अनुसार बीज होता है और फलदाई वृक्ष जिन के बीज एक एक की जाति के अनुसार उन्हीं में होते हैं सो भी उगने लगे और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है ॥ १३। और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो तीसरा दिन हो गया ॥

१४। फिर परमेश्वर ने कहा दिन और रात अलग अलग करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियां होवें और वे चिन्हों और नियत समयों और दिनों और बरसों के कारण होवें ॥ १५। और वे ज्योतियां आकाश के अन्तर में पृथिवी पर प्रकाश देनेहारी भी ठहरें और वैसा ही हो गया ॥ १६। इस रीति परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाईं उन में से बड़ी ज्योति तो दिन पर प्रभुता करने को लिये और छोटी ज्योति रात पर प्रभुता करने के लिये बनाई और तारागण को भी बनाया ॥ १७। और परमेश्वर ने उन को आकाश के अन्तर में इस लिये रक्खा कि वे पृथिवी पर प्रकाश देवें ॥ १८। और दिन और रात पर प्रभुता करें और उजियाले और अंधियारे को अलग अलग करें और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है ॥ १९। और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो चौथा दिन हो गया ॥

२०। फिर परमेश्वर ने कहा जल जीते प्राणियों से बहुत ही भर जावे और पक्षी पृथिवी के ऊपर आकाश के अन्तर में उड़ें ॥ २१। सो परमेश्वर ने जाति जाति के बड़े बड़े जलजन्तुओं को और उन सब जीते प्राणियों को भी सिरजा जो चलते हैं जिन से जल बहुत ही भर गया और एक एक जाति के उड़नेहारे पक्षियों को भी सिरजा और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है ॥ २२। और परमेश्वर ने यह कहके उन को आशीष दिई कि फूलो फलो और समुद्र के जल में भर जाओ और पक्षी पृथिवी पर बढ़ें ॥ २३। और सांझ हुई फिर भोर हुआ सो पांचवां दिन हो गया ॥

२४। फिर परमेश्वर ने कहा पृथिवी से एक एक जाति के जीते प्राणी उत्पन्न होवें अर्थात् ग्रामपशु और रेंगनेहारे जन्तु और पृथिवी के बनपशु जाति

उपजाऊंगा वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उस की एड़ी को कुचल डालेगा ॥ १६ । फिर स्त्री से उस ने कहा मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊंगा तू पीड़ित होके बालक जनेगी और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी और वह तुझ पर प्रभुता करेगा ॥ १७ । और आदम से उस ने कहा तू ने जो अपनी स्त्री की सुनी और जिस वृक्ष के फल के विषय में ने तुझे आज्ञा दिई थी कि तू उसे न खाना उस को तू ने खाया है इस लिये भूमि तेरे कारण खापित है तू उस की उपज जीवन भर पीड़ित हो होके खाया करेगा ॥ १८ । और वह तेरे लिये कांटे और कंटकटारे उगावेगी सो भूमि के छोटे छोटे पेड़ों से तेरा भोजन इस रीति चलेगा कि ॥ १९ । अपने सिर के पसीने की रोटी तू खाया करेगा और अन्त में मिट्टी में मिल जावेगा क्योंकि तू उसी में से निकाला गया फिर कहता हूं तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जावेगा ॥ २० । और आदम ने अपनी स्त्री का नाम हव्वा रक्खा क्योंकि जितने मनुष्य जीते हैं उन सब की आदिमाता वही हुई ॥ २१ । और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उस की स्त्री के लिये चमड़े के अंगरखे बनाके उन को पहिना दिये ॥

२२ । फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा सोचने की बात है कि मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाके हम में से एक के समान हो गया है सो अब ऐसा न होवे कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़के खावे और सदा जीता रहे ॥ २३ । यह सोचके यहोवा परमेश्वर ने उस को एदेन की बारी में से निकाल दिया जिस्तें वह उस भूमि पर खेती करे जिस में से वह बनाया गया था ॥ २४ । आदम को तो उस ने दुर्दुराके निकाल दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये एदेन की बारी की पूरब ओर करूबों को और चारों ओर घूमती हुई ज्वालामय तलवार को भी ठहरा दिया ॥

(आदम के पुत्रों का वर्णन.)

४ जब आदम ने अपनी स्त्री हव्वा से प्रसंग किया तब वह गर्भवती होके कैन को जनी और कहा मैं ने यहोवा की सहायता से एक पुरुष पाया है ॥ २ । फिर वह उस के भाई हाबिल को भी जनी और हाबिल तो भेड़ बकरियों का चरवाहा हुआ पर कैन भूमि की खेती करनेहारा हुआ ॥ ३ । कुछ दिन बीते पर कैन यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ भेंट ले आया ॥ ४ । और हाबिल भी अपनी भेड़ बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट करके ले आया और उन की चर्बी चढ़ाई तब यहोवा ने हाबिल और उस की भेंट का तो मान किया ॥ ५ । पर कैन और उस की भेंट का उस ने मान न किया यह देखके कैन अति क्रोधित हुआ और उस के मुंह पर उदासी छा गई ॥ ६ । तब यहोवा ने कैन से कहा तू क्यों क्रोधित हुआ और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है ॥ ७ । यदि तू भला करे तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न किई जावेगी और यदि तू भला न करे तो जान कि पाप मानो द्वार पर दबका रहता है और उस की लालसा तेरी ओर होगी और तू उस पर प्रभुता करेगा ॥ ८ । पीछे कैन ने अपने भाई हाबिल से कुछ कहा और जब वे चौगान में थे तब कैन ने अपने भाई हाबिल पर चढ़के उसे घात किया ॥ ९ । तब यहोवा ने कैन से पूछा तेरा भाई हाबिल कहां है उस ने कहा मालूम नहीं क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं ॥ १० । उस ने कहा तू ने क्या किया है तेरे भाई का लोहू तो भूमि में से मेरी ओर चिल्ला चिल्लाके मेरी दोहाई दे रहा है ॥ ११ । सो अब भूमि जिस ने मानो तेरे भाई का लोहू तेरे हाथ से पीने के लिये अपना मुंह पसारा है उस की ओर से तू खापित है ॥ १२ । चाहे तू भूमि पर खेती करे तौभी उस की पूरी उपज फिर तुझे न मिलेगी और तू पृथिवी पर बहेतू और भगोड़ा होवेगा ॥ १३ । इतना सुनके कैन ने यहोवा से कहा मेरा दण्ड सहने से बाहर है ॥ १४ । देख तू ने आज के दिन मुझे भूमि पर से दुर्दुराके निकाला है और मैं तेरी दृष्टि की ओट रहूंगा और पृथिवी पर बहेतू और भगोड़ा रहूंगा और जो कोई मुझे पावेगा सो मुझे घात करेगा ॥ १५ । यहोवा ने उस से कहा हे कैन इस कारण जो कोई तुझ को घात करे उस से सातगुणा पलटा लिया जावेगा । यह कहके यहोवा ने कैन के लिये एक चिन्ह ठहराया न होवे कि कोई उसे पाके मारे ॥

१६ । इतने पर कैन यहोवा के सन्मुख से निकल गया और नोद नाम देश में जो एदेन की पूरब ओर है रहने लगा ॥ १७ । जब कैन ने अपनी स्त्री से प्रसंग किया तब वह गर्भवती होके हनोक को जनी फिर कैन एक नगर बसाने लगा और उस नगर का नाम अपने पुत्र के नाम पर हनोक रक्खा ॥ १८ । और हनोक से ईराद जन्मा और ईराद ने महूयाएल को जन्माया और महूयाएल ने मतूशाएल को और मतूशाएल ने लेमेक को जन्माया ॥ १९ । और लेमेक ने दो स्त्रियां ब्याह लिईं जिन में से एक का नाम आदा और दूसरी का सिल्ला है ॥ २० । और आदा याबाल को जनी सो तम्बुओं में रहने और ढोर के पालने दोनों रीतियों का चलानेहारा हुआ ॥ २१ । और उस के भाई का नाम यूबाल है सो बीणा और बांसुरी आदि बाजों के बजाने की सारी रीति का चलानेहारा हुआ ॥ २२ । और सिल्ला भी तूबल्कैन नाम एक पुत्र जनी सो पीतल और लोहे के सब धारवाले हथियारों का गढ़नेहारा हुआ और तूबल्कैन की बहिन नामा थी ॥ २३ । एक दिन लेमेक ने अपनी स्त्रियों से कहा हे आदा और हे सिल्ला मेरी सुनो हे मुझ लेमेक की स्त्रियों मेरी बात पर कान लगाओ कि मैं ने एक पुरुष को जो मेरे चोट लगाता था अर्थात् एक जवान को जो मुझे घायल करता था घात किया है ॥ २४ । जब कैन का पलटा सातगुणा लिया जावेगा तो मुझ लेमेक का सतहत्तरगुणा लिया जावेगा ॥

२५ । पीछे आदम ने अपनी स्त्री से फिर प्रसंग किया और वह पुत्र जनी और उस का नाम यह कहके शेत रक्खा कि परमेश्वर ने मेरे लिये हाबिल की सन्तो जिस को कैन ने घात किया एक और वंश ठहरा दिया है ॥ २६ । और शेत के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ और उस ने उस का नाम एनोश रक्खा उसी समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे ॥

(आदम की वंशावली.)

५ आदम की वंशावली यह है । जब परमेश्वर ने मनुष्य को सिरजा तब अपनी समानता ही में बनाया ॥ २ । नर और नारी करके उस ने मनुष्यों को सिरजा और उन्हें आशीष दिई और उन की सृष्टि के दिन उन का नाम आदम रक्खा ॥ ३ । जब आदम एक सौ तीस बरस का हुआ तब उस ने अपनी समानता में अपने स्वरूप के अनुसार एक पुत्र जन्माके उस का नाम शेत रक्खा ॥ ४ । और शेत को जन्माने के पीछे आदम आठ सौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥ ५ । निदान आदम की सारी अवस्था नौ सौ तीस बरस की हुई तब वह मर गया ॥

६ । जब शेत एक सौ पांच बरस का हुआ तब उस ने एनोश को जन्माया ॥ ७ । और एनोश को जन्माने के पीछे शेत आठ सौ सात बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥ ८ । निदान शेत की सारी अवस्था नौ सौ बारह बरस की हुई तब वह मर गया ॥

९ । जब एनोश नब्बे बरस का हुआ तब उस ने केनान को जन्माया ॥ १० । और केनान को जन्माने के पीछे एनोश आठ सौ पन्द्रह बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥ ११ । निदान एनोश की सारी अवस्था नौ सौ पांच बरस की हुई तब वह मर गया ॥

१२ । जब केनान सत्तर बरस का हुआ तब उस ने महललेल को जन्माया ॥ १३ । और महललेल को जन्माने के पीछे केनान आठ सौ चालीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥ १४ । निदान केनान की सारी अवस्था नौ सौ दस बरस की हुई तब वह मर गया ॥

१५ । जब महललेल पैंसठ बरस का हुआ तब उस ने येरेद को जन्माया ॥ १६ । और येरेद को जन्माने के पीछे महललेल आठ सौ तीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥ १७ । निदान महललेल की सारी अवस्था आठ सौ पंचानवे बरस की हुई तब वह मर गया ॥

ग्रामपशु क्या वनपशु पृथिवी पर सब चलनेहारे शरीरधारी बल्कि जितने जन्तु पृथिवी में बहुतायत से भर गये थे उन सभों का और सब मनुष्यों का भी प्राण छूट गया ॥ २२ । जो जो स्थल पर थे उन में से जितनों के नथनों में जीवनयुक्त आत्मा का श्वास था सब मर मिटे ॥ २३ । और क्या मनुष्य क्या पशु क्या रेंगनेहारे जन्तु क्या आकाशचारी पक्षी जो जो भूमि पर थे सो सब पृथिवी पर से मिट गये केवल नूह और जितने उस के संग जहाज में थे सोई बच गये ॥ २४ । और जल पृथिवी पर एक सौ पचास दिन लों बढ़ा रहा ॥

८. उतने दिनों के बीतने पर परमेश्वर ने नूह को और जितने वनपशु और ग्रामपशु उस के संग जहाज में थे उन सभों को सुधि लिई और परमेश्वर ने पृथिवी पर पवन बहाई तब जल घटने लगा ॥ २ । और गहिरे समुद्र के सोते और आकाश के झरोखे मुंद गये और उस से जो वृष्टि होती थी सो थम गई ॥ ३ । और एक सौ पचास दिन के बीते पर जल पृथिवी पर से लगातार घटने लगा ॥ ४ । सातवें महीने की सतरहवीं तिथि को जहाज अरारात नाम पहाड़ पर टिक गया ॥ ५ । और जल दसवें महीने लों घटता चला गया सो दसवें महीने की परिवा को पहाड़ों की चोटियां दिखाई दिईं ॥ ६ । फिर चालीस दिन के पीछे नूह ने अपने बनाये हुए जहाज की खिड़की को खोलके ॥ ७ । एक कौवा उड़ा दिया सो जब लों जल पृथिवी पर से सूख न गया तब लों इधर उधर फिरता रहा ॥ ८ । फिर उस ने अपने पास से एक कबूतरी को भी उड़ा दिया जिस्ते देखे कि जल भूमि पर से घट गया कि नहीं ॥ ९ । उस कबूतरी को जो अपने चंगुल के टेकने के लिये कोई स्थान न मिला सो वह उस के पास जहाज में लौट आई क्योंकि सारी पृथिवी के ऊपर जल ही जल रहा तब उस ने हाथ बढ़ाके उसे अपने पास जहाज में रख लिया ॥ १० । तब और सात दिन लों ठहरके उस ने उसी कबूतरी को जहाज में से फिर उड़ा दिया ॥ ११ । और कबूतरी सांझ के समय उस के पास आ गई और क्या देख पड़ा कि उस की चोंच में जलपाई का एक नया पत्ता है इस से नूह ने जान लिया कि जल पृथिवी पर घट गया है ॥ १२ । फिर उस ने और सात दिन ठहरके उसी कबूतरी को उड़ा दिया और वह उस के पास फिर कभी लौटके न आई ॥ १३ । जब छः सौ बरस पूरे हुए तब दूसरे दिन जल पृथिवी पर से सूख गया था तब नूह ने जहाज की छत खोलके क्या देखा कि धरती सूख गई है ॥ १४ । और दूसरे महीने की सत्ताईसवीं तिथि को पृथिवी पूरी रीति से सूख गई ॥

१५ । तब परमेश्वर ने नूह से कहा ॥ १६ । तू अपने पुत्रों स्त्री और बहुओं समेत जहाज में से निकल आ ॥ १७ । क्या पक्षी क्या पशु क्या सब भांति के रेंगनेहारे जन्तु जो पृथिवी पर रेंगते हैं जितने शरीरधारी जीवजन्तु तेरे संग हैं उन सब को अपने साथ निकाल ले आ जिस्तें पृथिवी पर उन से बहुत बच्चे उत्पन्न होवें और वे फूलें फलें और पृथिवी पर फैल जावें ॥ १८ । यह आज्ञा पाके नूह और उस के पुत्र स्त्री और बहुएं निकल आईं ॥ १९ । और सब चौपाये रेंगनेहारे जन्तु और पक्षी निदान जितने जीवजन्तु पृथिवी पर चलते फिरते हैं सो सब जाति जाति करके जहाज में से निकल आये ॥ २० । तब नूह ने यहोवा की एक वेदी बनाई और सब शुद्ध पशुओं और सब शुद्ध पक्षियों में से कुछ कुछ लेकर वेदी पर होमबलि करके चढ़ाये ॥ २१ । इस पर यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध पाके सोचा कि मैं मनुष्य के कारण फिर भूमि को कभी साप न देऊंगा हां मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता सो बुरा ही होता तो है तौभी जैसा मैं ने सब जीवधारियों को अब मारा है वैसा उन को फिर कभी न मारूंगा ॥ २२ । अब से जब लों पृथिवी बनी रहेगी तब लों बोने और लवने के समय ठंड और तपन धूपकाल और शीतकाल दिन और रात निरन्तर होती चली जावेंगी ।

९. फिर परमेश्वर ने नूह और उस के पुत्रों को यह आशीष दिई कि फूलो फलो और बढ़ो और पृथिवी में भर जाओ ॥ २ । और

तुम्हारा डर और प्रताप पृथिवी के सब पशुओं और आकाशचारी सब पक्षियों और भूमि पर के सब रेंगनेहारे जन्तुओं और समुद्र की सब मछलियों पर बना रहेगा वे सब तुम्हारे बश में कर दिये जाते हैं ॥ ३ । सब चलनेहारे जीते जन्तु तुम्हारा आहार होवेंगे जैसा तुम को अन्नादि हरे हरे छोटे पेड़ दिये थे तैसा ही अब सब कुछ देता हूं ॥ ४ । हां मांस का प्राण समेत अर्थात् लोहू समेत तो तुम न खाना ॥ ५ । और निश्चय मैं तुम्हारे लोहू अर्थात् प्राण का पलटा लेऊंगा सब पशुओं और मनुष्यों दोनों से मैं उसे लेऊंगा फिर कहता हूं मनुष्य के प्राण का पलटा मैं एक एक के भाईबन्धु से लूंगा ॥ ६ । जो कोई मनुष्य का लोहू बहावे उस का लोहू मनुष्य ही से बहाया जावे क्योंकि मुझ परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है ॥ ७ । और तुम तो फूलो फलो और बढ़ो और पृथिवी में बहुत बच्चे जन्मा जन्माके उस में भर जाओ ॥

८ । फिर परमेश्वर ने नूह और उस के पुत्रों से कहा ॥ ९ । सुनो मैं आप तुम्हारे साथ और तुम्हारे पीछे जो तुम्हारा बंश होगा उस के साथ भी बाचा बांधता हूं ॥ १० । और तुम लोगों से क्या बल्कि सब जीते प्राणियों से भी जो तुम्हारे संग हैं क्या पक्षी क्या ग्रामपशु क्या पृथिवी के सब बनपशु निदान पृथिवी के जितने जीवजन्तु जहाज से निकले हैं सब के साथ भी मेरी यह बाचा बन्धती है ॥ ११ । और मैं तुम्हारे साथ अपनी इस बाचा को पूरा करूंगा कि सब शरीरधारी फिर प्रलय के जल से लोप न होवेंगे और पृथिवी के नष्ट करने के लिये फिर जल-प्रलय न होगा ॥ १२ । फिर परमेश्वर ने कहा जो बाचा मैं तुम्हारे साथ और जितने जीते प्राणी तुम्हारे संग हैं सब के साथ भी युगानयुग की पीढ़ियों के लिये बांधता हूं उस का यह चिन्ह है कि ॥ १३ । मैं ने बादल में अपना धनुष रक्खा है सो मेरे और पृथिवी के बीच में की बाचा का चिन्ह होवेगा ॥ १४ । और जब मैं पृथिवी पर बादल फैलाऊं तब बादल में धनुष देख पड़ेगा ॥ १५ । तब जो बाचा मैं ने तुम्हारे और सब जीते शरीरधारी प्राणियों के साथ बांधी है उस को मैं स्मरण करूंगा सो फिर ऐसा जलप्रलय न होवेगा जिस से सब शरीरधारियों का विनाश होवे ॥ १६ । बादल में जो धनुष होवेगा सो मैं उसे देखके यह सदा की बाचा स्मरण करूंगा जो मुझ परमेश्वर ने पृथिवी पर के सब जीते शरीरधारी प्राणियों के साथ बांधी है ॥ १७ । फिर परमेश्वर ने नूह से कहा जो बाचा मैं ने पृथिवी भर के सब शरीरधारियों के साथ बांधी है उस का चिन्ह यही है ॥

१८ । नूह के जो पुत्र जहाज में से निकले सो शेम हाम और येपेत थे और हाम जो था सोई कनान का पिता हुआ ॥ १९ । नूह के तीन पुत्र ये ही हैं और इन का बंश सारी पृथिवी पर फैल गया ॥

२० । पीछे नूह किसनई करने लगा और उस ने दाख की बारी लगाई ॥ २१ । एक दिन वह दाख-मधु पीके मतवाला हुआ और अपने तंबू के भीतर नंगा हो गया ॥ २२ । तब कनान के पिता हाम ने अपने पिता को नंगा देखा और बाहर आके अपने दोनों भाइयों को बता दिया ॥ २३ । यह सुनके शेम और येपेत दोनों ने कपड़ा लेके अपने कन्धों पर रक्खा और पीछे की ओर उलटा चलके अपने पिता के नंगे तन को ढांप दिया और वे जो अपने मुख पीछे किये थे सो उन्हों ने अपने पिता को नंगा न देखा ॥ २४ । जब नूह का नशा उतर गया तब उस ने जान लिया कि मेरे छोटे पुत्र ने मुझ से क्या किया है ॥ २५ । सो उस ने कहा कनान स्रापित होवे वह अपने भाईबन्धुओं के दासों का दास होवे ॥ २६ । फिर उस ने कहा शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य है और कनान शेम का दास होवे ॥ २७ । परमेश्वर येपेत के बंश को फैलावे और वह शेम के तंबुओं में बसे और कनान उस का दास होवे ॥

२८ । जलप्रलय के पीछे नूह साढ़े तीन सौ बरस जीता रहा ॥ २९ । निदान नूह की सारी अवस्था साढ़े नौ सौ बरस की हुई तब वह मर गया ॥

(नूह की वंशावली.)

१०. नूह के पुत्र जो शेम हाम और येपेत थे जलप्रलय के पीछे उन के पुत्र उत्पन्न हुए सो उन की बंशावली यह है ॥

२ । येपेत के पुत्र गोमेर मागोग मादै यावान तूबल मेशेक और तोरास हुए ॥ ३ । और गोमेर के पुत्र अशकनज रीफत और तोगार्मा हुए ॥ ४ । और यावान के बंश में एलीशा तर्शीश और कित्ती और दोदानी लोग हुए ॥ ५ । इन के बंश उन द्वीपों के देशों में जो अब अन्यजातियों के कहावते हैं ऐसे बंट गये कि वे भिन्न भिन्न भाषाओं कुलों और जातियों के अनुसार अलग अलग हो गये ॥

६ । फिर हाम के पुत्र कूश मिस पूत और कनान हुए ॥ ७ । और कूश के पुत्र सबा हवीला सबता रामा और सबतका हुए और रामा के पुत्र शबा और ददान हुए ॥ ८ । और कूश के बंश में निम्रोद भी हुआ पृथिवी पर पहिला बीर वही हुआ ॥ ९ । वह यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकार खेलनेहारा ठहरा इस से यह कहावत चली है कि निम्रोद के समान यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकार खेलनेहारा ॥ १० । और उस की प्रथम राजधानी बाबेल हुआ और एरेक अक्कद और कलने ये भी उस की राजधानियां हुईं ये सब नगर शिनार देश में हैं ॥ ११ । उस देश से वह निकलके अश्शूर को गया और नीनवे रहोबोतीर और कालह को ॥ १२ । और नीनवे और कालह के बीच जो रेसेन है उसे भी बसाया बड़ा नगर यही है ॥ १३ । और मिस्र के बंश में लूदी अनामी लहाबी नप्तूही ॥ १४ । पत्रूसी कसलूही और कप्तोरी लोग हुए कसलूहियों में से तो पलिश्ती लोग निकले ॥

१५ । फिर कनान के बंश में उस का जेठा सीदोन तब हित्त ॥ १६ । और यबूसी एमोरी गिर्गाशी ॥ १७ । हिव्वी अर्की सीनी ॥ १८ । अर्वदी समारी और हमाती लोग भी हुए और कनानियों के कुल पीछे ही फैल गये ॥ १९ । और कनानियों का सिवाना सीदोन से लेके गरार के मार्ग से होके अज्जा लों और फिर सदोम अमोरा अदमा और सबोयीम के मार्ग से होके लाशा लों हुआ ॥ २० । हाम के बंश ये ही हुए और ये भिन्न भिन्न कुलों भाषाओं देशों और जातियों के अनुसार अलग अलग हो गये ॥

२१ । फिर शेम जो सब एबेरबंशियों का मूलपुरुष हुआ और येपेत का जेठा भाई था उस के भी पुत्र उत्पन्न हुए ॥ २२ । शेम के पुत्र एलाम अश्शूर अर्पक्षद लूद और अराम हुए ॥ २३ । और अराम के पुत्र ऊस हूल गेतेर और मश हुए ॥ २४ । और अर्पक्षद ने शेलह को और शेलह ने एबेर को जन्माया ॥ २५ । और एबेर के दो पुत्र उत्पन्न हुए एक का नाम पेलेग इस कारण रक्खा गया कि उस के दिनों में पृथिवी बंट गई और उस के भाई का नाम योक्तान है ॥ २६ । और योक्तान ने अलमोदाद शेलेप हसर्मावेत येरह ॥ २७ । यदोराम ऊजाल दिक्ला ॥ २८ । ओबाल अबीमाएल शबा ॥ २९ । ओपीर हवीला और योबाब को जन्माया ये ही सब योक्तान के पुत्र हुए ॥ ३० । इन के रहने का स्थान मेशा से लेके सपारा जो पूरब में एक पहाड़ है उस के मार्ग लों हुआ ॥ ३१ । शेम के पुत्र ये ही हुए और ये भिन्न भिन्न कुलों भाषाओं देशों और जातियों के अनुसार अलग अलग हो गये ॥

३२ । नूह के पुत्रों के कुल ये ही हैं और उन की जातियों के अनुसार उन की बंशावलियां ये ही हैं और जलप्रलय के पीछे पृथिवी भर की जातियां इन्हीं से होके बंट गईं ॥

(मनुष्य की भाषा में गड़बड़ पड़ने का वर्णन.)

११. पहिले तो सारी पृथिवी पर एक ही भाषा और एक ही बोली थी ॥ २ । उस समय लोग पूरब ओर चलते चलते शिनार देश में एक चौगान पाके उस में बस गये ॥ ३ । तब वे आपस में कहने लगे आओ हम ईंटें बना बनाके भली भांति पकावें सो उन के लिये ईंटें पत्थरों का और मिट्टी को राल गारे का काम देती थी ॥ ४ । फिर उन्हों ने कहा आओ हम एक नगर और एक गुम्मट बना लेवें जिस की चोटी स्वर्ग से बातें करे इस प्रकार से हम अपना नाम

करें न होवे कि हम को सारी पृथिवी पर फैलना पड़े ॥ ५ । ऐसा ठानके जब आदमबंशी नगर और गुम्मट बनाने लगे तब उन्हें देखने के लिये यहोवा उतर आया ॥ ६ । और यहोवा ने कहा मैं क्या देखता हूं कि सब एक ही समुदाय के हैं और भाषा भी उन सब की एक ही है और उन्हों ने ऐसा ही कार्य्य भी आरंभ किया सो अब जितना वे करने का यत्न करेंगे उस में से कुछ उन के लिये अनहोना न होगा ॥ ७ । सो आओ हम उतरके उन की भाषा में वहीं गड़बड़ डालें जिस्से वे एक दूसरे की बोली को न समझ सकें ॥ ८ । ऐसा ही करके यहोवा ने उन को वहां से सारी पृथिवी के ऊपर फैला दिया और उन्हें उस नगर का बनाना छोड़ देना पड़ा ॥ ९ । इस कारण उस नगर का नाम बाबेल पड़ा क्योंकि सारी पृथिवी की भाषा में जो गड़बड़ है सो यहोवा ने वहीं डाली और वहीं से यहोवा ने मनुष्यों को सारी पृथिवी के ऊपर फैला दिया ॥

(शेम की वंशावली.)

१० । शेम की बंशावली यह है जलप्रलय के दो बरस पीछे जब शेम एक सौ बरस का हुआ तब उस ने अर्पक्षद को जन्माया ॥ ११ । और अर्पक्षद को जन्माने के पीछे शेम पांच सौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

१२ । जब अर्पक्षद पैंतीस बरस का हुआ तब उस ने शेलह को जन्माया ॥ १३ । और शेलह को जन्माने के पीछे अर्पक्षद चार सौ तीन बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

१४ । जब शेलह तीस बरस का हुआ तब उस ने एबेर को जन्माया ॥ १५ । और एबेर को जन्माने के पीछे शेलह चार सौ तीन बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

१६ । जब एबेर चौंतीस बरस का हुआ तब उस ने पेलेग को जन्माया ॥ १७ । और पेलेग को जन्माने के पीछे एबेर चार सौ तीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

१८ । जब पेलेग तीस बरस का हुआ तब उस ने रू को जन्माया ॥ १९ । और रू को जन्माने के पीछे पेलेग दो सौ नौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

२० । जब रू बत्तीस बरस का हुआ तब उस ने सरूग को जन्माया ॥ २१ । और सरूग को जन्माने के पीछे रू दो सौ सात बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

२२ । जब सरूग तीस बरस का हुआ तब उस ने नाहोर को जन्माया ॥ २३ । और नाहोर को जन्माने के पीछे सरूग दो सौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

२४ । जब नाहोर उनतीस बरस का हुआ तब उस ने तेरह को जन्माया ॥ २५ । और तेरह को जन्माने के पीछे नाहोर एक सौ उन्नीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

२६ । जब तक तेरह सत्तर बरस का हुआ तब तक उस ने अब्राम नाहोर और हारान को जन्माया था ॥

२७ । तेरह की यह बंशावली है कि तेरह ने अब्राम नाहोर और हारान को जन्माया और हारान ने लूत को जन्माया ॥ २८ । और हारान अपने पिता के साम्हने ही कसदियों के ऊर नाम नगर में जो उस की जन्मभूमि थी मर गया ॥ २९ । अब्राम और नाहोर ने स्त्रियां ब्याह लिईं अब्राम की स्त्री का नाम तो सारै और नाहोर की स्त्री का नाम मिल्का है यह उस हारान की बेटी थी जो मिल्का और यिस्का दोनों का पिता था ॥ ३० । सारै तो बांझ थी उस के सन्तान न हुआ ॥ ३१ । एक समय तेरह अपना पुत्र अब्राम और अपना पोता लूत जो हारान का पुत्र था और अपनी बहू सारै जो उस के पुत्र अब्राम की स्त्री थी इन सभों को लेके कसदियों के ऊर नगर से निकल कनान देश जाने को चला तो सही पर हारान नाम देश में पहुंचके वहीं रहने लगा ॥ ३२ । निदान जब तेरह दो सौ पांच बरस का हुआ तब वह हारान देश में मर गया ॥

(परमेश्वर की ओर से इब्राहीम के बुलाये जाने का वर्णन.)

१२. एक दिन यहोवा ने अब्राम से कहा अपने देश और अपनी जन्मभूमि और अपने पिता के घर को छोड़के उस देश

में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा ॥ २ । वहां मैं तुझ से एक बड़ी जाति उपजाऊंगा और तुझे आशीष देऊंगा और तेरा नाम बड़ा करूंगा और तू आशीष का मूल होवे ॥ ३ । और जो तुझे आशीर्बाद देवें उन्हें मैं आशीष देऊंगा और जो तुझे कोसे उसे मैं साप देऊंगा और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पावेंगे ॥ ४ । यहोवा के इस कहे के अनुसार अब्राम चला और लूत भी उस के संग चला और जब अब्राम हारान देश से निकला तब वह पचहत्तर बरस का था ॥ ५ । इस रीति जब अब्राम अपनी स्त्री सारै और अपने भतीजे लूत को और जो धन उन्हों ने एकट्ठा किया था और जो प्राणी उन्हों ने हारान में प्राप्त किये थे सब को लेके कनान देश में जाने को निकल चला तब वे कनान देश में आ भी गये ॥ ६ । उस देश के बीच से जाते जाते अब्राम शकेम का स्थान जहां मोरे का बांज वृक्ष है वहां लों पहुंच गया जानना चाहिये कि उस समय उस देश में कनानी लोग रहते थे ॥ ७ । तब यहोवा ने अब्राम को दर्शन देके कहा यह देश मैं तेरे बंश को देऊंगा यह सुनके उस ने यहोवा जिस ने उस को दर्शन दिया था वहां उस की एक बेदी बनाई ॥ ८ । फिर वहां से कूच करके वह उस पहाड़ पर आया जो बेतेल की पूरब ओर है और अपना तंबू उस स्थान में खड़ा किया जिस की पच्छिम ओर तो बेतेल और पूरब ओर ऐ है और वहां भी उस ने यहोवा की एक बेदी बनाई और यहोवा से प्रार्थना किई ॥ ९ । पीछे अब्राम दक्षिण देश की ओर कूच कर करके चलता गया ॥

१० । उन दिनों उस देश में अकाल पड़ा सो वहां जो भारी अकाल पड़ा इस लिये अब्राम मिस्र को चला कि वहां परदेशी होके रहे ॥ ११ । मिस्र के निकट पहुंचके उस ने अपनी स्त्री सारै से कहा सुन मुझे मालूम तो है कि तू सुन्दरी स्त्री है ॥ १२ । इस कारण जब मिस्री लोग तुझे देखेंगे तब कहेंगे यह उस की स्त्री है सो वे मुझ को तो मार डालेंगे पर तुझ को जीती रख लेंगे ॥ १३ । सो कृपा करके कहना कि मैं उस की बहिन हूं जिस्से तेरी खातिर मेरा भला होवे और मेरा प्राण तेरे कारण बचे ॥ १४ । जब अब्राम मिस्र में आया तब मिस्रियों ने उस की स्त्री को देखा कि यह बहुत सुन्दरी है ॥ १५ । और फिरौन राजा के ठहराये हुए हाकिमों ने उस को देखके फिरौन के साम्हने उस की प्रशंसा किई सो वह स्त्री फिरौन के घर में रक्खी गई ॥ १६ । और उस ने उस की खातिर अब्राम की भलाई किई सो उस को भेड़ बकरी गाय बैल गदहे दास दासियां गदहियां और ऊंट मिले ॥ १७ । तब यहोवा ने फिरौन और उस के घराने पर अब्राम की स्त्री सारै के कारण बड़ी बड़ी विपत्तियां डालीं ॥ १८ । सो फिरौन ने अब्राम को बुलवाके कहा अरे तू ने मुझ से क्या किया है तू ने मुझे क्यों नहीं बताया कि यह मेरी स्त्री है ॥ १९ । तू ने क्यों कहा कि यह मेरी बहिन है तेरे यह कहने से मैं ने उसे अपनी स्त्री कर लिया तो है पर अब अपनी स्त्री को लेके चला जा ॥ २० । यह कहके फिरौन ने अपने जनों को उस के विषय में आज्ञा दिई और उन्हों ने उस को और उस की स्त्री को उस सब समेत जो उस का था बिदा कर दिया ॥

(इब्राहीम और लूत के अलग अलग होने का वर्णन.)

१३. तब अब्राम अपनी स्त्री और अपनी सारी संपत्ति समेत लूत को भी संग लिये हुए मिस्र को छोड़के कनान के दक्षिण देश में आया ॥ २ । फिर वह दक्षिण देश से कूच कर करके बेतेल के पास उसी स्थान को पहुंचा जहां उस का तंबू पहिले पड़ा था जो बेतेल और ऐ के बीच में है ॥ ३ । वह उसी बेदी का स्थान है जो उस ने वहां पहिले बनाई थी और वहां अब्राम ने फिर यहोवा से प्रार्थना किई ॥ ४ । जानना चाहिये कि अब्राम भेड़ बकरी गाय बैल और सोने रूपे का बड़ा धनी था ॥ ५ । और लूत जो अब्राम के साथ साथ चलता था उस के भी भेड़ बकरी गाय बैल और तंबू थे ॥ ६ । सो उस देश में उन दोनों की समाई न हो सकी कि वे एकट्ठे रहें क्योंकि उन के बहुत धन था यहां तक कि वे एकट्ठे न रह सके ॥ ७ ।

इतने में अब्राम और लूत की भेड़ बकरी और गाय बैल के चरवाहों में झगड़ा हुआ और उस समय कनानी और परिज्जी लोग उस देश में रहते थे ॥ ८ । यह हाल देखके अब्राम लूत से कहने लगा बिनती यह है कि मेरे और तेरे बीच और मेरे और तेरे चरवाहों के बीच में झगड़ा न होने पावे क्योंकि हम लोग भाईबन्धु हैं ॥ ९ । देख सारा देश तेरे साम्हने पड़ा है सो कृपा करके मुझ से अलग हो यदि तू बाईं ओर जावे तो मैं दहिनी ओर जाऊंगा और यदि तू दहिनी ओर जावे तो मैं बाईं ओर जाऊंगा ॥ १० । यह सुन लूत ने आंख उठाके यर्दन नदी के पासवाली सारी दून को देखा कि वह सब सिंची हुई है । जानना चाहिये कि जब लों यहोवा ने सदोम और अमोरा को नष्ट न किया था तब लों सोअर के मार्ग लों भी वह दून यहोवा की बारी और मिस्र देश के समान उपजाऊ थी ॥ ११ । यर्दन के पासवाली ऐसी ही सारी दून में रहना अंगीकार करके लूत पूरब ओर चला इस प्रकार वे एक दूसरे से अलग हो गये ॥ १२ । अब्राम तो कनान देश में रहा पर लूत उस दून के नगरों में रहने लगा और निदान अपना तंबू सदोम के निकट ही खड़ा किया ॥ १३ । जानना चाहिये कि सदोम के लोग यहोवा के लेखे में बड़े दुष्ट और पापी थे ॥ १४ । जब लूत अब्राम से अलग हो गया उस के पीछे यहोवा ने अब्राम से कहा आंख उठाके जिस स्थान पर तू है वहां से उत्तर दक्खिन पूरब पच्छिम चारों ओर दृष्टि कर ॥ १५ । क्योंकि जितनी भूमि तुझे दिखाई देती है उस सब को मैं तुझे और तेरे बंश को युगानयुग के लिये देऊंगा ॥ १६ । और मैं तेरे बंश को पृथिवी की धूल के किनकों की नाईं बहुत करूंगा यहां लों कि जो कोई पृथिवी की धूल के किनकों को गिन सके सोई तेरा बंश भी गिन सकेगा ॥ १७ । उठ इस देश की लम्बाई और चौड़ाई में चल फिर क्योंकि मैं उसे तुझी को देऊंगा ॥ १८ । इस के पीछे अब्राम अपना तंबू उखाड़के ममे के बांजों के बीच जो हेब्रोन में थे जाके रहने लगा और वहां भी यहोवा की एक बेदी बनाई ॥

(इब्राहीम की विजय और मेल्कीसेदेक के दर्शन देने का वर्णन.)

१४. शिनार के राजा अम्रापेल और एल्लासार के राजा अर्योक और एलाम के राजा कदोर्लाओमेर और गोयीम के राजा तिदाल के दिनों में क्या हुआ कि ॥ २ । वे सदोम के राजा बेरा और अमोरा के राजा बिर्शा और अदमा के राजा शिनाब और सबोयीम के राजा शेमेबेर और बेला जो सोअर भी कहावता है उस के राजा के साथ भी लड़े ॥ ३ । इन पांचों ने सिद्दीम नाम दून में जो खारे ताल के पास है एका किया ॥ ४ । बारह बरस लों तो ये कदोर्लाओमेर के अधीन रहे पर तेरहवें बरस में उस के बिरुद्ध उठे ॥ ५ । सो चौदहवें बरस में कदोर्लाओमेर और उस के संगी राजा आये और अशतरोत्कर्नैम में रपाइयों को और हाम में जूजियों को और शावे-किर्यातैम में एमियों को ॥ ६ । और सेईर नाम पहाड़ में होरियों को मारते मारते उस एल्पारान लों जो बन के पास है पहुंच गये ॥ ७ । वहां से वे घूमके एन्मिशपात को आये जो कादेश भी कहावता है और अमालेकियों के सारे देश को और उन एमोरियों को भी जीत लिया जो हससोन्तामार में रहते थे ॥ ८ । तब सदोम अमोरा अदमा सबोयीम और बेला जो सोअर भी कहावता है इन पांचों नगरों के राजा निकले और सिद्दीम नाम दून में उन के साथ युद्ध के लिये पांति बन्धाई ॥ ९ । अर्थात् एलाम के राजा कदोर्लाओमेर गोयीम के राजा तिदाल शिनार के राजा अम्रापेल और एल्लासार के राजा अर्योक इन चारों के बिरुद्ध उन पांचों ने पांति बंधाई ॥ १० । सिद्दीम नाम दून में जो लसार मिट्टी के गड़हे ही गड़हे थे सो सदोम और अमोरा के राजा भागते भागते उन में गिर पड़े और बाकी लोग पहाड़ पर भाग गये ॥ ११ । तब दूसरी ओर के राजा सदोम और अमोरा के सारे धन और भोजनबस्तुओं को लूटके चले गये ॥ १२ । और अब्राम का भतीजा लूत जो सदोम में रहता था सो उस को भी धन समेत वे लेके चले गये ॥ १३ । तब एक जन जो भागके बच गया उस ने जाके

छुटो अब्राम को समाचार दिया अब्राम तो एमोरी
मम्रे जो एशकोल और आनेर का भाई था तिस के
बांज वृक्षों के बीच में रहता था और ये लोग
अब्राम के संग बाचा बांधे हुए थे ॥ १४ । यह
सुनके कि मेरा भतीजा बन्धुआई में गया अब्राम ने
अपने तीन सा अठारह सीखे हुए दासों को जो उस
के घर में उत्पन्न हुए थे हथियार बन्धाके दान लों
उन का पीछा किया ॥ १५ । और अपने दासों के
अलग अलग दल बांधकर रात को उन पर लपकके
उन को मार लिया और होबा लों जो दमिशक की
उत्तर ओर है उन का पीछा किया ॥ १६ । और वह
सारे धन को और अपने भतीजे लूत और उस के
धन को और लूटी हुई स्त्रियों को भी निदान सब
बन्धुओं को फेर ले आया ॥ १७ । वह कदोर्लाओमेर
और उस के संगी राजाओं को जीतके लौटा आता
था कि सदोम का राजा शावे नाम दून में जो राजा
की भी दून कहावती है उस से भेंट करने को
आया ॥ १८ । तब शालेम का राजा मेलकीसेदेक
जो परमप्रधान ईश्वर का याजक भी था सो रोटी
और दाखमधु ले आया ॥ १९ । और उस ने अब्राम
को यह आशीर्वाद दिया कि परमप्रधान ईश्वर की
ओर से जो स्वर्ग और पृथिवी का अधिकारी है तू
धन्य होवे ॥ २० । और धन्य है परमप्रधान ईश्वर
जिस ने तेरे द्रोहियों को तेरे बश में कर दिया है ।
यह सुनके अब्राम ने उस को सब का दशमांश
दिया ॥ २१ । तब सदोम के राजा ने अब्राम से
कहा प्राणियों को तो मुझे दे और धन को अपने
पास रख ॥ २२ । अब्राम ने सदोम के राजा से
कहा परमप्रधान ईश्वर यहोवा जो स्वर्ग और
पृथिवी का अधिकारी है तिस की मैं यह किरिया
खाता हूं ॥ २३ । कि जो कुछ तेरा है उस में से न
तो मैं एक सूत और न जूती की बन्धनी न कोई
और बस्तु लेऊंगा ऐसा न होवे कि तू कहने पावे
कि अब्राम मेरे ही द्वारा धनी हुआ ॥ २४ । हां जो
कुछ इन जवानों ने खा लिया है और आनेर एशकोल
और मम्रे जो मेरे संग चले थे उन का भी भाग तो
मैं फेर न दूंगा वे तो अपना अपना भाग ले रक्खें ॥

(इब्राहीम के साथ यहोवा के बाचा बांधने का बर्णन.)

१५. इन बातों के पीछे यहोवा का यह
बचन दर्शन में अब्राम के पास
पहुंचा कि हे अब्राम मत डर तेरी ढाल और तेरा
अत्यन्त बड़ा फल मैं ठहरा हूं ॥ २ । इतना सुनके
अब्राम ने कहा हे प्रभु यहोवा मैं तो निर्बंश हूं और
मेरे घर का वारिस यह दमिशकी एलीएजेर होगा
सो तू मुझे क्या देवेगा ॥ ३ । फिर अब्राम ने कहा
सुन मुझे तो तू ने बंश नहीं दिया और क्या देखता
हूं कि मेरे घर में उत्पन्न हुआ एक जन मेरा वारिस
होवेगा ॥ ४ । तब यहोवा का यह बचन उस के
पास पहुंचा कि यह तेरा वारिस न होवेगा तेरा जो
निज पुत्र होगा सोई तेरा वारिस होगा ॥ ५ । फिर
उस ने उस को बाहर ले जाके कहा आकाश की
ओर दृष्टि करके तारागण को गिन क्या तू उन को
गिन सकता है फिर उस ने उस से कहा तेरा बंश
ऐसा ही होवेगा ॥ ६ । इतना सुनके उस ने यहोवा
पर बिश्वास किया और यहोवा ने इस बात को
उस के लेखे में धर्म्म गिना ॥ ७ । फिर उस ने उस
से कहा मैं वही यहोवा हूं जो तुझे कसदियों के ऊर
नगर से बाहर ले आया जिस्तें तुझ को इस देश का
अधिकार देऊं ॥ ८ । उस ने कहा हे प्रभु यहोवा
मैं कैसे जानूं कि मैं इस का अधिकारी होऊंगा ॥
९ । यहोवा ने उस से कहा मेरे लिये तीन बरस की
एक कलोर और तीन बरस की एक बकरी और
तीन बरस का एक मेंढ़ा और एक पिण्डुक और
पिण्डुकी का एक बच्चा ले ॥ १० । इन सभों को
लेके उस ने बीच बीच से दो दो टुकड़े कर दिया
और टुकड़ों को आम्हने साम्हने रक्खा हां चिड़ियाओं
को तो उस ने दो दो टुकड़े न किया ॥ ११ । और
जब जब मांसाहारी पक्षी लोथों पर झपटे तब तब
अब्राम ने उन्हें उड़ा दिया ॥ १२ । जब सूर्य्य अस्त
होने लगा तब अब्राम को घोर निद्रा पड़ी और
फिर क्या हुआ कि अत्यन्त भय और महा अन्धकार
ने उसे छा लिया ॥ १३ । तब यहोवा ने अब्राम से
कहा यह निश्चय जान कि तेरे बंश पराये देश में
चार सौ बरस लों परदेशी होके रहेंगे और उस देश

के लोगों के दास हो जावेंगे और वे उन को दुःख
देवेंगे ॥ १४ । फिर जिस जाति के वे दास होंगे उस
को मैं दण्ड दूंगा और उस के पीछे वे बड़ा धन
लेके निकल आवेंगे ॥ १५ । तू तो अपने पितरों में
कुशल के साथ मिल जावेगा तुझे पूरे बुढ़ापे में
मिट्टी दिई जावेगी ॥ १६ । पर वे चौथी ही पीढ़ी
में यहां फिर आवेंगे क्योंकि अब लों तो एमोरियों
के अधर्म्म की नाव नहीं भर गई ॥ १७ । जब सूर्य
अस्त हो गया और घोर अन्धकार छा गया तब
एक धूआं उठती हुई अंगेठी और एक जलता हुआ
पलीता देख पड़ा जो उन टुकड़ों के बीच हो होके
निकल गया ॥ १८ । उसी दिन यहोवा ने अब्राम
के साथ यह बाचा बांधी कि मिस्र के महानद से
लेके परात नाम बड़े नद लों जितना देश है उसे मैं
तेरे बंश को दिये देता हूं ॥ १९ । अर्थात् केनियों
कनिज्जियों कदमोनियों ॥ २० । हित्तियों परिज्जियों
रपाइयों ॥ २१ । एमोरियों कनानियों गिर्गाशियों और
यबूसियों का जो देश है सो मैं तुझे देता हूं ॥

(इश्माएल की उत्पत्ति का बर्णन.)

१६. अब्राम की स्त्री सारै तो कोई
सन्तान न जनी और उस
के हागार नाम एक मिस्री लौंडी थी ॥ २ । सो एक
दिन सारै ने अब्राम से कहा सुन यहोवा तो मेरी
कोख बन्द किये है सो कृपा करके मेरी लौंडी के
पास जा क्या जानिये मेरा घर उस के द्वारा बस
जावे । सारै की यह बात अब्राम ने मान लिई ॥
३ । सो जब अब्राम को कनान देश में रहते दस
बरस बीत चुके तब उस की स्त्री सारै ने अपनी
मिस्री लौंडी हागार को लेके अपने पति अब्राम को
दिया कि वह उस की स्त्री होवे ॥ ४ । और वह
हागार के पास गया और वह गर्भवती हुई और
जब उस ने जाना कि मैं गर्भवती हूं तब वह अपनी
स्वामिनी को अपने लेखे में तुच्छ गिनने लगी ॥
५ । यह देखके सारै ने अब्राम से कहा जो मुझ पर
उपद्रव हुआ सो तेरे ही सिर पर होवे सुन मैं ही ने
तो अपनी लौंडी को तेरी स्त्री कर दिया पर जब
उस ने जाना कि मैं गर्भवती हूं तब वह मुझे तुच्छ
गिनने लगी सो यहोवा मेरे तेरे बीच में न्याय करे ॥
६ । अब्राम ने सारै से कहा सुन तेरी लौंडी तेरे बश
में है जैसा तुझे भावे तैसा ही उस से कर । जब
सारै उस को दुःख देने लगी तब वह उस के साम्हने
से भाग गई ॥ ७ । तब यहोवा के दूत ने उस को
वन में शूर के मार्ग पर जल के एक सोते के पास
पाके ॥ ८ । कहा हे सारै की लौंडी हागार तू कहां
से आती और कहां को जाती है उस ने कहा मैं
तो अपनी स्वामिनी सारै के साम्हने से भाग आई
हूं ॥ ९ । यहोवा के दूत ने उस से कहा अपनी
स्वामिनी के पास लौटके उस के दाब में रह ॥
१० । फिर यहोवा के दूत ने उस से कहा मैं तेरे
बंश को बहुत बढ़ाऊंगा बल्कि वह बहुतायत के
मारे गिना भी न जावेगा ॥ ११ । फिर यहोवा के
दूत ने उस से कहा सुन तू गर्भवती है और पुत्र
जनेगी सो उस का नाम इश्माएल रखना क्योंकि
यहोवा ने तेरे दुःख का हाल सुना है ॥ १२ । और
वह मनुष्य बनैले गदहे के समान स्वाधीन रहेगा
उस का हाथ सब के बिरुद्ध उठेगा और सब के
हाथ उस के बिरुद्ध उठेंगे और वह अपने सब भाई-
बन्धुओं के साम्हने बसा रहेगा ॥ १३ । यह सुनके
उस ने यहोवा जिस ने उस से बातें किई थीं उस
का नाम यह कहके अत्ताएलरोई रक्खा कि क्या
मैं यहां भी उस को जाते हुए देखने पाई जो मेरा
देखनेहारा है ॥ १४ । इस कारण उस कूए का नाम
लहैरोई कूआं पड़ा वह तो कादेश और बेरेद के
बीच है ॥ १५ । पीछे हागार अब्राम का जन्माया
एक पुत्र जनी और अब्राम ने अपने पुत्र का नाम
जिसे हागार जनी इश्माएल रक्खा ॥ १६ । जब
हागार अब्राम के जन्माये इश्माएल को जनी उस
समय अब्राम छियासी बरस का था ॥

(खतना की विधि के ठहरने का बर्णन और
इसहाक की उत्पत्ति की प्रतिज्ञा.)

१७. जब अब्राम निन्नानवे बरस का हो
गया तब यहोवा उस को दर्शन
देके कहने लगा मैं सर्बशक्तिमान ईश्वर हूं मुझे अपने
साम्हने जानके चल और खरा रह ॥ २ । और मैं

23633
School of Theology Library
Anderson College & Theological Seminary
Anderson, Indiana

तेरे साथ बाचा बांधूंगा और तेरे बंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊंगा ॥ ३ । इतना सुनके अब्राम मुंह के बल गिरा और परमेश्वर उस से यों बातें कहता गया ॥ ४ । सुन मेरी बाचा जो तेरे साथ बंधी रहेगी सो तू जातियों के बृन्द का मूलपुरुष हो जावेगा ॥ ५ । सो अब तेरा नाम अब्राम न रहेगा तेरा नाम इब्राहीम रक्खा गया है क्योंकि मैं तुझे जातियों के बृन्द का मूलपुरुष ठहरा देता हूं ॥ ६ । और मैं तुझे अत्यन्त ही फुलाऊं फलाऊंगा और तुझ को जाति जाति का मूल बना दूंगा और तेरे बंश में राजा उत्पन्न होवेंगे ॥ ७ । और मैं तेरे साथ और तेरे पीछे पीढ़ी पीढ़ी लों तेरे बंश के साथ भी इस आशय की युगानयुग की बाचा बांधता हूं कि मैं तेरा और तेरे पीछे तेरे बंश का भी परमेश्वर रहूंगा ॥ ८ । और मैं तुझ को और तेरे पीछे तेरे बंश को भी यह सारा कनान देश जिस में तू परदेशी होके रहता है इस रीति देऊंगा कि वह युगानयुग उन की निज भूमि रहेगी और मैं उन का परमेश्वर रहूंगा ॥ ९ । फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा तू भी मेरे साथ बांधी हुई बाचा का पालन करना तू क्या अल्कि तेरे पीछे तेरे बंश भी अपनी अपनी पीढ़ी में उस का पालन करें ॥ १० । मेरे साथ बांधी हुई जो बाचा तुझे और तेरे पीछे तेरे बंश को पालनी पड़ेगी सो यह है कि तुम में से एक एक पुरुष का खतना होवे ॥ ११ । तुम अपनी अपनी खलड़ी का खतना करा लेना जो बाचा मेरे और तुम्हारे बीच में बंधी है उस का यही चिन्ह होगा ॥ १२ । पीढ़ी पीढ़ी में केवल तेरे बंश ही के लोग नहीं जो घर में उत्पन्न होवें अथवा परदेशियों को रूपा देके मोल लिये जावें ऐसे सब पुरुष भी जब आठ दिन के हो जावें तब उन का खतना किया जावे ॥ १३ । फिर कहता हूं कि जो तेरे घर में उत्पन्न होवे अथवा तेरे रूपे से मोल लिया जावे उस का खतना अवश्य ही किया जावे इसी रीति मेरी बाचा जिस का चिन्ह तुम्हारी देह में होगा सो युगानयुग रहेगी ॥ १४ । जो पुरुष खतनारहित रहे अर्थात् जिस की खलड़ी का खतना न होवे वह प्राणी जो मेरे साथ बांधी हुई बाचा को तोड़ देगा सो वह अपने लोगों में से नष्ट किया जावे ॥

१५ । फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा तेरी जो स्त्री सारै है उस को तू अब सारै न कहना उस का नाम सारा रक्खा गया है ॥ १६ । और मैं उस को आशीष देऊंगा और तुझ को उस के द्वारा एक पुत्र देऊंगा बल्कि मैं उस को ऐसी आशीष दूंगा कि वह जाति जाति की मूलमाता हो जावेगी । और उस के बंश में समुदाय समुदाय के राजा उत्पन्न होवेंगे ॥ १७ । यह सुन इब्राहीम मुंह के बल गिरके हंसा और मन ही मन कहने लगा क्या मुझ सौ बरस के पुरुष के भी सन्तान होवेगा और क्या सारा जो नब्बे बरस की है जनेगी ॥ १८ । यह सोचके इब्राहीम ने परमेश्वर से कहा इश्माएल पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि बनी रहे तो यही अच्छा है ॥ १९ । परमेश्वर ने कहा निश्चय तेरी स्त्री सारा तेरा जन्माया एक पुत्र जनेगी और तू उस का नाम इसहाक रखना और मैं उस के साथ ऐसी बाचा बांधूंगा जो उस के पीछे उस के बंश के लिये युगानयुग की बाचा होवेगी ॥ २० । और इश्माएल के विषय में भी मैं ने तेरी सुनी है मैं उस को भी आशीष देता हूं और उसे फुलाऊं फलाऊंगा और अत्यन्त ही बढ़ा दूंगा उस से बारह प्रधान उत्पन्न होवेंगे और मैं उस से एक बड़ी जाति उपजाऊंगा ॥ २१ । हां बाचा तो मैं इसहाक ही के साथ बांधूंगा जिसे सारा अगले बरस के इसी नियत समय में तेरा जन्माया जनेगी ॥ २२ । इतना कहके परमेश्वर ने इब्राहीम से बातें करनी बन्द किईं और उस के पास से ऊपर चढ़ गया ॥ २३ । तब इब्राहीम ने अपने पुत्र इश्माएल को और उस के घर में जितने उत्पन्न हुए थे और जितने उस के रूपे से मोल लिये हुए थे निदान उस के घर में जितने पुरुष थे उन सभों को लेके उसी दिन परमेश्वर के कहे के अनुसार उन की खलड़ी का खतना किया ॥ २४ । जब इब्राहीम की खलड़ी का खतना हुआ तब वह निन्नानवे बरस का था ॥ २५ । और जब उस के पुत्र इश्माएल की खलड़ी का खतना हुआ तब

इश्माएल तेरह बरस का हुआ था ॥ २६ । इब्राहीम और उस के पुत्र इश्माएल दोनों का खतना एक ही दिन में हुआ ॥ २७ । और उस के साथ ही उस के घर में जितने पुरुष थे क्या घर में उत्पन्न हुए क्या परदेशियों के हाथ से मोल लिये हुए सब का भी खतना हुआ ॥

१८. एक दिन की बात है कि इब्राहीम ममे के बांजों के बीच कड़े घाम के समय तंबू के द्वार पर बैठा हुआ था कि यहोवा ने उसे दर्शन इस प्रकार से दिया कि ॥ २ । उस ने तो आंख उठाके दृष्टि किई तो क्या देखा कि तीन पुरुष मेरे सास्हने खड़े हैं सो यह देखके वह उन से भेंट करने को तंबू के द्वार से दौड़ा और भूमि पर गिर दण्डवत करके कहने लगा ॥ ३ । हे प्रभु यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हो तो कृपा करके मुझ अपने दास के पास से चला न जा ॥ ४ । इच्छा होवे तो थोड़ा सा जल लाया जावे और तुम लोग अपने पांव धोओ और इस वृक्ष के तले उठंग जाओ ॥ ५ । फिर मैं एक टुकड़ा रोटी ले आऊं और उस से तुम अपने अपने जीव को ठण्डा करो तब उस के पीछे आगे चलो क्योंकि तुम मुझ अपने दास के द्वार पर इस लिये आ गये हो कि तुम्हारा सत्कार किया जावे उन्हों ने कहा जैसा तू कहता है तैसा ही कर ॥ ६ । सो इब्राहीम ने तंबू में सारा के पास फुर्ती से जाके कहा तीन सआ मैदा फुर्ती से गूंध और फुलके बना ॥ ७ । फिर इब्राहीम गाय बैल के झुण्ड में दौड़ा और एक कोमल और अच्छा बछड़ा लेके अपने सेवक को दिया और उस ने फुर्ती से उस को पकाया ॥ ८ । तब उस ने मक्खन और दूध और वह बछड़ा जो उस ने पकवाया था लेके उन के आगे धर दिया और आप वृक्ष के तले उन के पास खड़ा रहा और वे खाने लगे ॥ ९ । तब उन्हों ने उस से पूछा तेरी स्त्री सारा कहां है उस ने कहा वह तो तंबू में है ॥ १० । उन में से एक ने कहा मैं बसन्त ऋतु में निश्चय तेरे पास फिर आऊंगा तब तेरी स्त्री सारा पुत्र जनेगी । उस समय तो सारा तंबू के द्वार पर जो इब्राहीम के पीछे थी सुन रही थी ॥ ११ । जानना चाहिये कि इब्राहीम और सारा दोनों बहुत पुरनिये थे और सारा को मासिक धर्म्म न होता था ॥ १२ । सो सारा अपने मन में हंसके कहने लगी मैं जो बूढ़ी हूं और मेरा पति भी बूढ़ा है तो क्या मुझे यह सुख होगा ॥ १३ । तब यहोवा ने इब्राहीम से कहा सारा यह कहके क्यों हंसी कि क्या मैं बुढ़िया होके सचमुच जनूंगी ॥ १४ । क्या मुझ यहोवा के लिये कोई काम कठिन है नियत समय में अर्थात् बसन्त ऋतु में मैं तेरे पास फिर आऊंगा और सारा पुत्र जनेगी ॥ १५ । तब सारा डर के मारे यह कहके मुकर गई कि मैं नहीं हंसी उस ने कहा नहीं तू तो हंसी ॥

(सदोम आदि नगरों के विध्वंस का बर्णन.)

१६ । फिर वे पुरुष वहां से चलके सदोम की ओर ताकने लगे और इब्राहीम उन्हें बिदा करने के लिये उन के संग संग चला ॥ १७ । तब यहोवा ने कहा यह जो मैं करता हूं सो क्या इब्राहीम से छिपा रक्खूं ॥ १८ । इब्राहीम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति उपजेगी और पृथिवी की सारी जातियां उस के द्वारा आशीष पावेंगी ॥ १९ । क्योंकि मैं ने इसी मनसा से उस पर मन लगाया है कि वह अपने पुत्रों और परिवार को जो उस के पीछे रह जावेंगे ऐसी आज्ञा देवे कि वे मेरे बताये हुए मार्ग को धरे हुए धर्म्म और न्याय करते रहेंगे इसी भांति जो कुछ मुझ यहोवा ने इब्राहीम के विषय में कहा है उसे मैं उस के लिये पूरा भी करूंगा ॥ २० । फिर यहोवा ने कहा सदोम और अमोरा के पाप की चिल्लाहट जो बड़ी और वह पाप जो बहुत भारी हो गया है ॥ २१ । इस लिये मैं उतरके देखूंगा कि उन के पाप की जैसी चिल्लाहट मेरे कान तक पहुंची है उन्हों ने ठीक वैसा ही काम किया कि नहीं और न किया हो तो इसे मैं जानूंगा ॥ २२ । सो वे पुरुष तो वहां से फिरके सदोम की ओर जाने लगे पर इब्राहीम यहोवा के आगे खड़ा रह गया ॥ २३ । तब वह उस के समीप जाके कहने लगा क्या तू सचमुच दुष्ट के संग धर्म्मी को भी मिटावेगा ॥

२४ । क्या जानिये उस नगर में पचास धर्म्मी होवें तो क्या तू सचमुच उस स्थान को मिटावेगा और उन पचास धर्म्मियों के कारण जो उस में होवें न छोड़ेगा ॥ २५ । इस प्रकार का काम करना तुझ से दूर रहे कि दुष्ट के संग धर्म्मी को भी मार डाले और धर्म्मी और दुष्ट दोनों की एकी दशा होवे यह तुझ से दूर रहे क्या सारी पृथिवी का न्यायी न्याय न करे ॥ २६ । यहोवा ने कहा यदि मुझे सदोम में पचास धर्म्मी मिलें तो उन के कारण उस सारे स्थान को छोड़ूंगा ॥ २७ । फिर इब्राहीम ने कहा हे प्रभु कृपा करके सुन मैं तो मिट्टी और राख हूं तौभी मैं ने इतनी ढिठाई किई कि तुझ से बात करूं ॥ २८ । क्या जानिये उन पचास धर्म्मियों में पांच घट जावें तो क्या तू पांच ही के घटने के कारण उस सारे नगर का नाश करेगा उस ने कहा यदि मुझे उस में पैंतालीस भी मिलें तौभी उस का नाश न करूंगा ॥ २९ । फिर उस ने उस से यह भी कहा क्या जानिये वहां चालीस मिलें उस ने कहा तो मैं चालीस के कारण भी ऐसा न करूंगा ॥ ३० । फिर उस ने कहा हे प्रभु कोपित न हो तो मैं कुछ और कहूंगा क्या जानिये वहां तीस मिलें उस ने कहा यदि मुझे वहां तीस भी मिलें तौभी ऐसा न करूंगा ॥ ३१ । फिर उस ने कहा हे प्रभु कृपा करके सुन मैं ने इतनी ढिठाई तो किई है कि तुझ से बातें करूं क्या जानिये उस में बीस मिलें उस ने कहा मैं बीस के कारण भी उस का नाश न करूंगा ॥ ३२ । फिर उस ने कहा हे प्रभु कोपित न हो मैं अब की एक बार और बोलूंगा क्या जानिये उस में दस मिलें उस ने कहा तो मैं दस के कारण भी उस का नाश न करूंगा ॥ ३३ । जब यहोवा इब्राहीम से बातें कर चुका तब चला गया और इब्राहीम भी अपने स्थान को लौट गया ॥

१९. सांझ को वे दो दूत सदोम के पास आये उस समय लूत सदोम के फाटक के पास बैठा था सो उन को देखके वह उन से भेंट करने को उठा और मुंह के बल भूमि पर गिर दण्डवत करके कहा ॥ २ । हे मेरे प्रभुओ कृपा करके मुझ अपने दास के घर में पधारो और वहां रात बिताना और अपने पांव धोओ फिर भोर को उठके अपना मार्ग लेना उन्हों ने कहा सो नहीं हम चौक में रात बितावेंगे ॥ ३ । यह सुनके उस ने उन को बहुत बिनती करके दबाया सो वे उस के घर की ओर चलके भीतर गये और उस ने उन को जेवनार किई और बिन खमीर की रोटियां बनवाके उन को खिलाईं ॥ ४ । उन के सो जाने से पहिले उस सदोम नगर के पुरुषों ने जवानों से लेके बूढ़ों तक बल्कि चारों ओर के सब लोगों ने आके उस घर को घेर लिया ॥ ५ । और लूत को पुकारके कहने लगे जो पुरुष आज रात को तेरे पास आये सो कहां हैं उन को हमारे पास बाहर ले आ कि हम उन से लौंडेबाजी करें ॥ ६ । यह सुनके लूत उन के पास द्वार के बाहर गया और किवाड़ को अपने पीछे बन्द करके ॥ ७ । कहा हे मेरे भाइयो कृपा करके ऐसी बुराई न करो ॥ ८ । सुनो मेरे दो बेटियां हैं जिन्हों ने अब लों पुरुष का मुंह नहीं देखा इच्छा हो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर ले आऊं और तुम को जैसा अच्छा लगे तैसा व्यवहार उन से करो तो करो पर इन पुरुषों से कुछ न करो क्योंकि ये मेरी छत के तले इस लिये आये हैं कि उन का सत्कार किया जावे ॥ ९ । उन्हों ने कहा हट जा फिर वे कहने लगे तू एक परदेशी आया तो यहां रहने के लिये पर अब न्यायी भी बन बैठा है सो अब हम उन से भी अधिक तेरे साथ बुराई करेंगे इतना कहके वे उस पुरुष लूत को बहुत दबाने लगे और किवाड़ तोड़ने के लिये निकट आये ॥ १० । यह देख उन पाहुनों ने हाथ बढ़ाके लूत को अपने पास घर में खींच लिया और किवाड़ को बन्द कर दिया ॥ ११ । और उन्हों ने छोटों से ले बड़ों तक उन सब पुरुषों को जो घर के द्वार पर थे अंधा कर दिया सो वे द्वार को टटोलते टटोलते थक गये ॥ १२ । फिर उन पाहुनों ने लूत से पूछा यहां तेरे और कौन कौन हैं दामाद बेटे बेटियां वा नगर में तेरा जो कोई होवे उन को लेके इस स्थान से

निकल जा ॥ १३ । क्योंकि हम यह स्थान नष्ट करने पर हैं इस लिये कि इस के रहनेहारों के पाप की चिल्लाहट यहोवा के सन्मुख बढ़ गई है और यहोवा ने हमें इस का नाश करने के लिये भेज भी दिया है ॥ १४ । इतना सुन लूत ने निकलके अपने दामादों को जिन के साथ उस की बेटियों की सगाई हो गई थी समझाके कहा उठो इस स्थान से निकल चलो क्योंकि यहोवा इस नगर को नाश किया चाहता है । उस की यह बात उस के दामादों के लेखे में हंसी करनेहारे की सी जान पड़ी ॥ १५ । जब पह फटने लगी तब दूतों ने यह कहके लूत से फुर्ती कराई कि चल अपनी स्त्री और दोनों बेटियों को जो यहां हैं ले जा नहीं तो तू भी इस नगर के अधर्म्म के दण्ड में भागी होके भस्म हो जावेगा ॥ १६ । यह सुनने पर भी वह बिलम्ब करता रहा सो यहोवा जो उस पर कोमलता करता था इस से उन पुरुषों ने उस का हाथ और उस की स्त्री और दोनों बेटियों के हाथ पकड़ लिये और उस को निकालके नगर के बाहर खड़ा कर दिया ॥ १७ । और जब उन्हों ने उन को निकाला तब उन में से एक ने कहा अपना प्राण लेके भाग जा पीछे फिरके मत ताकना और दून भर में मत ठहरना पहाड़ पर भाग जाना नहीं तो तू भस्म हो जावेगा ॥ १८ । लूत ने उस से कहा हे प्रभु कृपा करके ऐसा न कर ॥ १९ । सुन मुझ तेरे दास पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हुई है और तू ने जो मेरे प्राण को बचाया है सो तो मुझ पर बड़ी कृपा किई है पर मैं पहाड़ पर भाग नहीं सकता कहीं ऐसा न हो कि यह विपत्ति मुझ पर वहां भी आ पड़े और मैं मर जाऊं ॥ २० । देख वह नगर ऐसा निकट है कि मैं वहां तो भाग सकता हूं और वह छोटा भी है सो उसे बचाना और मुझे वहीं भाग जाने दे क्योंकि वह छोटा तो है ही और इस प्रकार मेरे प्राण की रक्षा होवे ॥ २१ । उस ने उस से कहा सुन मैं ने इस विषय में भी तेरी बिनती अंगीकार किई है कि जिस नगर की चर्चा तू ने किई है उस को मैं न उलटूंगा ॥ २२ । फुर्ती करके वहां भाग जा क्योंकि जब लों तू वहां न पहुंचे तब लों मैं कुछ न कर सकूंगा । लूत की इसी बिनती के कारण उस नगर का नाम सोआर पड़ा ॥ २३ । लूत के सोआर के निकट पहुंचते ही सूर्य्य पृथिवी पर उदय हुआ ॥ २४ । तब यहोवा ने सदोम और अमोरा पर आप ही स्वर्ग से गंधक और आग बरसाके ॥ २५ । उन नगरों और उस संपूर्ण दून को और नगरों के सब निवासियों को और भूमि की सारी उपज को उलट दिया ॥ २६ । इतने में लूत की स्त्री ने उस के पीछे से दृष्टि फेरके ताका तब वह लोन का खंभा हो गई ॥ २७ । भोर को इब्राहीम उठके उस स्थान को गया जहां वह यहोवा के सम्मुख खड़ा रहा था ॥ २८ । और सदोम और अमोरा और उस दून के सारे देश की ओर ताकके क्या देखा कि उस देश में से भट्ठी का सा धूआं उठ रहा है ॥ २९ । हां जब परमेश्वर ने उस दून के नगरों का जिन में लूत रहता था उलटके नाश करना चाहा तब उस ने इब्राहीम की सुधि करके लूत को तो उलटने से बचा लिया ॥

३० । पीछे लूत जो सोआर में रहते डरता था सो अपनी दोनों बेटियों समेत उस स्थान को छोड़के पहाड़ पर चढ़ गया और वहां की एक गुफा में वह और उस की दोनों बेटियां रहने लगीं ॥ ३१ । एक दिन बड़की बेटी ने छुटकी से कहा हमारा पिता तो बूढ़ा है और पृथिवी भर में कोई ऐसा पुरुष नहीं जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आवे ॥ ३२ । सो आ हम अपने पिता को दाखमधु पिलाके उस के साथ सोवें और इसी रीति अपने पिता के द्वारा बंश उत्पन्न करें ॥ ३३ । यह सम्मति करके उन्हों ने उसी दिन रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया तब बड़की बेटी जाके अपने पिता के पास सोई और उस को न तो उस के सोने के समय न उस के उठने के समय कुछ भी चेत था ॥ ३४ । दूसरे दिन बड़की ने छुटकी से कहा सुन कल रात को मैं अपने पिता के साथ सोई सो आज भी रात को हम उस को दाखमधु पिलावें तब तू जाके उस के साथ सोना इसी भांति हम अपने पिता को

द्वारा बंश उत्पन्न करें ॥ ३५ । यह सम्मति करके उन्हों ने उस दिन भी रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया तब कुटकी बेटी जाके उस के पास सोई और उस को उस के भी सोने और उठने के समय चेत न था ॥ ३६ । इसी प्रकार से लूत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भवती हुईं ॥ ३७ । और बड़की एक पुत्र जनी और उस का नाम मोआब रक्खा सो मोआब नाम जाति का जो आज लों है मूलपुरुष हुआ ॥ ३८ । और कुटकी भी एक पुत्र जनी और उस का नाम बेनम्मी रक्खा सो अम्मोनबंशियों का जो आज लों हैं मूलपुरुष हुआ ॥

(इसहाक की उत्पत्ति का वर्णन.)

२० फिर इब्राहीम वहां से कूंच कर दक्षिण देश में आके कादेश और शूर के बीच में ठहरा और गरार नगर में परदेशी होके रहने लगा ॥ २ । वहां इब्राहीम अपनी स्त्री सारा के बिषय में कहने लगा कि वह मेरी बहिन है सो गरार के राजा अबीमेलेक ने दूत भेजके सारा को बुलवा लिया ॥ ३ । रात को परमेश्वर ने स्वप्न में अबीमेलेक के पास आके कहा सुन तो जिस स्त्री को तू ने रख लिया है उस के कारण तू मुर्दा सा है क्योंकि वह सुहागिन है ॥ ४ । अबीमेलेक तो उस के पास न गया था सो उस ने कहा हे प्रभु क्या तू निर्दोष जाति का भी घात करेगा ॥ ५ । क्या उसी ने मुझ से नहीं कहा कि वह मेरी बहिन है और उस स्त्री ने भी आप कहा कि वह मेरा भाई है मैं ने तो अपने मन की खराई और अपने व्यवहार की सचाई से यह काम किया ॥ ६ । परमेश्वर ने उस से स्वप्न में कहा हां मैं भी जानता हूं कि अपने मन की खराई से तू ने यह काम किया है और मैं ने तुझे रोक भी रक्खा कि तू मेरे बिरुद्ध पाप न करे इसी कारण मैं ने तुझ को उसे छूने नहीं दिया ॥ ७ । सो अब उस पुरुष की स्त्री को उसे फेर दे क्योंकि वह नबी है और तेरे लिये प्रार्थना तो करेगा कि तू जीता रहे पर यदि तू उस को न फेर दे तो जान रख कि तू और तेरे जितने लोग हैं सब निश्चय मर जावेंगे ॥ ८ । बिहान को अबीमेलेक ने तड़के उठकर अपने सब कर्म्मचारियों को बुलवाके ये सब बातें सुनाईं और वे निपट डर गये ॥ ९ । तब अबीमेलेक ने इब्राहीम को बुलवाके कहा तू ने हम से यह क्या किया है और मैं ने तेरा क्या बिगाड़ा था कि तू ने मेरे और मेरे राज्य के ऊपर ऐसा बड़ा पाप डाल दिया है तू ने मुझ से जो काम किया है सो करने के योग्य न था ॥ १० । फिर अबीमेलेक ने इब्राहीम से पूछा तू ने ऐसा क्या देखा कि यह काम किया है ॥ ११ । इब्राहीम ने कहा मैं ने तो यह सोचा था कि इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भय न होगा सो ये लोग मेरी स्त्री के कारण मेरा घात करेंगे ॥ १२ । और सचमुच वह मेरी बहिन है ही वह मेरे पिता की बेटी तो है पर मेरी माता की बेटी नहीं सो वह मेरी स्त्री हो गई ॥ १३ । और जब परमेश्वर ने मुझे अपने पिता का घर छोड़के घूमने की आज्ञा दिई तब मैं ने अपनी स्त्री से कहा इतनी कृपा तुझे मुझ पर करनी होगी कि हम दोनों प्राणी जहां जहां जावें तहां तहां तू मेरे बिषय में कहना कि यह मेरा भाई है ॥ १४ । यह सुन अबीमेलेक ने भेड़ बकरी गाय बैल और दास दासियां लेके इब्राहीम को दिईं और उस की स्त्री सारा को भी उसे फेरके ॥ १५ । कहा देख मेरा देश तेरे साम्हने पड़ा है जहां तुझे भावे तहां बस ॥ १६ । और सारा से उस ने कहा सुन मैं ने तेरे भाई को रूपे के हजार टुकड़े दिये हैं फिर सुन तेरे सारे संगियों के साम्हने और और सभों के साम्हने इब्राहीम ही तेरी आंखों का पर्दा बनेगा यह सुनके सारा निरुत्तर रह गई ॥ १७ । इतने पर इब्राहीम ने यहोवा से प्रार्थना किई और यहोवा ने जो अबीमेलेक के घर की सब स्त्रियों की कोखों को इब्राहीम की स्त्री सारा के कारण बिल्कुल बन्द किया था ॥ १८ । सो इब्राहीम की सुनके उसी परमेश्वर ने अबीमेलेक और उस की स्त्री और दासियों की उस बला को दूर किया और वे जनने लगीं ॥

२१. इस के पीछे यहोवा ने जैसा कहा था तैसा ही सारा की सुधि लेके उस के साथ अपने वचन के अनुसार किया ॥ २ ।

अर्थात् सारा इब्राहीम से गर्भवती होके उस के बुढ़ापे में उसी नियत समय पर जो परमेश्वर ने उस से बान्धा था एक पुत्र जनी ॥ ३ । और इब्राहीम ने अपने जन्माये उस पुत्र का नाम जिसे सारा जनी थी इसहाक रक्खा ॥ ४ । और जब उस का पुत्र इसहाक आठ दिन का हुआ तब उस ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उस का खतना किया ॥ ५ । और जब इब्राहीम का पुत्र इसहाक उत्पन्न हुआ तब वह एक सौ बरस का था ॥ ६ । उन दिनों सारा ने कहा परमेश्वर ने मुझे हंसमुख कर दिया है जो कोई सुने सो मेरे कारण हंस देगा ॥ ७ । फिर उस ने कहा कोई कभी इब्राहीम से कह सकता तो न था कि सारा लड़कों को दूध पिलावेगी पर देखो मैं उस के बुढ़ापे में पुत्र जनी ॥ ८ । इतने में वह लड़का बढ़ा और उस का दूध छुड़ाया गया और इसहाक के दूध छुड़ाने के दिन इब्राहीम ने बड़ी जेवनार किई ॥ ९ । तब सारा को मिसी हागार का पुत्र जिसे वह इब्राहीम का जन्माया जनी थी हंसी करता हुआ देख पड़ा ॥ १० । यह देखके उस ने इब्राहीम से कहा इस दासी को पुत्र सहित दुर्दुराके निकाल दे क्योंकि इस दासी का पुत्र मेरे पुत्र इसहाक के साथ भागी न होवेगा ॥ ११ । सारा की यह बात इब्राहीम को अपने पुत्र इश्माएल के कारण बहुत बुरी लगी ॥ १२ । यह जानके परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा उस लड़के और अपनी दासी के कारण सारा की बात तुझे बुरी न लगे जो बात सारा तुझ से कहे उसे मान क्योंकि जो तेरा बंश कहलावेगा सो इसहाक ही से चलेगा ॥ १३ । हां तेरी दासी के पुत्र से भी मैं एक जाति उपजा तो दूंगा इस लिये कि वह तेरा बंश है ॥ १४ । यह सुनके इब्राहीम ने बिहान को तड़के उठकर रोटी और पानी से भरी हुई चमड़े की एक थैली ले हागार को दिई और उस के कन्धे पर रक्खी और उस के लड़के को भी उसे देके उस को बिदा किया सो वह चली गई और बेर्शेबा के बन में घूमने फिरने लगी ॥ १५ । जब उस के फिरते फिरते थैली का जल चुक गया तब उस ने लड़के को एक झाड़ी के नीचे छोड़ दिया ॥ १६ । और आप उस से बाण भर के टप्पे पर दूर जाके उस के साम्हने यह सोचकर बैठ गई कि मुझ को लड़के की मृत्यु देखनी न पड़े तब वह उस के साम्हने बैठी हुई चिल्ला चिल्लाके रोने लगी ॥ १७ । जब परमेश्वर ने उस लड़के की सुनी तब उस के दूत ने स्वर्ग से हागार को पुकारके कहा हे हागार तुझे क्या हुआ मत डर क्योंकि जहां तेरा लड़का है तहां से उस की बात परमेश्वर को सुन पड़ी है ॥ १८ । उठ अपने लड़के को उठाके अपने हाथ से थांभ ले क्योंकि मैं उस से एक बड़ी जाति उपजाऊंगा ॥ १९ । इस पर परमेश्वर ने उस की आंखें खोल दिईं और उस को एक कूआं देख पड़ा सो उस ने जाकर थैली को जल से भरके लड़के को पिला दिया ॥ २० । पीछे परमेश्वर उस लड़के के साथ साथ रहा और जब वह बड़ा हुआ तब बन में रहते रहते धनुर्धारी हो गया ॥ २१ । वह तो पारान नाम बन में रहा करता था और उस की माता ने उस के लिये मिस देश से एक स्त्री मंगवाई ॥

२२ । उन दिनों में अबीमेलेक अपने सेनापति पीकोल को संग लेके इब्राहीम से कहने लगा मुझे निश्चय तो हुआ कि जो कुछ तू करता है उस में परमेश्वर तेरे संग संग रहता है ॥ २३ । सो अब मुझ से यहां परमेश्वर की इस बिषय में किरिया खा कि मैं न तो तुझ से छल करूंगा और न कभी तेरे बंश से जैसी प्रीति से तू ने मेरे साथ बर्ताव किया है तैसी ही प्रीति मैं तुझ से और इस देश से जहां मैं परदेशी हूं करूंगा ॥ २४ । इब्राहीम ने कहा अच्छा मैं ऐसी ही किरिया खाऊंगा ॥ २५ । फिर इब्राहीम ने अबीमेलेक को एक कूए के बिषय में जो उस के दासों ने बरियाई से ले लिया था उलहना दिया ॥ २६ । यह सुनके अबीमेलेक ने कहा मैं नहीं जानता कि किस ने यह काम किया और तू ने भी मुझ को न जताया था और न मैं ने आज तक यह सुना था ॥ २७ । तब इब्राहीम ने भेड़ बकरी और गाय बैल लेके अबीमेलेक को दिये और उन दोनों ने आपस में बाचा बांधी ॥ २८ । और इब्राहीम

ने भेड़ की सात बच्ची अलग कर रक्खीं ॥ २९ । यह देखके अबीमेलेक ने इब्राहीम से पूछा इन सात बच्चियों का जो तू ने अलग कर रक्खी हैं क्या प्रयोजन है ॥ ३० । उस ने कहा तू इन सात बच्चियों को इस बात की साक्षी जानके मेरे हाथ से ले कि मैं ने यह कूआ खोदा है ॥ ३१ । उन दोनों ने जो उस स्थान में आपस में क्रिया खाई इसी कारण उस का नाम बेर्शेबा पड़ा ॥ ३२ । जब उन्हों ने बेर्शेबा में परस्पर बाचा बांधी तब अबीमेलेक और उस का सेनापति पीकोल उठके पलिश्तियों के देश में लौट गये ॥ ३३ । और इब्राहीम ने बेर्शेबा में झाऊ का एक वृक्ष लगाया और वहां यहोवा जो सनातन ईश्वर है तिस से प्रार्थना किई ॥ ३४ । पीछे इब्राहीम पलिश्तियों के देश में परदेशी होके बहुत दिन रहा ॥

(इब्राहीम के परीक्षा में पड़ने का वर्णन।)

२२ इन बातों के पीछे परमेश्वर ने इब्राहीम से यह कहके उस की परीक्षा किई कि हे इब्राहीम उस ने कहा क्या आज्ञा ॥ २ । फिर उस ने कहा अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते इसहाक को जिस से तू प्रेम रखता है संग लेके मोरिय्याह देश में चला जा और वहां उस को एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊंगा होमबलि करके चढ़ा ॥ ३ । यह आज्ञा पाकर इब्राहीम ने बिहान को तड़के उठ अपने गदहे पर काठी कसके अपने दो सेवकों और अपने पुत्र इसहाक को संग लिया और होमबलि के लिये लकड़ी चीर लिई तब कूंच करके उस स्थान की ओर चला जिस की चर्चा परमेश्वर ने उस से किई थी ॥ ४ । तीसरे दिन जब इब्राहीम ने आंखें उठाके उस स्थान को दूर से देखा ॥ ५ । तब अपने सेवकों से कहा गदहे के पास यहीं ठहरे रहो मैं और यह लड़का हम दोनों वहां लों जाकर परमेश्वर को दण्डवत करके फिर तुम्हारे पास लौट आवेंगे ॥ ६ । यह कहके इब्राहीम ने होमबलि की लकड़ी ले अपने पुत्र इसहाक पर लादी और आग और कुरी को अपने हाथ में लिया इस रीति वे दोनों संग संग चले ॥ ७ । चलते चलते इसहाक ने अपने पिता इब्राहीम से कहा हे मेरे पिता उस ने कहा हे मेरे पुत्र क्या बात है फिर उस ने कहा देख आग और लकड़ी तो हैं पर होमबलि के लिये भेड़ कहां है ॥ ८ । इब्राहीम ने कहा हे मेरे पुत्र परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा सो वे दोनों संग संग चले ॥ ९ । निदान वे उस स्थान को जिसे परमेश्वर ने उस को बताया था पहुंचे तब इब्राहीम ने वहां बेदी बनाकर लकड़ी को उस पर चुन चुनके रक्खा और अपने पुत्र इसहाक को बांधके बेदी पर की लकड़ी के ऊपर रख दिया ॥ १० । तब इब्राहीम ने कुरी लेने को हाथ बढ़ाया कि अपने पुत्र को बलि करे ॥ ११ । इस पर यहोवा के दूत ने स्वर्ग से उस को पुकारके कहा हे इब्राहीम हे इब्राहीम उस ने कहा क्या आज्ञा ॥ १२ । दूत ने कहा उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा और न उस से कुछ कर क्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र बल्कि अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा इस से मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है ॥ १३ । यह सुनके इब्राहीम ने आंखें उठाईं और क्या देखा कि मेरे पीछे एक मेंढ़ा अपने सींगों से एक झाड़ी में बझा हुआ है सो इब्राहीम ने जाके उस मेंढ़े को लिया और अपने पुत्र की सन्ती होमबलि करके चढ़ाया ॥ १४ । और इब्राहीम ने उस स्थान का नाम यहोवा यिरे रक्खा इस के अनुसार आज लों भी कहा जाता है कि यहोवा के पहाड़ पर उपाय किया जावेगा ॥ १५ । फिर यहोवा के दूत ने दूसरी बार स्वर्ग से इब्राहीम को पुकारके कहा ॥ १६ । यहोवा की यह बाणी है कि मैं अपनी ही यह क्रिया खाता हूं कि तू ने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र बल्कि अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा ॥ १७ । इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूंगा और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण और समुद्र के तीर की बालू के कनकों के समान अनगिनित करूंगा और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का स्वामी होगा ॥ १८ । और पृथिवी की सारी जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी यह सब इस लिये होगा

कि तू ने मेरी बात मानी है ॥ १९ । इस पर इब्राहीम अपने सेवकों के पास लौट गया और वे सब बेर्शेबा को संग संग गये और इब्राहीम बेर्शेबा में रहता रहा ॥

२० । इन बातों के पीछे इब्राहीम को यह सन्देश मिला कि मिल्का से तेरे भाई नाहोर के सन्तान जन्मे हैं ॥ २१ । मिल्का के पुत्र तो ये हुए अर्थात् उस का जेठा ऊस और ऊस का भाई बूज और कमूएल जो अराम का पिता हुआ ॥ २२ । फिर केसेद हजो पिलदाश यिदलाप और बतूएल ॥ २३ । इन आठों को मिल्का इब्राहीम के भाई नाहोर के जन्माये जनी । और बतूएल ने रिबका को जन्माया ॥ २४ । फिर नाहोर के रूमा नाम एक सुरैतिन भी थी जो तेबह गहम तहश और माका को जनी ॥

(सारा की मृत्यु और अन्तक्रिया का वर्णन।)

२३ सारा तो एक सौ सत्ताईस बरस की अवस्था को पहुंची और जब सारा की इतनी संपूर्ण अवस्था हुई ॥ २ । तब वह किर्यतर्बा में मर गई यह तो कनान देश में है और हेब्रोन भी कहावता है सो यह सुनके इब्राहीम सारा के लिये रोने पीटने को वहां गया ॥ ३ । तब इब्राहीम अपने मुर्दे के पास से उठके हित्तबंशियों से कहने लगा ॥ ४ । मैं तुम्हारे बीच उपरी और परदेशी मनुष्य हूं सो मुझे अपने बीच में कबरिस्तान के लिये ऐसी भूमि देओ जो मेरी निज हो जावे जिस्तें मैं अपने मुर्दे को गाड़के अपनी आंख की ओट करूं ॥ ५ । हित्तबंशियों ने इब्राहीम से कहा ॥ ६ । हे हमारे प्रभु हमारी सुन तू तो हमारे बीच में बड़ा प्रधान है सो हमारी कबरों में से जिस को तू चाहे उस में अपने मुर्दे को गाड़ हम में से कोई तुझे अपनी कबर कैं लेने से न रोकेगा कि तू अपने मुर्दे को उस में गाड़ने न पावे ॥ ७ । इतना सुन इब्राहीम उठके खड़ा हुआ और हित्तबंशियों के सन्मुख जो उस देश के निवासी थे दण्डवत करके ॥ ८ । कहा यदि तुम्हारी यह इच्छा होवे कि मैं अपने मुर्दे को गाड़के अपनी आंख की ओट करूं तो मेरी सुनके सोहर के पुत्र एप्रोन से मेरे लिये विनती करो ॥ ९ । कि वह अपनी मकपेलावाली गुफा जो उस की भूमि के सिवाने पर है मुझे दे देवे और उस का पूरा दाम लेवे कि वह तुम्हारे बीच कबरिस्तान के लिये मेरी निज भूमि हो जावे ॥ १० । एप्रोन हित्ती तो और और हित्तबंशियों के बीच वहां बैठा हुआ था सो जितने हित्तबंशी उस के नगर के फाटक होके भीतर जाते थे उन सभों के सुनते उस ने इब्राहीम को उत्तर दिया कि ॥ ११ । हे मेरे प्रभु सो नहीं मेरी सुन वह भूमि मैं तुझे देता हूं और उस में जो गुफा है सो भी मैं तुझे देता हूं अपने जातिभाइयों के सन्मुख मैं उसे तुझ को दिये देता हूं सो अपने मुर्दे को कबर में रख ॥ १२ । यह सुनकर इब्राहीम ने उस देश के निवासियों के साम्हने दण्डवत किई ॥ १३ । और उन के सुनते एप्रोन से कहा यदि तू ऐसी कृपा करता हो तो मेरी सुन उस भूमि का जो दाम हो सो मैं देने चाहता हूं उसे मुझ से ले ले तब मैं अपने मुर्दे को वहां गाड़ूंगा ॥ १४ । एप्रोन ने इब्राहीम को यह उत्तर दिया कि ॥ १५ । हे मेरे प्रभु मेरी सुन उस भूमि का दाम तो चार सौ शेकेल रूपा है पर मेरे और तेरे बीच में यह क्या बस्तु है सो अपने मुर्दे को कबर में रख ॥ १६ । एप्रोन की यह बात मानके इब्राहीम ने उस को उतना रूपा तौल तौलके दिया जितना उस ने हित्तबंशियों के सुनते कहा था अर्थात् चार सौ ऐसे शेकेल जो व्योपारियों में चलते थे ॥ १७ । इस रीति एप्रोन की भूमि जो ममे के सन्मुख की मकपेला में थी सो गुफा समेत और उन सब बृक्षों समेत भी जो उस में और उस की चारों ओर के सिवाने में थे ॥ १८ । जितने हित्तबंशी उस के नगर के फाटक होके भीतर जाते थे उन सभों के साम्हने इब्राहीम के अधिकार में पक्की रीति से आ गई ॥ १९ । इस के पीछे इब्राहीम ने अपनी स्त्री सारा को उस मकपेलावाली भूमि की गुफा में जो ममे के अर्थात् हेब्रोन के साम्हने कनान देश में है मिट्टी दिई ॥ २० । और वह भूमि गुफा समेत हित्तबंशियों की ओर से कबरिस्तान के लिये इब्राहीम के अधिकार में पक्की रीति से आ गई ॥

(इसहाक के विवाह का वर्णन.)

२४. इतने में इब्राहीम बूढ़ा बल्कि बहुत
पुरनिया हो गया और यहोवा
ने सब बातों में उस को आशीष दिई थी ॥ २। सो
एक दिन इब्राहीम ने अपने उस दास से जो उस
के सब घरवालों में से बूढ़ा और उस की सारी
संपत्ति पर अधिकारी था कहा अपना हाथ मेरी
जांघ के नीचे रखके ॥ ३। मुझ से स्वर्ग और पृथिवी
दोनों के परमेश्वर यहोवा की इस विषय में किरिया
खा कि मैं तेरे पुत्र के लिये कनानियों की लड़कियों
में से जिन के बीच तू रहनेहारा है किसी को न ले
आऊंगा ॥ ४। मैं तेरे देश में तेरे ही कुटुम्बियों के
पास जाके तेरे पुत्र इसहाक के लिये एक स्त्री ले
आऊंगा ॥ ५। यह सुनके उस दास ने उस से कहा
क्या जानिये वह स्त्री इस देश में मेरे पीछे आने न
चाहे तो क्या मुझे तेरे पुत्र को उस देश में जहां से
तू आया है ले जाना पड़ेगा ॥ ६। इब्राहीम ने उस
से कहा चौकस रह मेरे पुत्र को वहां न ले जाना ॥
७। स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा जिस ने मुझे मेरे
पिता के घर से और मेरी जन्मभूमि से ले आकर
मुझ से किरिया खाके कहा कि मैं यह देश तेरे बंश
को देऊंगा वही अपना दूत तेरे आगे आगे भेजेगा
सो तू मेरे पुत्र के लिये वहां से एक स्त्री ले आ
सकेगा ॥ ८। हां यदि वह स्त्री तेरे पीछे आने न
चाहे तब तो तू मेरी इस किरिया से छूट जावेगा
पर जो हो सो हो मेरे पुत्र को वहां न ले जाना ॥
९। यह सुनके उस दास ने अपने स्वामी इब्राहीम
की जांघ के नीचे अपना हाथ रखके उस से इसी
विषय की किरिया खाई ॥ १०। तब वह दास अपने
स्वामी के ऊंटों में से दस ऊंट छांटकर उस के सब
उत्तम उत्तम पदार्थों में से कुछ कुछ लेके चला और
अरम्नहरैम में नाहोर के नगर के पास पहुंचके ॥
११। ऊंटों को नगर के बाहर एक कूएं के पास बैठाया
वह समय तो सांझ का था जब स्त्रियां जल भरने
के लिये निकलती हैं ॥ १२। सो वह कहने लगा हे
मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा कृपा करके
आज मेरे कार्य्य को सिद्ध कर और मेरे स्वामी इब्रा-
हीम से करुणा का व्यवहार कर ॥ १३। देख मैं
जल के इस सोते के पास खड़ा हूं और नगरबासियों
की बेटियां जल भरने के लिये निकली आती हैं ॥
१४। सो ऐसा होवे कि जिस कन्या से मैं कहूं कि
अपना घड़ा मेरी ओर झुका कि मैं पीऊं और वह
कहे कि ले पी ले पीछे मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी
सो वही होवे जिसे तू ने अपने दास इसहाक के
लिये ठहराया होवे इसी रीति मैं जान लूंगा कि तू
ने मेरे स्वामी से करुणा का व्यवहार किया है ॥
१५। वह कहता ही था कि रिबका जो इब्राहीम
के भाई नाहोर के जन्माये मिलका के पुत्र बतूएल
की बेटी थी सो कन्धे पर घड़ा लिये हुए निकली
आई ॥ १६। और सोते के पास उतर गई और
अपना घड़ा भरके फिर ऊपर आई। वह तो अति
सुन्दर और कुमारी भी थी उस ने किसी पुरुष का
मुंह न देखा था ॥ १७। तब वह दास उस से भेंट
करने को दौड़ा और कहा अपने घड़े में से तनिक
पानी तो मुझे पिला दे ॥ १८। उस ने कहा हे मेरे
प्रभु ले पी ले ऐसा कहके उस ने फुर्ती से घड़ा
उतारकर हाथ में लिये लिये उस को पिला दिया ॥
१९। जब वह उस को पिला चुकी तब कहा मैं
तेरे ऊंटों के लिये भी पानी भरती हूं और जब लों
वे पी न चुकें तब लों भरती रहूंगी ॥ २०। ऐसा
कहके वह फुर्ती से अपने घड़े का जल कठौते में
उंडेलके फिर कूएं पर भरने को दौड़ गई और उस
के सब ऊंटों के लिये पानी भर दिया ॥ २१। इतने
में वह पुरुष उस की ओर चुपचाप अचंभे के साथ
ताकता हुआ यह सोचता था कि यहोवा ने मेरी
यात्रा को सुफल किया है कि नहीं ॥ २२। जब ऊंट
पी चुके तब उस पुरुष ने आध तोले का एक सोने
का नत्थ निकालके उस को दिया और दस तोले
के सोने के कड़े उस के हाथों में पहिना दिये ॥
२३। और पूछा तू किस की बेटी है यह मुझ को
बता दे क्या तेरे पिता के घर में हमारे टिकने के
लिये स्थान है ॥ २४। उस ने उस को उत्तर दिया
मैं तो नाहोर के जन्माये मिल्का के पुत्र बतूएल की

बेटी हूं ॥ २५। फिर उस ने उस से कहा हमारे यहां
पुआल और चारा बहुत है और टिकने के लिये
स्थान भी है ॥ २६। इतना सुन उस पुरुष ने सिर
झुकाकर यहोवा को दण्डवत करके कहा ॥ २७।
धन्य है मेरे स्वामी इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा
कि उस ने अपनी करुणा और सच्चाई को मेरे स्वामी
पर से हटा नहीं लिया यहोवा ने मुझ को ठीक
मार्ग से मेरे स्वामी के भाईबन्धुओं के घर पर
पहुंचा दिया है ॥ २८। इस पर उस कन्या ने
दौड़के अपनी माता के घर में यह सारा बृत्तान्त
कह सुनाया ॥ २९। यह सुनके लाबान जो रिबका
का भाई था सो बाहर सोते के निकट उस पुरुष
के पास दौड़ा ॥ ३०। अर्थात् जब उस ने वह नत्थ और
अपनी बहिन रिबका के हाथों में वे कड़े भी देखे
और उस की यह बात भी सुनी कि उस पुरुष ने
मुझ से ऐसी ऐसी बातें कहीं तब उस पुरुष के पास
गया और क्या देखा कि वह सोते के निकट ऊंटों
के पास खड़ा है ॥ ३१। उस ने कहा हे यहोवा
की ओर से धन्य पुरुष भीतर आ तू क्यों बाहर
खड़ा रहता है मैं ने तेरे लिये घर और ऊंटों के
लिये भी स्थान लैस किया है ॥ ३२। यह सुनके वह
पुरुष घर में गया और लाबान ने ऊंटों की काठियां
खोलके पुआल और चारा दिया और उस के और
उस के संगी जनों के पांव धोने को जल दिया ॥
३३। तब इब्राहीम के दास के आगे जलपान के लिये
कुछ रक्खा तो गया पर उस ने कहा मैं जब लों
अपना प्रयोजन न कह दूं तब लों कुछ न खाऊंगा
लाबान ने कहा कह दे ॥ ३४। तब उस ने कहा
मैं तो इब्राहीम का दास हूं ॥ ३५। और यहोवा
ने मेरे स्वामी को बड़ी आशीष दिई है सो वह
बढ़ गया है और उस ने उस को भेड़ बकरी गाय
बैल सोना रूपा दास दासियां ऊंट और गदहे दिये
हैं ॥ ३६। और मेरे स्वामी की स्त्री सारा उस का
जन्माया बुढ़ापे में एक पुत्र जनी और उस पुत्र को
इब्राहीम ने अपना सर्वस्व दिया है ॥ ३७। और
मेरे स्वामी ने मुझ से किरिया खिलाके यह कहलाना
चाहा कि मैं तेरे पुत्र के लिये कनानियों की लड़-
कियों में से जिन के देश में तू रहता है कोई स्त्री
न ले आऊंगा ॥ ३८। मैं तेरे पिता के घर और कुल के
लोगों के पास जाके तेरे पुत्र के लिये एक स्त्री ले
आऊंगा ॥ ३९। यह सुनके मैं ने अपने स्वामी से
कहा क्या जानिये वह स्त्री मेरे पीछे न आवे ॥
४०। उस ने मुझ से कहा यहोवा जिस को अपने
साम्हने जानके मैं चलता आया हूं सो तेरे संग
अपने दूत को भेजके तेरी यात्रा को सुफल करेगा
सो तू मेरे कुल और मेरे पिता के घराने में से मेरे
पुत्र के लिये एक स्त्री ले आ सकेगा ॥ ४१। तू तब
ही मेरी इस किरिया से छूटेगा जब मेरे कुल के
लोगों के पास पहुंचेगा अर्थात् यदि वे तुझे कोई
स्त्री न देवें तब तो तू मेरी किरिया से छूट सकता
है ॥ ४२। यह सुनके मैं ने वैसी ही किरिया खाई
और उस के अनुसार मैं आज उस सोते के निकट
आके कहने लगा हे मेरे स्वामी इब्राहीम के पर-
मेश्वर यहोवा यदि तू मेरी इस यात्रा को सुफल
करता हो ॥ ४३। तो देख मैं जल के इस सोते के
निकट खड़ा हूं सो ऐसा होवे कि जो कुमारी जल
भरने के लिये निकल आवे और मैं उस से कहूं
अपने घड़े में से मुझे थोड़ा पानी पिला ॥ ४४। और
वह मुझ से कहे तू तो पी ही ले और मैं तेरे ऊंटों
के पीने के लिये भी भरूंगी सो वही स्त्री होवे जिस
को तू ने हे यहोवा मेरे स्वामी के पुत्र के लिये
ठहराया हो ॥ ४५। मैं मन ही मन यह कही रहा
था कि रिबका कन्धे पर घड़ा लिये हुए निकली
आई फिर वह सोते के पास उतरके भरने लगी और
मैं ने उस से कहा कृपा करके मुझे पिला दे ॥
४६। सुनते ही उस ने फुर्ती से अपने घड़े को कन्धे
पर से उतारके कहा ले पी ले पीछे मैं तेरे ऊंटों को
भी पिलाऊंगी सो मैं ने पी लिया और उस ने ऊंटों
को भी पिला दिया ॥ ४७। तब मैं ने उस से पूछा
कि तू किस की बेटी है और उस ने कहा मैं तो
नाहोर के जन्माये मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी
हूं यह सुनके मैं ने उस की नाक में वह नत्थ और
उस के हाथों में वे कड़े पहिना दिये ॥ ४८। फिर
मैं ने सिर झुकाके यहोवा को दण्डवत किया और

अपने स्वामी इब्राहीम के उसी परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा क्योंकि उस ने मुझे ठीक मार्ग से पहुंचाया जिस्तें मैं अपने स्वामी के पुत्र के लिये उस की भतीजी को ले जाऊं ॥ ४९ । सो अब यदि तुम मेरे स्वामी के साथ कृपा और सच्चाई का व्यवहार करने चाहते हो तो मुझ से कहो और यदि न चाहते हो तौभी मुझ से कह देओ जिस्तें मैं जान लूं कि किधर फिरना चाहिये दहिनी ओर अथवा बाईं ॥ ५० । यह सुनके लाबान और बतूएल ने उत्तर दिया यह बात यहोवा की ओर से हुई है सो हम लोग तुझ से न तो भला कह सकते हैं न बुरा ॥ ५१ । देख रिबका तेरे साम्हने है उस को ले जा और वह यहोवा के कहे के अनुसार तेरे स्वामी के पुत्र की स्त्री हो जावे ॥ ५२ । उन का यह बचन सुनकर इब्राहीम के दास ने भूमि पर गिरके यहोवा को दण्डवत किया ॥ ५३ । फिर उस दास ने सोने और रूपे के गहने और बस्त्र निकालके रिबका को दिये और उस के भाई और माता को भी उस ने अनमोल अनमोल बस्तें दिईं ॥ ५४ । तब वह अपने संगी जनों समेत खाने पीने लगा और रात वहीं बिताई और तड़के उठके उस घर के लोगों से कहा मुझ को अपने स्वामी के पास जाने के लिये बिदा करो ॥ ५५ । रिबका के भाई और माता ने कहा कन्या को हमारे पास कुछ दिन अर्थात् कम से कम दस दिन तो रहने दे फिर उस के पीछे वह चली जावेगी ॥ ५६ । उस ने उन से कहा यहोवा ने जो मेरी यात्रा को सुफल किया है सो तुम मुझे मत रोको अब मुझे बिदा कर दो कि मैं अपने स्वामी के पास जाऊं ॥ ५७ । उन्हों ने कहा हम कन्या को बुलाके पूछते हैं और देखेंगे कि वह क्या कहती है ॥ ५८ । यह कह उन्हों ने रिबका को बुलाके उस से पूछा क्या तू इस मनुष्य के संग जावेगी उस ने कहा हां मैं जाऊंगी ॥ ५९ । यह सुनके उन्हों ने अपनी बहिन रिबका और उस की धाई और इब्राहीम के दास और उस के जन सभों को बिदा किया ॥ ६० । बिदा करते समय उन्हों ने रिबका को आशीर्बाद देके कहा हे हमारी बहिन तू लाखों करोड़ों की आदिमाता होवे और तेरा बंश अपने बैरियों के नगरों का स्वामी होवे ॥ ६१ । इस पर रिबका अपनी सहेलियों समेत चली और ऊंट पर चढ़के उस पुरुष के पीछे हो लिई इस रीति वह दास रिबका को साथ लेके चल दिया ॥ ६२ । इतने में इसहाक जो दक्षिण देश में रहता था सो तो लहैरोई नाम कूएं से होके चला आता था ॥ ६३ । एक दिन सांझ के समय वह चैागान में ध्यान करने के लिये निकला था कि आंखें उठाके क्या देखा कि ऊंट चले आते हैं ॥ ६४ । उसी समय रिबका ने भी जो आंखें उठाईं तो इसहाक को देखा और देखते ही ऊंट पर से उतर पड़ी ॥ ६५ । तब उस ने इब्राहीम के दास से पूछा वह जो पुरुष चैागान पर हम से मिलने को चला आता है सो कौन है दास ने कहा वह तो मेरा स्वामी है इतना सुन रिबका ने बुर्का लेके अपने मुंह को ढांप लिया ॥ ६६ । भेंट होने पर उस दास ने इसहाक से अपना सारा बृत्तान्त बर्णन किया ॥ ६७ । इस के उपरान्त इसहाक रिबका को अपनी माता सारा के तंबू में ले आया और उस को ब्याहके उस से प्रेम किया यों इसहाक को माता की मृत्यु के शोक दूर होने से शान्ति हुई ॥

(इब्राहीम के उत्तर चरित्र और मृत्यु का बर्णन.)

२५. इब्राहीम ने फिर एक स्त्री किई जिस का नाम कतूरा है ॥ २ । और वह उस के जन्माये जिम्रान योक्षान मदान मिदान यिशबाक और शूह को जनी ॥ ३ । और योक्षान ने शबा और ददान को जन्माया और ददान के बंश में अश्शूरी लतूशी और लुम्मी लोग उपजे ॥ ४ । और मिदान के पुत्र एपा एपेर हनोक अबीदा और एल्दा हुए ये सब कतूरा के बंश में उत्पन्न हुए ॥ ५ । इसहाक को तो इब्राहीम ने अपना सर्वस्व दिया ॥ ६ । पर अपनी सुरैतिनों के पुत्रों में से उस ने किसी को कुछ और किसी को कुछ देके अपने जीते जी अपने पुत्र इसहाक के पास से पूरब देश में भेज दिया ॥ ७ । इब्राहीम की तो

सारी अवस्था एक सौ पचहत्तर बरस की हुई ॥ ८ । निदान इब्राहीम का दीर्घायु होने पर बल्कि पूरे बुढ़ापे की अवस्था में प्राण छूट गया और वह अपने लोगों में जा मिला ॥ ९ । और उस के पुत्र इसहाक और इश्माएल ने उस को हित्ती सोहर के पुत्र एप्रोन की मम्रे के सम्मुखवाली भूमि में जो मकपेला की गुफा थी उस में मिट्टी दिई ॥ १० । अर्थात् जो भूमि इब्राहीम ने हित्तबंशियों से मोल लिई थी उसी में इब्राहीम और उस की स्त्री सारा दोनों को मिट्टी दिई गई ॥ ११ । इब्राहीम के मरने के पीछे परमेश्वर ने उस के पुत्र इसहाक को जो लहैरोई नाम कूएं के पास रहता था आशीष दिई ॥

(इश्माएल की बंशावली.)

१२ । इब्राहीम का पुत्र इश्माएल जिस को सारा की लौण्डी मिसी हागार इब्राहीम का जन्माया जनी थी तिस की यह बंशावली है ॥ १३ । इश्माएल के पुत्रों के नाम और बंशावली यह है अर्थात् इश्माएल का जेठा पुत्र तो नबायोत फिर केदार अदबेल मिबसाम ॥ १४ । मिश्मा दूमा मस्सा ॥ १५ । हदर तेमा यतूर नापीश और केदमा ॥ १६ । इश्माएल के पुत्र ये ही हुए और इन्हीं के नामों के अनुसार इन के गांवों और छावनियों के नाम भी पड़े और ये ही बारह अपने अपने कुल के प्रधान हुए ॥ १७ । इश्माएल की सारी अवस्था तो एक सौ सैंतीस बरस की हुई तब उस का प्राण छूट गया और वह अपने लोगों में जा मिला ॥ १८ । और उस के बंश हवीला से शूर लों जो मिस्र के सन्मुख अश्शूर के मार्ग में है बस गये और उन का भाग उन के सब भाईबन्धुओं के सन्मुख पड़ा ॥

(इसहाक के पुत्रों की उत्पत्ति का बर्णन.)

१९ । फिर इब्राहीम के पुत्र इसहाक की बंशावली यह है इब्राहीम ने इसहाक को जन्माया ॥ २० । और इसहाक ने चालीस बरस का होके रिबका को जो पद्दनराम के बासी अरामी बतूएल की बेटी और अरामी लाबान की बहिन थी ब्याह लिया ॥ २१ । इसहाक की स्त्री जो बांझ थी सो उस ने उस के निमित्त यहोवा से बिनती किई और यहोवा ने उस की बिनती सुनी सो उस की स्त्री रिबका गर्भवती हुई ॥ २२ । पीछे लड़के उस के गर्भ में आपस में लिपटके एक दूसरे को मारने लगे तब उस ने कहा मेरी जो ऐसी ही दशा रहेगी तो मैं क्यों जीती रहूंगी यह कहके वह यहोवा की इच्छा पूछने को गई ॥ २३ । तब यहोवा ने उस से कहा तेरे गर्भ में दो जातियां हैं और तेरी कोख से निकलते ही मनुष्यों के दो समुदाय अलग अलग होवेंगे और एक समुदाय दूसरे समुदाय से अधिक सामर्थी होवेगा और बड़का बेटा कुटके के अधीन होवेगा ॥ २४ । जब उस के जनने का समय आया तब क्या प्रगट हुआ कि उस के गर्भ में जुड़वे बालक हैं ॥ २५ । और पहिला जो निकला सो लाल निकला और उस का सारा शरीर कम्बल के समान रोंआर था सो उस का नाम एसाव रक्खा गया ॥ २६ । पीछे उस का भाई अपने हाथ से एसाव की एड़ी पकड़े हुए निकला और उस का नाम याकूब रक्खा गया और जब रिबका उन को जनी तब इसहाक साठ बरस का हुआ था ॥ २७ । फिर वे लड़के बढ़ने लगे और एसाव तो बनबासी होके चतुर शिकार खेलनेहारा हो गया पर याकूब सीधा मनुष्य था और तंबुओं में रहा करता था ॥ २८ । और इसहाक जो एसाव के अहेर का मांस खाया करता था इस लिये वह तो उसी से प्रीति रखता था पर रिबका याकूब से प्रीति रखती थी ॥ २९ । एक दिन की बात है कि याकूब भोजन के लिये कुछ सिझा रहा था कि एसाव बन से थका हुआ आया ॥ ३० । तब एसाव ने याकूब से कहा कृपा करके वह जो लाल बस्तु है उसी लाल बस्तु में से कुछ खिलाके मेरा पेट भर दे क्योंकि मैं थका हूं । इसी कारण उस का नाम एदोम भी पड़ा ॥ ३१ । याकूब ने कहा अपना पहिलौठे का हक आज मेरे हाथ बेंच दे तब मैं दूंगा ॥ ३२ । एसाव ने कहा देख मैं तो अभी मरने पर हूं सो पहिलौठे के हक से मेरा क्या लाभ होगा ॥ ३३ । याकूब ने कहा अच्छा अभी मुझ से किरिया खा यह सुनके उस ने उस से किरिया खाई इसी

रीति उस ने अपना पहिलौठे का हक याकूब के हाथ बेंच डाला ॥ ३४ । इस पर याकूब ने एसाव को रोटी और सिझाई हुई मसूर की दाल दिई और उस ने खाया पिया तब उठके चला गया यों एसाव ने अपना पहिलौठे का हक तुच्छ जाना ॥

(इसहाक का वृत्तान्त.)

२६. एक समय उस देश में अकाल पड़ा सो उस पहिले अकाल से भिन्न था जो इब्राहीम के दिनों में पड़ा था । अकाल को देखके इसहाक गरार को पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक के पास गया ॥ २ । वहां यहोवा ने उस को दर्शन देके कहा मिस्र में मत जा जो देश मैं तुझे बताऊं उसी में रह ॥ ३ । अर्थात् इसी देश में परदेशी होके रह और मैं तेरे संग संग रहूंगा और तुझे आशीष दूंगा और ये सब देश मैं तुझ को और तेरे बंश को देऊंगा इस भांति जो किरिया मैं ने तेरे पिता इब्राहीम से खाई थी उसे मैं पूरी करूंगा ॥ ४ । और मैं तेरे बंश को आकाश के तारागण के समान बहुत करूंगा और तेरे बंश को ये सब देश देऊंगा और पृथिवी की सारी जातियां तेरे बंश के कारण अपने को धन्य मानेंगी ॥ ५ । यह इस के पलटे में होगा कि इब्राहीम ने मेरी मानी और जो मैं ने उसे सौंपा था उस को और मेरी आज्ञाओं विधियों और व्यवस्था को पाला ॥ ६ । यह सुनके इसहाक गरार में रह गया ॥ ७ । जब उस स्थान के लोगों ने उस की स्त्री के विषय में पूछा तब उस ने यह सोचके कि यदि मैं उस को अपनी स्त्री कहूं तो यहां के लोग रिबका के कारण जो सुन्दरी है मुझ को मार डालेंगे उत्तर दिया वह तो मेरी बहिन है ॥ ८ । जब उस को वहां रहते बहुत दिन बीत गये तब एक दिन पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक ने खिड़की में से झांकके क्या देखा कि इसहाक अपनी स्त्री रिबका के साथ क्रीड़ा कर रहा है ॥ ९ । यह देख अबीमेलेक ने इसहाक को बुलवाके कहा वह तो निश्चय तेरी स्त्री है फिर तू ने क्योंकर उस को अपनी बहिन कहा इसहाक ने उत्तर दिया मैं ने सोचा था कि ऐसा न होवे कि उस के कारण मेरी मृत्यु हो ॥ १० । अबीमेलेक ने कहा तू ने हम से यह क्या किया था यदि प्रजा में से कोई तेरी स्त्री के साथ कुकर्म्म करता तो कुछ आश्चर्य्य न था और इस प्रकार से तू हम को पाप में फंसाता ॥ ११ । यह कहके अबीमेलेक ने अपनी सारी प्रजा को आज्ञा दिई कि जो कोई उस पुरुष को अथवा उस की स्त्री को छूवेगा सो निश्चय मार डाला जावेगा ॥ १२ । फिर इसहाक ने उस देश में जोता बोया और उसी बरस में सौ गुणा फल पाया बल्कि यहोवा ने उस पुरुष को ऐसी आशीष दिई ॥ १३ । कि वह बढ़ा और दिन दिन उस की बढ़ती होती चली गई यहां लों कि वह अति महान हो गया ॥ १४ । जब उस के भेड़ बकरी गाय बैल और बहुत से दास दासियां हुईं तब पलिश्ती लोग उस से डाह करने लगे ॥ १५ । सो जितने कूओं को उस के पिता इब्राहीम के दासों ने इब्राहीम के जीते जी खोदा था उन को पलिश्तियों ने मिट्टी से भर दिया ॥ १६ । तब अबीमेलेक ने इसहाक से कहा हमारे पास से चला जा क्योंकि तू हम से बहुत सामर्थी हो गया है ॥ १७ । यह सुनके इसहाक वहां से चला गया और गरार के नाले में अपना तंबू खड़ा करके वहां रहने लगा ॥ १८ । तब जो कूएं उस के पिता इब्राहीम के दिनों में खोदे गये थे और इब्राहीम के मरने के पीछे पलिश्तियों से भर दिये गये थे उन को इसहाक ने फिर से खुदवाया और उन के वे ही नाम रक्खे जो उस के पिता ने रक्खे थे ॥ १९ । फिर इसहाक के दासों को उसी नाले में खोदते खोदते बहते जल का एक सोता मिला ॥ २० । तब गरारी चरवाहों ने इसहाक के चरवाहों से झगड़ा करके कहा कि यह जल हमारा है सो उस ने उस कूएं का नाम एसेक रक्खा इस लिये कि वे उस से झगड़े थे ॥ २१ । फिर इसहाक के दासों ने दूसरा कूआं खोदा और उन्हों ने उस के लिये भी झगड़ा किया सो उस ने उस का नाम सित्ना रक्खा ॥ २२ । तब उस ने वहां से कूंच करके एक और कूआं खुदवाया और उस के लिये तो उन्हों ने झगड़ा न किया सो उस

ने उस का नाम यह कहके रहोबोत रक्खा कि अब तो यहोवा ने हमारे निर्बाह के लिये बहुत स्थान दिया है और हम इस देश में फूलें फलेंगे ॥ २३ । पीछे वह वहां से बेर्शेबा को गया ॥ २४ । और उसी दिन यहोवा ने रात को उसे दर्शन देके कहा मैं तेरे पिता इब्राहीम का परमेश्वर हूं सो मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूं और अपने दास इब्राहीम की खातिर तुझे आशीष दूंगा और तेरा बंश बढ़ाऊंगा ॥ २५ । यह सुनके उस ने वहां एक बेदी बनाई और यहोवा से प्रार्थना किई और अपना तंबू वहीं खड़ा किया और वहां इसहाक के दासों ने एक कूआं खोदा ॥ २६ । पीछे अबीमेलेक अपने मित्र अहुज्जत और अपने सेनापति पीकोल को संग लेकर गरार से उस के पास गया ॥ २७ । उन को देखके इसहाक ने कहा तुम ने तो मुझ से बैर करके मुझ को अपने बीच से निकाल दिया था सो अब मेरे पास क्यों आये हो ॥ २८ । उन्हों ने कहा हम ने तो प्रत्यक्ष देखा है कि यहोवा तेरे संग संग रहता है सो हम ने सोचा कि तू जो यहोवा की ओर से धन्य है सो हमारे और तेरे बीच में किरिया खाई जावे और हम तुझ से इस विषय की बाचा बंधावें ॥ २९ । कि जैसे तुम ने मुझे नहीं छूआ बल्कि मेरे साथ निरी भलाई किई है और मुझ को कुशल छेम से बिदा किया इस के अनुसार मैं भी तुम से कुछ बुराई न करूंगा तो अच्छा होगा ॥ ३० । यह सुनके उस ने उन की जेवनार किई और उन्हों ने खाया पिया ॥ ३१ । बिहान को उन सभों ने तड़के उठके आपस में किरिया खाई तब इसहाक ने उन को बिदा किया और वे कुशल छेम से उस के पास से चले गये ॥ ३२ । उसी दिन इसहाक के दासों ने आकर अपने उस खोदे हुए कूएं का वृत्तान्त सुनाके कहा कि हम को जल का एक सोता मिला है ॥ ३३ । यह सुनके उस ने उस का नाम शिबा रक्खा इसी कारण उस नगर का नाम बेर्शेबा पड़ा और आज लों भी वही नाम प्रसिद्ध है ॥

३४ । जब एसाव चालीस बरस का हुआ तब उस ने हित्ती बेरी की बेटी यहूदीत और हित्ती एलोन की बेटी बाशमत को ब्याह लिया ॥ ३५ । और इन स्त्रियों के कारण इसहाक और रिबका के मन को खेद हुआ ॥

(याकूब और एसाव को आशीर्वाद मिलने का वर्णन.)

२७. जब इसहाक बूढ़ा हो गया और उस की आंखें ऐसी धुन्धली पड़ गईं कि उस को सूझता न था तब उस ने एक दिन अपने जेठे पुत्र एसाव को बुलाके कहा हे मेरे पुत्र उस ने कहा क्या आज्ञा ॥ २ । इसहाक ने कहा सुन मैं तो बूढ़ा हो गया हूं और नहीं जानता कि मेरी मृत्यु का दिन कब होवे ॥ ३ । सो अब तू अपने बाणों का तर्कश और धनुष आदि हथियार लेके बन में जा और मेरे लिये अहेर कर ले आ ॥ ४ । तब मेरी रुचि के अनुसार स्वादिष्ठ भोजन बनाके मेरे पास ले आना जिस्से मैं उसे खाके मरने से पहिले तुझे जी से आशीर्बाद देऊं ॥ ५ । यह आज्ञा पाके एसाव अहेर करने को बन में गया । जब इसहाक एसाव से यह बात कह रहा था तब रिबका सुन रही थी ॥ ६ । सो उस ने अपने पुत्र याकूब से कहा सुन मैं ने तेरे पिता को तेरे भाई एसाव से यह कहते सुना कि ॥ ७ । तू मेरे लिये अहेर करके उस का स्वादिष्ठ भोजन बना कि मैं उसे खाके तुझे यहोवा के आगे मरने से पहिले आशीर्बाद देऊं ॥ ८ । सो अब हे मेरे पुत्र मेरी सुन और मेरी यह आज्ञा मान कि ॥ ९ । भेड़ बकरियों के पास जाके बकरियों के दो अच्छे अच्छे बच्चे ले आ और मैं तेरे पिता के लिये उस की रुचि के अनुसार उन के मांस का स्वादिष्ठ भोजन बनाऊंगी ॥ १० । तब तू उस को अपने पिता के पास ले जाना कि वह उसे खाके मरने से पहिले तुझ को आशीर्बाद देवे ॥ ११ । याकूब ने अपनी माता रिबका से कहा सुन मेरा भाई एसाव तो रोंआर पुरुष है और मैं रोमहीन पुरुष हूं ॥ १२ । क्या जानिये मेरा पिता मुझे टटोलने लगे तो मैं उस के लेखे में ठग ठहरूंगा इस रीति आशीष के बदले साप ही कमाऊंगा ॥ १३ । उस की माता ने उस से कहा हे मेरे पुत्र साप तुझ पर

नहीं मुझी पर पड़े तू केवल मेरी सुन और जाके वे बच्चे मेरे पास ले आ ॥ १४ । यह सुन याकूब जाके उन को अपनी माता के पास ले आया और माता ने उस के पिता की रुचि के अनुसार स्वादिष्ठ भोजन बना दिया ॥ १५ । तब रिबका ने अपने पहिलौठे पुत्र एसाव के सुन्दर बस्त्र जो उस के पास घर में थे लेके अपने लहुरे पुत्र याकूब को पहिना दिये ॥ १६ । और बकरियों के बच्चों की खालों को उस के हाथों में और उस के चिकने गले में लपेट दिया ॥ १७ । और वह स्वादिष्ठ भोजन और अपनी बनाई हुई रोटी भी अपने पुत्र याकूब के हाथ में दिई ॥ १८ । यह लेके वह अपने पिता के पास गया और कहा हे मेरे पिता उस ने कहा क्या बात है हे मेरे पुत्र तू कौन है ॥ १९ । याकूब ने अपने पिता से कहा मैं तो तेरा जेठा पुत्र एसाव हूं मैं ने तेरी आज्ञा के अनुसार किया है सो कृपा करके उठ और बैठके मेरे अहेर के मांस में से खा जिस्तें तू जी से मुझे आशीर्बाद देवे ॥ २० । इसहाक ने अपने पुत्र से कहा हे मेरे पुत्र क्या कारण है कि वह तुझे ऐसे झट मिल गया उस ने उत्तर दिया यह कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उस को मेरे साम्हने कर दिया ॥ २१ । फिर इसहाक ने याकूब से कहा हे मेरे पुत्र निकट आ मैं तुझे टटोलके जानूं कि तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव है वा नहीं ॥ २२ । यह सुनके याकूब अपने पिता इसहाक के निकट गया और उस ने उस को टटोलके कहा बोल तो याकूब का सा है पर हाथ एसाव ही के से जान पड़ते हैं ॥ २३ । इस रीति उस के हाथ जो उस के भाई एसाव के से रोंआर थे इस कारण वह उसे चीन्ह न सका सो उस ने उस को आशीर्बाद दिया ॥ २४ । हां पहिले तो उस ने पूछा क्या तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव है उस ने कहा हां मैं हूं ॥ २५ । तब उस ने कहा भोजन को मेरे निकट ले आ कि मैं तुझ अपने पुत्र के अहेर के मांस में से खाके तुझे जी से आशीर्बाद देऊं यह सुनके वह उस को उस के निकट ले आया और उस ने खाया और वह उस के पास दाखमधु भी लाया और उस ने पिया ॥ २६ । तब उस के पिता इसहाक ने उस से कहा हे मेरे पुत्र निकट आके मुझे चूम ॥ २७ । उस ने निकट जाके उस को चूमा और उस ने उस के बस्त्रों का सुगंध पाके उस को यह आशीर्बाद दिया कि हे मेरे पुत्र सुन तेरा सुगंध जो ऐसे खेत का सा है जिस पर यहोवा ने आशीष दिई हो ॥ २८ । सो परमेश्वर तुझे आकाश से ओस और भूमि की उत्तम से उत्तम उपज और बहुत सा अनाज और नया दाखमधु देवे ॥ २९ । लुगुदाय लुगुदाय के लोग तेरे अधीन होवें और जाति जाति के लोग तुझे दण्डवत करें तू अपने भाइयों का स्वामी होवे और तेरी माता के पुत्र तुझे दण्डवत करें जो तुझे साप देवें सो आप ही सापित होवें और जो तुझे आशीर्बाद दें सो आशीष पावें ॥ ३० । यह आशीर्बाद इसहाक याकूब को दे ही चुका और याकूब अपने पिता इसहाक के साम्हने से निकलता ही था कि एसाव अहेर लेके आ पहुंचा ॥ ३१ । तब वह भी स्वादिष्ठ भोजन बनाके अपने पिता के पास ले आया और उस से कहा हे मेरे पिता उठके मुझ अपने पुत्र के अहेर का मांस खा जिस्तें तू मुझे जी से आशीर्बाद देवे ॥ ३२ । उस के पिता इसहाक ने उस से पूछा तू कौन है उस ने कहा मैं तो तेरा जेठा पुत्र एसाव हूं ॥ ३३ । इतना सुनके इसहाक ने अत्यन्त थरथर कांपते हुए कहा फिर वह कौन था जो अहेर करके मेरे पास ले आया था और मैं ने तेरे आने से पहिले सब में से कुछ कुछ खा लिया और उस को आशीर्बाद दिया बल्कि उस को आशीष लगी भी रहेगी ॥ ३४ । अपने पिता की यह बात सुनते ही एसाव ने अत्यन्त ऊंचे और दुःख भरे स्वर से चिल्लाके अपने पिता से कहा हे मेरे पिता मुझ को भी आशीर्बाद दे ॥ ३५ । उस ने कहा तेरा भाई धूर्तता से आया और तेरे विषय के आशीर्बाद को लेके चला गया ॥ ३६ । उस ने कहा क्या उस का नाम याकूब यथार्थ नहीं रक्खा गया उस ने तो मुझे दो बार अड़ंगा मारा मेरा पहिलौठे का हक तो उस ने ले ही लिया था और अब देख उस ने मेरे विषय का आशीर्बाद भी ले लिया है फिर उस ने कहा क्या तू ने मेरे लिये भी कोई आशीर्बाद नहीं सोच रक्खा है ॥

३७ । इसहाक ने एसाव को उत्तर देके कहा सुन मैं ने तो उस को तेरा स्वामी ठहराया और उस के सब भाइयों को उस के अधीन कर दिया और अनाज और नया दाखमधु देके उस को पुष्ट किया है सो अब हे मेरे पुत्र मैं तेरे लिये क्या करूं ॥ ३८ । एसाव ने अपने पिता से कहा हे मेरे पिता क्या तू एक ही को आशीर्बाद देने जानता है हे मेरे पिता मुझ को भी आशीर्बाद दे यों कहके एसाव फूट फूटके रोया ॥ ३९ । उस के पिता इसहाक ने उस से कहा सुन तेरा निवास उपजाऊ भूमि पर होवे और ऊपर से आकाश की ओस उस पर पड़े ॥ ४० । और तू अपनी तलवार के बल से जीवे और अपने भाई के अधीन तो होवे पर जब तू स्वाधीन हो जावेगा तब उस के जूए को अपने कंधे पर से तोड़ भी फेंके ॥ ४१ । एसाव ने जो याकूब से अपने पिता के दिये हुए आशीर्बाद के कारण बैर रक्खा सो उस ने सोचा कि मेरे पिता के अन्तकाल का दिन निकट है जब वह आवेगा तब मैं अपने भाई याकूब को घात करूंगा ॥ ४२ । जब रिबका को अपने पहिलौठे पुत्र की यह बातें बताई गईं तब उस ने अपने लहुरे पुत्र याकूब को बुलाके कहा सुन तेरा भाई एसाव तुझे घात करने का बिचार करके अपने मन को धीरज दे रहा है ॥ ४३ । सो अब हे मेरे पुत्र मेरी सुन और हारान को मेरे भाई लाबान के पास भाग जा ॥ ४४ । और थोड़े दिन लों अर्थात् जब लों तेरे भाई का क्रोध न उतरे तब लों उसी के पास रहना ॥ ४५ । फिर जब तेरे भाई का क्रोध तुझ पर से उतरे और जो काम तू ने उस से किया है उस को वह भूल जावे तब मैं तुझे वहां से बुलवा भेजूंगी ऐसा क्यों हो कि एक ही दिन में तुम दोनों से मुझे हाथ धोना पड़े ॥

४६ । फिर रिबका ने इसहाक से कहा हित्तबंशी लड़कियों के कारण मैं अपने प्राण से खिन करती हूं सो यदि ऐसी हित्तबंशी लड़कियों में से जैसी ये देशी लड़कियां हैं याकूब भी एक को कहीं ब्याह लेवे तो मेरे जीवन में क्या लाभ होगा । यह सुनकर

२८. इसहाक ने याकूब को बुलाके आशीर्बाद दिया और आज्ञा दिई कि तू किसी कनानी लड़की को न ब्याह लेना ॥ २ । पद्दनराम में अपने नाना बतूएल के घर जाके वहां अपने मामा लाबान की एक बेटी को ब्याह लेना ॥ ३ । और सर्बशक्तिमान ईश्वर तुझे आशीष देवे और फुलाय फलाके बढ़ावे और तू जाति जाति की मण्डली का मूल होवे ॥ ४ । और वह तुझे और तेरे बंश को भी इब्राहीम की सी आशीष देवे जिस्तें तू यह देश जिस में तू परदेशी होके रहता है और जिसे परमेश्वर ने इब्राहीम को दिया था तिस का स्वामी हो जावे ॥ ५ । यह कहके इसहाक ने याकूब को बिदा किया और वह पद्दनराम को अरामी बतूएल के उस पुत्र लाबान के पास चला जो याकूब और एसाव की माता रिबका का भाई था ॥ ६ । जब इसहाक ने याकूब को आशीर्बाद देके पद्दनराम भेज दिया जिस्तें वह वहीं से स्त्री ब्याह लावे और उस को आशीर्बाद देने के समय यह आज्ञा भी दिई कि तू किसी कनानी लड़की को ब्याह न लेना ॥ ७ । और याकूब माता पिता की मानके पद्दनराम को चल दिया ॥ ८ । तब एसाव यह सब देखके और यह भी सोचके कि कनानी लड़कियां मेरे पिता इसहाक को बुरी लगती हैं ॥ ९ । इब्राहीम के पुत्र इश्माएल के पास गया और उसी इश्माएल की बेटी महलत को जो नबायोत की बहिन थी ब्याहके अपनी स्त्रियों में मिला लिया ॥

(याकूब के परदेश जाने का बर्णन.)

१० । जब याकूब बेर्शेबा से निकलके हारान की ओर चला ॥ ११ । तब मार्ग के किसी स्थान में पहुंचके रात वहीं बिताने का बिचार किया क्योंकि सूर्य्य अस्त हो गया था सो उस ने उस स्थान के पत्थरों में से एक पत्थर ले अपना उसीसा बनाके रक्खा और उसी स्थान में सो गया ॥ १२ । तब उस ने स्वप्न में क्या देखा कि एक सीढ़ी पृथिवी पर खड़ी है और उस का सिरा स्वर्ग लों पहुंचा है और फिर क्या देखा कि परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं ॥ १३ । फिर क्या देखा कि यहोवा उस के ऊपर खड़ा होके मुझ से कहता है कि मैं तेरे दादा इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक

का भी परमेश्वर यहोवा हूं जिस भूमि पर तू पड़ा है उसे मैं तुझ को और तेरे बंश को देऊंगा ॥ १४ । और तेरा बंश भूमि की धूल के किनकों के समान बहुत होगा और पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन चारों ओर फैलता जावेगा और तेरे और तेरे बंश के द्वारा पृथिवी के सारे कुल आशीष पावेंगे ॥ १५ । और सुन मैं तेरे संग संग रहूंगा और जहां कहीं तू जावे तहां तेरी रक्षा करूंगा और तुझे इस देश में लौटा ले आऊंगा मैं अपने कहे हुए को जब लों पूरा न कर लूं तब लों तुझ को न छोड़ूंगा ॥ १६ । इतने पर याकूब जाग उठा और कहने लगा निश्चय इस स्थान में यहोवा होगा और मैं इस बात को न जानता था ॥ १७ । फिर भय खाके उस ने कहा यह स्थान क्या ही भयपूर्ण है यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता बल्कि यह स्वर्ग का फाटक ही होगा ॥ १८ । भोर को याकूब तड़के उठा और अपने उसीसे का पत्थर लेके उस का खंभा खड़ा किया और उस के सिरे पर तेल डाल दिया ॥ १९ । और उस ने वह स्थान जिस के पास का नगर पहिले लूज कहावता था उस का नाम बेतेल रक्खा ॥ २० । फिर याकूब ने यह मनौती मानी कि हे परमेश्वर यदि तू मेरे संग संग रहके इस यात्रा में मेरी रक्षा करे और मुझे खाने के लिये रोटी और पहिनने के लिये कपड़ा देवे ॥ २१ । और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेम से लौट आऊं तो हे यहोवा तू मेरा परमेश्वर ठहरेगा ॥ २२ । और यह पत्थर जिस का मैं ने खंभा खड़ा किया है सो तुझ परमेश्वर का भवन ठहरेगा और जो कुछ तू मुझे देवे उस का दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूंगा ॥

(याकूब के बिवाहों और उस के पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन।)

२९. फिर याकूब ने अपना मार्ग लिया और पूर्ब्बियों के देश में आया ॥ २ । वहां उस ने जो दृष्टि किई तो क्या देखा कि चौगान में एक कूआं है और उस के पास भेड़ बकरियों के तीन झुण्ड बैठे हुए हैं क्योंकि जो पत्थर उस कूएं के मुंह पर धरा रहता था जिस में से झुण्डों को जल पिलाया जाता था सो भारी था ॥ ३ । जब जब सब झुण्ड वहां एकट्ठे होते तब तब चरवाहे उस पत्थर को कूएं के मुंह पर से लुढ़काकर भेड़ बकरियों को पानी पिलाते और फिर पत्थर को कूएं के मुंह पर ज्यों का त्यों कर देते थे ॥ ४ । सो याकूब ने चरवाहों से पूछा हे मेरे भाइयो तुम कहां के हो उन्हों ने कहा हम हारान के हैं ॥ ५ । फिर उस ने उन से पूछा क्या तुम नाहोर के पोते लाबान को जानते हो उन्हों ने कहा हां हम उसे जानते हैं ॥ ६ । फिर उस ने उन से पूछा क्या वह कुशल से है उन्हों ने कहा हां कुशल से तो है और वह देख उस की बेटी राहेल भेड़ बकरियों को लिये हुए चली आती है ॥ ७ । उस ने कहा देखो अभी तो दिन बहुत है पशुओं के एकट्ठे होने का समय नहीं सो भेड़ बकरियों को जल पिलाकर फिर ले जाके चराओ ॥ ८ । उन्हों ने कहा हम अभी ऐसा नहीं कर सकते जब सब झुण्ड एकट्ठे होते और पत्थर कूएं के मुंह पर से लुढ़काया जाता है तब ही हम भेड़ बकरियों को पानी पिलाते हैं ॥ ९ । उन की यह बातचीत हो ही रही थी कि राहेल जो पशु चराया करती थी सो अपने पिता की भेड़ बकरियों को लिये हुए आ गई ॥ १० । अपने मामा लाबान की बेटी राहेल को और उसी की भेड़ बकरियों को भी देखके याकूब ने निकट जा कूएं के मुंह पर से पत्थर को लुढ़काके अपने मामा लाबान की भेड़ बकरियों को पिला दिया ॥ ११ । तब याकूब ने राहेल को चूमा और ऊंचे स्वर से रोया ॥ १२ । फिर याकूब ने राहेल को बता दिया कि मैं तेरा फुफेरा भाई हूं अर्थात् रिबका का पुत्र हूं इतना सुन उस ने दौड़के अपने पिता से कह दिया ॥ १३ । अपने भांजे याकूब का समाचार पाते ही लाबान उस से भेंट करने को दौड़ा और उस को गले लगाके चूमा फिर अपने घर ले आया और याकूब ने लाबान से अपना सब वृत्तान्त बर्णन किया ॥ १४ । तब लाबान ने उस से कहा तू तो सचमुच मेरा हाड़ मांस है । इस पर याकूब उस के

साथ महीना भर रहा ॥ १५ । इस के बीते पर लाबान ने याकूब से कहा भाईबंधु होने के कारण तो तुझ से सेंतमेंत सेवा कराना मुझे उचित नहीं है सो कह दे मैं तुझे सेवा के बदले क्या दूं ॥ १६ । जानना चाहिये कि लाबान के दो बेटियां थीं जिन में से बड़की का नाम लेआ और छुटकी का राहेल है ॥ १७ । लेआ के तो चुंधली आंखें थीं पर राहेल रूपवती और सुन्दर थी ॥ १८ । सो याकूब जो राहेल से प्रीति रखता था सो उस ने लाबान से कहा मैं तेरी छुटकी बेटी राहेल के लिये सात बरस तेरी सेवा करूंगा ॥ १९ । लाबान ने कहा उसे पराये पुरुष को देने से तुझी को देना उत्तम होगा सो तू मेरे पास रह ॥ २० । सो याकूब ने राहेल के लिये सात बरस सेवा किई और वे उस को राहेल की प्रीति के कारण थोड़े ही दिनों के बराबर जान पड़े ॥ २१ । उन के बीतने पर याकूब ने लाबान से कहा मेरी स्त्री मुझे दे और मैं उस के पास जाऊंगा क्योंकि मेरा समय पूरा हो गया है ॥ २२ । यह सुन लाबान ने उस स्थान के सब मनुष्यों को बुलाके एकट्ठा किया और उन की जेवनार किई ॥ २३ । सांझ के समय वह अपनी बेटी लेआ को याकूब के पास ले गया और उस ने उस से प्रसंग किया ॥ २४ । और लाबान ने अपनी बेटी लेआ की लौण्डी होने के लिये अपनी लौण्डी जिल्पा को दिया ॥ २५ । भोर को याकूब ने देखा कि यह तो लेआ है सो उस ने लाबान से कहा यह तू ने मुझ से क्या किया है मैं ने तेरे साथ रहके जो तेरी सेवा किई सो क्या राहेल के लिये नहीं किई फिर तू ने मुझ से क्यों ऐसा छल किया है ॥ २६ । लाबान ने कहा हमारे यहां ऐसी रीति नहीं कि जेठी से पहिले दूसरी का बिवाह कर देवें ॥ २७ । अब इस का अठवारा तो पूरा कर फिर दूसरी भी तुझे इस शर्त पर मिलेगी कि तू मेरे साथ रहके और सात बरस लों सेवा करता रहे ॥ २८ । ऐसा ही करने को प्रसन्न होके याकूब ने लेआ के अठवारे को पूरा किया तब लाबान ने उसे अपनी बेटी राहेल को भी दिया कि वह उस की स्त्री होवे ॥ २९ । और लाबान ने अपनी बेटी राहेल को लौण्डी होने के लिये अपनी लौण्डी बिल्हा को दिया ॥ ३० । तब याकूब राहेल के पास भी गया और उस की प्रीति लेआ से अधिक उसी पर हुई और उस ने लाबान के साथ रहके और भी सात बरस उस की सेवा किई ॥

३१ । जब यहोवा ने देखा कि लेआ अप्रिय हुई तब उस की तो कोख खोली पर राहेल बांझ रही ॥ ३२ । सो लेआ गर्भवती हुई और एक पुत्र जनी और यह कहके उस का नाम रूबेन रक्खा कि यहोवा ने जो मेरे दुःख पर दृष्टि किई है सो अब मेरा पति मुझ से प्रीति रक्खेगा ॥ ३३ । फिर वह गर्भवती होके एक पुत्र और जनी और बोली यह सुनके कि मैं अप्रिय हूं यहोवा ने मुझे यह भी पुत्र दिया इस लिये उस ने उस का नाम शिमोन रक्खा ॥ ३४ । फिर वह गर्भवती होके एक पुत्र और जनी और कहा अब की बार तो मेरे पति का मन मुझ से मिल जावेगा क्योंकि मैं उस के तीन पुत्र जनी हूं इस लिये उस का नाम लेवी रक्खा गया ॥ ३५ । फिर वह गर्भवती होके एक और पुत्र जनी और कहा अब की बार तो मैं यहोवा का धन्यबाद करूंगी इस लिये उस ने उस का नाम यहूदा रक्खा तब उस का जनना बन्द हो गया ॥

३०. जब राहेल ने देखा कि याकूब के मुझ से सन्तान नहीं होते तब वह अपनी बहिन से डाह करने लगी और याकूब से कहा मुझे लड़के दे नहीं तो मर जाऊंगी ॥ २ । यह सुनके याकूब ने राहेल से क्रोधित होके कहा क्या मैं परमेश्वर हूं तेरी कोख तो उसी ने बन्द कर रक्खी है ॥ ३ । राहेल ने कहा अच्छा मेरी लौण्डी बिल्हा हाजिर है उसी के पास जा वह मेरे घुटनों पर जनेगी और इस प्रकार से उस के द्वारा मेरा भी घर बसेगा ॥ ४ । यह कहके उस ने उसे अपनी लौण्डी बिल्हा को दिया कि वह उस की स्त्री होवे और याकूब उस के पास गया ॥ ५ । और बिल्हा गर्भवती होके याकूब का जन्माया एक पुत्र जनी ॥ ६ । यह देखके राहेल ने कहा परमेश्वर ने मेरा न्याय चुकाया और मेरी सुनके मुझे

एक पुत्र दिया इस लिये उस ने उस का नाम दान रक्खा ॥ ७ । और राहेल की लौण्डी बिल्हा फिर गर्भवती होके याकूब का जन्माया एक पुत्र और जनी ॥ ८ । तब राहेल ने कहा मैं ने भानो अपनी बहिन के साथ बड़े बल से लिपटके मल्लयुद्ध किया और अब जीत गई सो उस ने उस का नाम नप्ताली रक्खा ॥ ९ । जब लेआ ने देखा कि मैं जनने से रहित हो गई हूं तब उस ने भी अपनी लौण्डी जिल्पा को लेके याकूब की स्त्री होने के लिये दे दिया ॥ १० । और लेआ की लौण्डी जिल्पा भी याकूब का जन्माया एक पुत्र जनी ॥ ११ तब लेआ ने कहा मेरा सौभाग्य फिर जागा है सो उस ने उस का नाम गाद रक्खा ॥ १२ । फिर लेआ की लौण्डी जिल्पा याकूब का जन्माया एक पुत्र और जनी ॥ १३ । तब लेआ ने कहा मैं धन्य हूं निश्चय स्त्रियां मुझे धन्य कहेंगी सो उस ने उस का नाम आशेर रक्खा ॥ १४ । गोहूं की कटनी के दिनों में एक दिन रूबेन को चौगान में दूदा पेड़ के फल मिले और वह उन को अपनी माता लेआ के पास ले गया उन को देखके राहेल ने लेआ से कहा कृपा करके अपने पुत्र के दूदाफलों में से कुछ मुझे भी दे ॥ १५ । उस ने उस से कहा तू ने जो मेरे पति को ले लिया है सो क्या ऐसी छोटी बात है कि तू मेरे पुत्र के दूदाफल भी लेने चाहती है राहेल ने कहा अच्छा तेरे पुत्र के दूदाफलों के पलटे में वह आज रात को तेरे संग सोवेगा ॥ १६ । सो सांझ को जब याकूब चौगान से आता था तब लेआ उस से भेंट करने को निकली और कहा तुझे मेरे ही पास आना होगा क्योंकि मैं ने अपने पुत्र के दूदाफल देके तुझे सचमुच मोल लिया है यह सुनके वह उस रात को उसी के संग सोया ॥ १७ । तब परमेश्वर ने लेआ की सुनी सो वह गर्भवती होके याकूब का जन्माया पांचवां पुत्र जनी ॥ १८ । तब लेआ ने कहा मैं ने जो अपने पति को अपनी लौण्डी दिई इस लिये परमेश्वर ने मुझे मेरी मजूरी दिई है सो उस ने उस का नाम इस्साकार रक्खा ॥ १९ । और लेआ फिर गर्भवती होके याकूब का जन्माया छठवां पुत्र जनी ॥ २० । तब लेआ ने कहा परमेश्वर ने मुझे अच्छा दान दिया है अब की बार मेरा पति मेरे संग बना रहेगा क्योंकि मैं उस के जन्माये छः पुत्र जनी हूं सो उस ने उस का नाम जबूलून रक्खा ॥ २१ । इस के पीछे उस के एक बेटी भी हुई और उस ने उस का नाम दीना रक्खा ॥ २२ । पीछे परमेश्वर ने राहेल की भी सुधि लिई और उस की सुनके उस की कोख खोली ॥ २३ । सो वह गर्भवती होके एक पुत्र जनी और कहा परमेश्वर ने मेरी नामधराई को दूर कर दिया है ॥ २४ । इस कारण उस ने यह कहके उस का नाम यूसुफ रक्खा कि परमेश्वर मुझे एक और पुत्र भी देगा ॥

२५ । जब राहेल यूसुफ को जनी तब याकूब ने लाबान से कहा अब मुझे बिदा कर कि मैं अपने देश और स्थान को जाऊं ॥ २६ । मेरी स्त्रियां और मेरे लड़केवाले जिन के लिये मैं ने तेरी सेवा किई है उन्हें मुझे दे कि मैं चला जाऊं तू तो जानता है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा किई है ॥ २७ । लाबान ने उस से कहा यदि तेरी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो तो रह जा क्योंकि मैं ने लक्षण से जान लिया है कि यहोवा ने तेरे कारण से मुझे आशीष दिई है ॥ २८ । फिर लाबान ने कहा अच्छा तो अब तू ही ठीक बता कि मैं तुझ को क्या दूं और मैं उसे देऊंगा ॥ २९ । उस ने उस से कहा तू तो जानता है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा किई और तेरे पशु मेरे पास किस प्रकार से रहे ॥ ३० । अर्थात् मेरे आने से पहिले तो वे कितनी थीं और अब कितनी हो गई हैं और यहोवा ने मेरे आने पर तुझे तो आशीष दिई है पर मैं अपने घर का भी कब बन्दोबस्त करने पाऊंगा ॥ ३१ । लाबान ने फिर कहा मैं तुझे क्या देऊं याकूब ने कहा तू मुझे कुछ न दे यदि तू मेरे लिये एक काम करे तो मैं फिर तेरी भेड़ बकरियों को चराऊंगा और उन की रक्षा करूंगा ॥ ३२ । मैं आज तेरी सब भेड़ बकरियों के बीच होके निकलूंगा और जो भेड़ वा बकरी चित्तीवाली अथवा चित्कबरी होवे और जो भेड़ काली हो और जो बकरी चित्कबरी वा चित्तीवाली होवे उन्हें मैं अलग

कर रक्खूंगा और मेरी सेवा का बदला वे ही ठहरेंगी ॥ ३३ । इस प्रकार से जब आगे को मेरी मजूरी की चर्चा तेरे साम्हने चले तब मेरे धर्म्म की यही साक्षी होगी अर्थात् बकरियों में से जो कोई न चित्तीवाली न चित्कबरी होवे और भेड़ों में से जो कोई काली न होवे सो यदि मेरे पास निकले तो चोरी की ठहरेगी ॥ ३४ । यह सुनके लाबान ने कहा तेरे कहने के अनुसार होवे तो अच्छा होवेगा ॥ ३५ । सो उस ने उसी दिन सब धारीवाले और चित्कबरे बकरों और सब चित्तीवाली और चित्कबरी बकरियों को अर्थात् जितनियों में कुछ उजलापन था उन को और सब काली भेड़ों को भी अलग करके अपने पुत्रों के हाथ सौंप दिया ॥ ३६ । फिर उस ने अपने और याकूब के बीच में तीन दिन के मार्ग का अन्तर ठहराया सो याकूब लाबान की बाकी भेड़ बकरियों को चराने लगा ॥ ३७ । फिर याकूब ने चिनार और बादाम और अर्मोन वृक्षों की हरी हरी छड़ियां लेके उन के छिलके कहीं कहीं छीलके उन्हें गंडेरीदार बना दिया ॥ ३८ । और छीली हुई छड़ियों को भेड़ बकरियों के साम्हने उन के पानी पीने के कठौतों में खड़ा किया और जब वे पीने के लिये आईं तब गाभिन हो गईं ॥ ३९ । इस प्रकार छड़ियों के साम्हने गाभिन होके भेड़ बकरियां धारीवाले चित्तीवाले और चित्कबरे बच्चे जनीं ॥ ४० । तब याकूब ने भेड़ों के बच्चों को अलग अलग किया और लाबान की भेड़ बकरियों के मुंह को चित्तीवाले और सब काले बच्चों की ओर कर दिया और अपने झुण्डों को उन से अलग रक्खा और लाबान की भेड़ बकरियों से मिलने न दिया ॥ ४१ । और जब जब बलवन्त भेड़ बकरियां गाभिन होती थीं तब तो याकूब उन छड़ियों को कठौतों में उन के साम्हने रख देता था जिस से वे छड़ियों को देखती हुई गाभिन हो जावें ॥ ४२ । पर जब निर्बल भेड़ बकरियां गाभिन होती थीं तब वह उन्हें उन के आगे न रखता था इस से निर्बल निर्बल लाबान की रहीं और बलवन्त बलवन्त याकूब की हो गईं ॥ ४३ । इस प्रकार से वह पुरुष अत्यन्त धनाढ्य हो गया और उस के बहुत सी भेड़ बकरियां लौण्डियां दास ऊंट और गदहे हुए ॥

(याकूब के घर जाने का वर्णन.)

३१ एक दिन लाबान के पुत्रों की ये बातें याकूब के सुनने में आईं कि याकूब ने हमारे पिता का सर्वस्व छीन लिया है और हमारे पिता का जो धन था उसी से उस ने अपना यह सारा बिभव कर लिया है ॥ २ । और याकूब लाबान की चेष्टा से भी ताड़ गया कि वह आगे की नाईं अब मुझे नहीं देखता ॥ ३ । तब यहोवा ने याकूब से कहा अपने पितरों के देश और अपनी जन्मभूमि को लौट जा और मैं तेरे संग संग रहूंगा ॥ ४ । इस पर याकूब ने राहेल और लेआ को चौगान पर अपनी भेड़ बकरियों के पास बुलवाके ॥ ५ । कहा तुम्हारे पिता की चेष्टा से मुझे समझ पड़ता है कि वह तो मुझे आगे की नाईं अब नहीं देखता पर मेरे पिता का परमेश्वर अब लों मेरे संग संग रहा है ॥ ६ । और तुम भी जानती हो कि मैं ने तुम्हारे पिता की सेवा शक्ति भर किई है ॥ ७ । और तुम्हारे पिता ने मुझ से छल करके मेरी सेवा के फल को दस बार बदल तो दिया परन्तु परमेश्वर ने उस को मेरी हानि करने नहीं दिया ॥ ८ । जब उस ने कहा कि चित्तीवाले बच्चे तेरा बदला ठहरेंगे तब सब भेड़ बकरियां चित्तीवाले ही जनने लगीं और जब उस ने कहा कि धारीवाले बच्चे तेरा बदला ठहरेंगे तब सब भेड़ बकरियां धारीवाले ही जनने लगीं ॥ ९ । इस रीति से परमेश्वर ने तुम्हारे पिता के पशु छीनके मुझी को दे दिये ॥ १० । एक समय जब भेड़ बकरियां गाभिन होने लगीं तब मैं ने स्वप्न में क्या देखा कि जो बकरे बकरियों पर चढ़ रहे हैं सो धारीवाले चित्तीवाले और धब्बेवाले हैं ॥ ११ । और परमेश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझ से कहा हे याकूब मैं ने कहा क्या आज्ञा ॥ १२ । उस ने कहा आंखें उठाके उन सब बकरों को जो बकरियों पर चढ़ रहे हैं देख कि वे धारीवाले चित्तीवाले और धब्बेवाले हैं और तेरे पशुओं में ऐसा होने का कारण

यह है कि जो कुछ लाबान तुझ से करता है सो मैं ने देखा है ॥ १३ । मैं उस बेतेल का ईश्वर हूं जहां तू ने एक खंभे पर तेल डाल दिया और मेरी मनौती मानी थी अब चल इस देश से निकलके अपनी जन्मभूमि को लौट जा ॥ १४ । यह सुन राहेल और लेआ ने उस से कहा क्या हमारे पिता के घर में अब हमारा कुछ भाग वा अंश रहा है ॥ १५ । क्या हम उस के लेखे में उपरी नहीं ठहरीं देख उस ने हम को तो बेच डाला और हमारे रुपे को खा बैठा है ॥ १६ । सो परमेश्वर ने हमारे पिता का जितना धन छीन लिया है सो हमारा और हमारे लड़केबालों का है अब जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उस के करने में लग जा ॥ १७ । यह सुनके याकूब ने अपने लड़केबालों और स्त्रियों को ऊंटों पर चढ़ाया ॥ १८ । और जितने पशुओं को वह पद्दनराम में एकट्ठा कर करके धनाढ्य हो गया था सब को कनान में अपने पिता इसहाक के पास जाने की मनसा से साथ ले गया ॥ १९ । उस समय तो लाबान अपनी भेड़ बकरियों का रोआं कतरने के लिये चला गया था । और राहेल अपने पिता के गृहदेवताओं को चुरा ले गई ॥ २० । इस रीति याकूब लाबान अरामी के पास से चोरी से चला गया अर्थात् उस को न बताया कि मैं भागा जाता हूं ॥ २१ । जब वह अपना सब कुछ लेके भागा तब महानद के पार उतरके अपना मुंह गिलाद के पहाड़ी देश की ओर किया ॥

२२ । तीसरे दिन लाबान को समाचार मिला कि याकूब भाग गया है ॥ २३ । सो उस ने अपने भाइयों को साथ लेके उस का पीछा किया और उस का पीछा करते करते सात दिन के बीते पर गिलाद के पहाड़ी देश में उस को जा लिया ॥ २४ । तब परमेश्वर ने रात के स्वप्न में अरामी लाबान के पास आके कहा सावधान रह तू याकूब से न तो भला कहना और न बुरा ॥ २५ । याकूब तो अपना तंबू गिलाद नाम पहाड़ी देश में खड़ा किये पड़ा था और लाबान ने भी अपने भाइयों के साथ अपना तंबू उसी पहाड़ी देश में खड़ा किया ॥ २६ । सो जब लाबान ने याकूब से भेंट किई तब कहने लगा तू ने यह क्या किया कि मेरे पास से चोरी से चला आया और मेरी बेटियों को ऐसा ले आया जैसा कोई युद्ध में जीतकर बन्धुआ करके ले जावे ॥ २७ । तू क्यों चुपके से भागा आया और मुझ से बिना कुछ कहे मेरे पास से चोरी से चला आया नहीं तो मैं तुझे आनन्द के साथ मृदंग और बीणा बजवाते और गीत गवाते विदा करता ॥ २८ । तू ने तो मुझे इतना भी अवकाश न दिया कि मैं अपने बेटे बेटियों को चूमता तू ने जो यह किया सो मूर्खता से किया है ॥ २९ । तुम लोगों की हानि करने की शक्ति मेरे हाथ में तो है पर तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने मुझ से बीती हुई रात में कहा सावधान रह याकूब से न तो भला कहना और न बुरा ॥ ३० । भला तू अपने पिता के घर का बड़ा अभिलाषी होके चला आया तो चला आया पर मेरे देवताओं को तू क्यों चुरा ले आया है ॥ ३१ । याकूब ने लाबान को उत्तर दिया मैं यह सोचके डर गया था कि क्या जानिये लाबान अपनी बेटियों को मुझ से छीन ले ॥ ३२ । देख जिस किसी के पास तू अपने देवताओं को पावे सो जीता न बचेगा मेरे पास तेरा जो कुछ निकले सो भाईबंधुओं के साम्हने पहिचानके ले ले । उस समय तो याकूब को मालूम न था कि राहेल गृहदेवताओं को चुरा ले आई है ॥ ३३ । यह सुनके लाबान याकूब और लेआ और दोनों दासियों के तंबुओं में गया और कुछ न मिला तब लेआ के तंबू में से निकलके राहेल के तंबू में गया ॥ ३४ । राहेल तो गृहदेवताओं को ऊंट की काठी में रखके उन पर बैठी थी सो लाबान ने उस के सारे तंबू में टटोलने पर भी उन्हें न पाया ॥ ३५ । राहेल ने तो अपने पिता से कहा हे मेरे प्रभु इस से अप्रसन्न न हो कि मैं तेरे साम्हने नहीं उठी क्योंकि मैं स्त्रियों की रीति के अनुसार हूं । सो उस के ढूंढ़ ढाढ़ करने पर भी गृहदेवता उस को न मिले ॥ ३६ । तब याकूब क्रोधित होके लाबान से झगड़ने लगा और कहा मेरा क्या अपराध है मेरा क्या पाप है कि तू ने इतना तेहा करके मेरा पीछा

किया है ॥ ३७ । अब तू ने जो मेरी सारी सामग्री को टटोल दिया सो कह दे तुझ को अपने घर की सारी सामग्री में से क्या मिला कुछ मिला हो तो उस को यहां अपने और मेरे भाइयों के साम्हने रख दे और वे हम दोनों के बीच बिचार करें ॥ ३८ । इन बीस बरसों से मैं तेरे पास रहता हूं देख इन में न तो तेरी भेड़ बकरियों के गर्भ गिरे और न तेरे मेंढ़ों का मांस मैं ने कभी खाया ॥ ३९ । जो बनैले जन्तुओं से फाड़ा जाता उस को मैं तेरे पास न लाता था उस की हानि मैं ही उठाता था चाहे दिन को चोरी जाता चाहे रात को तू मेरे ही हाथ से उस को भर लेता था ॥ ४० । मेरी तो यह दशा थी कि दिन को तो घाम और रात को पाला मुझे सुखाये डालता था और मेरी आंखों को नींद दुर्लभ हो गई थी ॥ ४१ । बीस बरस तक मैं तेरे घर में रहा चौदह बरस तो मैं ने तेरी दोनों बेटियों के लिये और छः बरस तेरी भेड़ बकरियों के लिये सेवा किई और तू ने मेरी सेवा के फल को दस बार बदल डाला ॥ ४२ । इब्राहीम का परमेश्वर जिस को मेरा पिता इसहाक भी अपना परमेश्वर जानके उस का भय मानता है सो यदि मेरी ओर न होता तो निश्चय तू अब मुझे कूछे हाथ जाने देता मेरे दुःख और मेरे हाथों के परिश्रम को देखके परमेश्वर ने बीती हुई रात में तुझे दपटा ॥ ४३ । लाबान ने याकूब से कहा ये बेटियां तो मेरी ही हैं और ये पुत्र भी मेरे ही हैं और ये भेड़ बकरियां भी मेरी ही हैं और जो कुछ तुझे देख पड़ता है सो सब मेरा ही है और अब मैं अपनी इन बेटियों वा उन के सन्तान के लिये क्या कर सकता हूं ॥ ४४ । अब आ मैं और तू दोनों आपस में बाचा बांधें और वह मेरे और तेरे बीच साक्षी ठहरी रहे ॥ ४५ । यह सुन याकूब ने एक पत्थर लेके उस का खंभा खड़ा किया ॥ ४६ । फिर उस ने अपने भाईबंधुओं से कहा पत्थर बटोरो यह सुनके उन्हों ने पत्थर बटोरके एक ढेर लगाया और उन सभों ने वहीं ढेर के पास भोजन किया ॥ ४७ । उस ढेर का नाम लाबान ने तो यगर्सहदूता पर याकूब ने गलेद रक्खा ॥ ४८ । लाबान ने जो याकूब से कहा कि यह ढेर आज से मेरे और तेरे बीच साक्षी रहेगा इसी कारण उस का नाम गलेद रक्खा गया ॥ ४९ । और मिजपा भी जो उस का नाम पड़ा इस का कारण यह है कि लाबान ने याकूब से कहा जब हम एक दूसरे की आंखों की ओट रहेंगे तब यहोवा हमारे बीच में ताकता रहे ॥ ५० । यदि तू मेरी बेटियों को दुःख देवे अथवा उन से अधिक और स्त्रियां ब्याह ले तो हमारे साथ कोई मनुष्य तो न रहेगा पर देख मेरे तेरे बीच में परमेश्वर साक्षी रहेगा ॥ ५१ । फिर लाबान ने याकूब से कहा इस ढेर को देख और इस खंभे को भी देख मैं ने जो इन को अपने और तेरे बीच में खड़ा किया है ॥ ५२ । सो यह ढेर और यह खंभा दोनों इस बात के साक्षी रहें कि एक दूसरे की हानि करने की मनसा से न तो मैं इस ढेर को लांघके तेरे पास जाऊंगा न तू इस ढेर और इस खंभे को लांघके मेरे पास आवेगा ॥ ५३ । इब्राहीम और नाहोर और उन के पिता तीनों का जो परमेश्वर है सो हम दोनों के बीच न्याय करे । यह सुनके याकूब ने उस की किरिया खाई जिस का भय उस का पिता इसहाक मानता था ॥ ५४ । फिर याकूब ने उसी पहाड़ पर मेलबलि चढ़ाया और अपने भाईबन्धुओं को भोजन करने के लिये बुलाया सो उन्हों ने भोजन करके पहाड़ पर रात बिताई ॥ ५५ । बिहान को लाबान तड़के उठ अपने बेटे बेटियों को चूमके और आशीर्बाद देके चल दिया

३२. और अपने स्थान को लौट गया । और याकूब ने भी अपना मार्ग लिया और परमेश्वर के दूत उसे आ मिले ॥ २ । उन को देखते ही याकूब ने कहा यह तो परमेश्वर का लशकर है सो उस ने उस स्थान का नाम महनैम रक्खा ॥

(याकूब के एसाव से मिलने और उस के इस्राएल नाम रक्खे जाने का वर्णन.)

३ । फिर याकूब ने सेईर देश में जो एदोम देश भी कहावता है अपने भाई एसाव के पास अपने आगे दूत भेज दिये ॥ ४ । और उस ने उन्हें यह

आज्ञा दिई कि मेरे प्रभु एसाव से यों कहना कि तेरा दास याकूब तुझ से यों कहता है कि मैं लाबान के यहां परदेशी होके अब लों बिलसा रहा ॥ ५ । और इस बीच मेरे गाय बैल गदहे भेड़ बकरियां और दास दासियां हो गई हैं हे मेरे प्रभु मैं ने तेरे पास इस का सन्देशा इस लिये भेजा है कि तेरी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर होवे ॥ ६ । वे दूत याकूब के पास लौटके कहने लगे हम तेरे भाई एसाव के पास गये थे सो वह भी तुझ से भेंट करने को चार सौ पुरुष संग लिये हुए चला आता है ॥ ७ । यह सुनके याकूब निपट डर गया और संकट में पड़ा और यह सोचके अपने संगवालों के और भेड़ बकरियों गाय बैलों और ऊंटों के भी अलग अलग दो लशकर कर लिये ॥ ८ । कि यदि एसाव आके पहिले लशकर को मारने लगे तो दूसरा लशकर भागके बचेगा ॥ ९ । फिर याकूब ने कहा हे यहोवा हे मेरे दादा इब्राहीम के परमेश्वर हे मेरे पिता इसहाक के भी परमेश्वर तू ने तो मुझ से कहा कि अपने देश और जन्मभूमि में लौट जा और मैं तेरी भलाई करूंगा ॥ १० । हां तू ने जो जो काम अपनी करुणा और सच्चाई से मुझ अपने दास के साथ किये हैं कि मैं जो अपनी छड़ी ही लेके इस यर्दन नदी के पार उतर आया सो अब मेरे दो लशकर हो गये हैं तेरे ऐसे ऐसे कामों में से मैं एक के भी योग्य तो नहीं हूं ॥ ११ । तौभी मेरी बिनती सुनके मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से बचा मैं तो उस से डरता हूं कहीं ऐसा न होवे कि वह आके मुझे और मा समेत लड़कों को भी मार डाले ॥ १२ । तू ने तो मुझ से कहा है कि मैं निश्चय तेरी भलाई करूंगा और तेरे बंश को समुद्र की बालू के कनकों के समान बहुत करूंगा जो बहुतायत के मारे गिने नहीं जाते ॥ १३ । इतनी प्रार्थना करके याकूब ने उस दिन की रात वहीं बिताई और जो कुछ उस के पास था उस में से अपने भाई एसाव की भेंट के लिये छांट छांटके निकाला ॥ १४ । अर्थात् दो सौ बकरियां और बीस बकरे दो सौ भेड़ें और बीस मेंढे ॥ १५ । बच्चों समेत दूध देती हुई तीस ऊंटनियां चालीस गायें दस बैल बीस गदहियां और गदहियों के दस बच्चे ॥ १६ । इन को उस ने झुण्ड झुण्ड करके अपने दासों को सौंपके उन से कहा मेरे आगे बढ़ जाओ और झुण्डों के बीच बीच में अन्तर रक्खो ॥ १७ । फिर उस ने अगले झुण्ड के रखवाले को यह आज्ञा दिई कि जब मेरा भाई एसाव तुझे मिले और पूछने लगे कि तू किस का दास है और कहां जाता है और ये जो तेरे आगे हैं सो किस के हैं ॥ १८ । तब कहना कि तेरे दास याकूब के हैं हे मेरे प्रभु एसाव ये भेंट के लिये तेरे पास भेजे गये हैं और वह आप भी हमारे पीछे है ॥ १९ । और उस ने दूसरे और तीसरे रखवालों को भी बल्कि उन सभों को जो झुण्डों के पीछे पीछे थे ऐसी ही आज्ञा दिई कि जब एसाव तुम को मिले तब इसी प्रकार उस से कहना ॥ २० । और यह भी कहना कि तेरा दास याकूब हमारे पीछे है । याकूब ने यह सब उपाय ऐसा सोचके किया कि यह भेंट जो मेरे आगे आगे जाती है इस के द्वारा मैं उस के क्रोध को शान्त करके तब उस का दर्शन करूंगा क्या, जानिये वह मुझ से प्रसन्न होवे ॥ २१ । इस भांति वह भेंट याकूब से पहिले पार उतर गई और वह आप उस रात को छावनी में रहा ॥

२२ । फिर रात ही को वह उठके अपनी दोनों स्त्रियों और दोनों लौण्डियों और ग्यारहों लड़कों को संग लेके घाट से यब्बोक नदी के पार उतर गया ॥ २३ । जब उस ने उन्हें उस नदी के पार उतार दिया बल्कि अपना सब कुछ उतार दिया ॥ २४ । और आप अकेला रह गया तब कोई पुरुष आके उस से मल्लयुद्ध करने लगा और पह फटने लों करता रहा ॥ २५ । जब उस ने देखा कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता तब उस की जांघ की नस को छूआ सो याकूब की जांघ की नस उस से मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई ॥ २६ । तब उस ने कहा मुझे जाने दे क्योंकि पह फटती है याकूब ने कहा जब लों तू मुझे आशीर्वाद न देवे तब लों मैं तुझे जाने न दूंगा ॥ २७ । फिर उस ने याकूब से पूछा तेरा नाम क्या है उस ने कहा याकूब ॥ २८ । उस ने

कहा तेरा नाम अब याकूब न रहेगा इसाएल रक्खा गया है क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है ॥ २९ । याकूब ने कहा कृपा करके मुझे अपना नाम बता दे उस ने कहा तू मेरा नाम क्यों पूछता है यह कहके उस ने उस को वहीं आशीर्वाद दिया ॥ ३० । तब याकूब ने यह कहके उस स्थान का नाम पनीएल रक्खा कि परमेश्वर को आम्हने साम्हने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है ॥ ३१ । पनीएल के पास से चलते चलते याकूब को सूर्य्य उदय हो गया और वह जांघ से लंगड़ाता था ॥ ३२ । इसाएलबंशी जो पशुओं की जांघ की जोड़वाले जंघानस को आज के दिन लों नहीं खाते इस का यही कारण है कि उस पुरुष ने याकूब की जांघ की जोड़ में जंघानस को छूआ था ॥

३३ फिर याकूब ने जो आंखें उठाईं तो क्या देखा कि एसाव चार सौ पुरुष संग लिये हुए चला आता है यह देखके उस ने लड़केबालों को अलग अलग बांटके लेआ और राहेल और दोनों लौण्डियों को सौंप दिया ॥ २ । और सब के आगे तो लड़कों समेत लौण्डियों को उन के पीछे लड़कों समेत लेआ को और सब के पीछे राहेल और यूसुफ को करके ॥ ३ । वह आप उन सभों के आगे बढ़ा और सात बार भूमि पर गिर गिरके दण्डवत किई और इस प्रकार से अपने भाई के पास पहुंचा ॥ ४ । उसे देखके एसाव उस से भेंट करने को दौड़ा और उस को हृदय में लगा उस के गले से लिपटके उस को चूमा फिर वे दोनों रो उठे ॥ ५ । फिर उस ने आंखें उठाकर स्त्रियों और लड़केबालों को देखा और पूछा ये तेरे कौन हैं उस ने कहा ये मुझ तेरे दास के लड़के हैं जिन्हें परमेश्वर ने अनुग्रह करके मुझ को दिया है ॥ ६ । इतने में लड़कों समेत लौण्डियों ने निकट आके दण्डवत किई ॥ ७ । फिर लड़कों समेत लेआ निकट आई और उन्हों ने भी दण्डवत किई सब के पीछे यूसुफ और राहेल ने भी निकट आके दण्डवत किई ॥ ८ । फिर एसाव ने पूछा तेरा एक बड़ा लशकर जो मुझ को मिला उस का क्या प्रयोजन है उस ने कहा यह कि तुझ मेरे प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर होवे ॥ ९ । एसाव ने कहा हे भाई मेरे पास तो बहुत है जो कुछ तेरा है सो तेरा ही रहे ॥ १० । याकूब ने कहा नहीं नहीं यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो तो मेरी भेंट ग्रहण कर क्योंकि मैं ने जो तेरा दर्शन पाके मानो परमेश्वर का दर्शन पाया है और तू जो मुझ से प्रसन्न हुआ है इस लिये उचित है कि तू मेरी भेंट ग्रहण करे ॥ ११ । सो यह भेंट जो तुझे भेजी गई है कृपा करके ग्रहण कर क्योंकि परमेश्वर ने मुझ पर अनुग्रह किया है और जो कुछ मुझे चाहिये सो सब मेरे पास है । जब उस ने उस को इस भांति बिनती करके दबाया तब उस ने उस को ग्रहण किया ॥ १२ । फिर एसाव ने कहा आ हम बढ़ चलें और मैं तेरे आगे आगे चलूंगा ॥ १३ । याकूब ने कहा हे मेरे प्रभु तू तो जानता होगा कि मेरे साथ सुकुमार सुकुमार लड़के हैं और दूध देनेहारी भेड़ बकरियां और गायें भी हैं सो यदि ऐसे पशु एक दिन भी अधिक हांके जावें तो सब के सब मर जावेंगे ॥ १४ । सो हे मेरे प्रभु कृपा करके मुझ अपने दास के आगे बढ़ जा मैं भी इन पशुओं की शक्ति अनुसार जो मेरे आगे आगे चलते हैं और लड़केबालों की शक्ति अनुसार भी धीरे धीरे चलके अन्त को तुझ अपने प्रभु के पास सेईर में पहुंचूंगा ॥ १५ । एसाव ने कहा भला तो तेरी इच्छा हो तो अपने संगवालों में से मैं कई एक तेरे साथ छोड़ जाऊं । उस ने कहा तू ऐसा क्यों करे इतना ही बहुत है कि तुझ मेरे प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे ॥ १६ । यह सुनके एसाव ने उसी दिन सेईर को लौट जाने के लिये अपना मार्ग लिया ॥ १७ । और याकूब वहां से कूंच करके सुक्कोत को गया और वहां अपने लिये एक घर और पशुओं के लिये झोंपड़े भी बनाये इसी कारण उस स्थान का नाम सुक्कोत पड़ा ॥

१८ । पीछे याकूब जो पद्दनराम से आया था सो कनान देश के शकेम नाम नगर के पास कुशल क्षेम से पहुंचा और उसी नगर के साम्हने डेरे खड़े किये ॥

१९। और भूमि के जिस खण्ड पर उस ने अपना तंबू खड़ा किया उस को उस ने शकेम के पिता हमोर के पुत्रों के हाथ से एक सौ कसीतों में मोल लिया ॥ २०। और वहां उस ने एक बेदी बनाके उस का नाम एलेलोहे इस्राएल रक्खा ॥

(दीना के भ्रष्ट किये जाने का वर्णन।)

३४. इस के पीछे एक दिन लेआ की बेटी दीना जिसे वह याकूब की जन्माई जनी थी सो उस देश की लड़कियों से भेंट करने को निकली ॥ २। तब उस देश के प्रधान हिव्वी हमोर के पुत्र शकेम ने उसे देखा और उसे ले जाकर उस के साथ कुकर्म्म करके उस को भ्रष्ट कर डाला ॥ ३। तब उस का जी जो याकूब की बेटी दीना से अटक गया इस से उस ने उस कन्या से प्रीति की बातें कह कहके उस को धीरज बंधाया ॥ ४। और शकेम ने अपने पिता हमोर से कहा मुझे इस लड़की को मेरी स्त्री होने के लिये दिला दे ॥ ५। इतने में याकूब ने सुना तो सही कि शकेम ने मेरी बेटी दीना को अशुद्ध कर डाला है पर उस के पुत्र जो उस समय पशुओं के संग चौगान में थे सो वह उन के आने लों चुप रहा ॥ ६। इधर तो शकेम का पिता हमोर निकलके याकूब से बात चीत करने को उस के पास गया ॥ ७। और उधर याकूब के पुत्र सुनते ही चौगान से निपट उदास और अति क्रोधित होके आये क्योंकि शकेम ने जो याकूब की बेटी के साथ कुकर्म्म किया सो इस्राएल के घराने से मूर्खता का ऐसा काम किया था जिस का करना अनुचित है ॥ ८। हमोर ने उन सभों से कहा मेरे पुत्र शकेम का मन तुम्हारी बेटी पर बहुत लगा है सो कृपा करके उसे उस की स्त्री होने के लिये उस को दे देओ ॥ ९। और आपनी बेटियां हम को दिया करो और हमारी बेटियों को आप अपने लिये लिया करो इस रीति समधी होके ॥ १०। हमारे संग बसे रहो और यह देश देखो तुम्हारे सामने पड़ा है सो इस में बास करके लेन देन करो और इस में की भूमि भी निज कर लिया करो ॥ ११। फिर शकेम ने भी दीना के पिता और भाइयों से कहा यदि मुझ पर तुम लोगों की अनुग्रह की दृष्टि होवे तो जो कुछ तुम मुझ से कहो सो मैं दूंगा ॥ १२। तुम मुझ से दीना के लिये कितना ही मूल्य अथवा बदला क्यों न मांगो तौभी मैं तुम्हारे कहे के अनुसार ही दूंगा इतना हो कि मुझे उस कन्या को मेरी स्त्री होने के लिये दो ॥ १३। तब यह सोचके कि शकेम ने हमारी बहिन दीना को अशुद्ध किया है याकूब के पुत्रों ने शकेम और उस के पिता हमोर को छल के साथ यह उत्तर दिया कि ॥ १४। हम ऐसा काम नहीं कर सकते कि किसी खतनारहित पुरुष को अपनी बहिन दें क्योंकि इस से हमारी नामधराई होगी ॥ १५। हां इस बात पर तो हम तुम्हारी मान लेंगे कि हमारी नाईं तुम में से एक एक पुरुष का भी खतना किया जावे ॥ १६। उस दशा में तो हम अपनी बेटियां तुम्हें ब्याह देंगे और तुम्हारी बेटियां ब्याह लेंगे और तुम्हारे संग बसे भी रहेंगे और इस रीति हम दोनों एक ही समुदाय के मनुष्य हो जावेंगे ॥ १७। पर यदि तुम हमारी मानके अपना खतना न कराओ तो हम अपनी लड़की को लेके चले जावेंगे ॥ १८। उन की इस बात पर हमोर और उस का पुत्र शकेम प्रसन्न हुए ॥ १९। और वह जवान जो याकूब की बेटी को बहुत चाहता था इस से उस ने वैसा करने में बिलम्ब न किया ॥ २०। जानना चाहिये कि वह अपने पिता के सारे घराने में से अधिक प्रतिष्ठित था। सो हमोर और उस का पुत्र शकेम अपने नगर के फाटक के निकट जाके नगरबासियों को यों समझाने लगे कि ॥ २१। वे मनुष्य तो हमारे संग मेल से रहने चाहते हैं सो उन्हें इस देश में रहके लेन देन करने दो देखो यह देश तो बहुत लम्बा चौड़ा होने से उन के और हमारे लिये बहुत है फिर हम लोग उन की बेटियों को ब्याह लें और अपनी बेटियों को उन्हें दिया करें ॥ २२। हां वे मनुष्य केवल इसी शर्त पर हमारे संग रहने और एक ही समुदाय के मनुष्य हो

जाने को प्रसन्न हैं कि उन की नाईं हमारे सब पुरुषों का भी खतना किया जावे ॥ २३। सोचने की बात है कि उन की भेड़ बकरियां गाय बैल निदान उन के सारे पशु और धनसंपत्ति हमारे हो जावेंगे इतना ही हो कि अब हम लोग उन की मान लें तो वे हमारे संग रहेंगे ॥ २४। ऐसी ऐसी बातें सुन सुनके जितने उस नगर के फाटक से निकलते थे उन सभों ने हमोर की और उस के पुत्र शकेम की मानी और जितने पुरुष उस नगर के फाटक से निकलते थे सब का खतना किया गया ॥ २५। तीसरे दिन जब वे लोग पीड़ित पड़े थे तब शिमोन और लेवी नाम याकूब के दो पुत्रों ने जो दीना के भाई थे अपनी अपनी तलवार ले उस नगर में निधड़क घुसके सब पुरुषों को घात किया ॥ २६। और उन में से हमोर और उस के पुत्र शकेम को भी उन्हों ने तलवार से मार डाला और दीना को शकेम के घर में से निकाल ले गये ॥ २७। फिर याकूब के उन पुत्रों ने घात कर डालने पर भी चढ़के नगर को इस लिये लूट लिया कि उस में उन की बहिन अशुद्ध किई गई थी ॥ २८। अर्थात् वे घात किये हुओं की भेड़ बकरी गाय बैल और गदहे और नगर और चौगान दोनों में ॥ २९। उन का जितना धन था उस को और उन के बाल बच्चों और स्त्रियों को भी हर ले गये बल्कि घर घर में जो कुछ था उस को भी उन्हों ने लूट लिया ॥ ३०। यह हाल सुनके याकूब ने शिमोन और लेवी से कहा तुम ने जो इस देश के निवासी कनानियों और परिज्जियों के मन में मुझ से घिन कराई है इस से तुम ने मुझे संकट में डाला है क्योंकि मेरे साथ तो थोड़े ही लोग हैं सो अब वे एकट्ठे होके मुझ पर चढ़ेंगे और मुझे मार लेंगे सो मैं अपने घराने समेत उच्छिन्न हो जाऊंगा ॥ ३१। उन्हों ने कहा क्या हम अपनी बहिन पर वेश्या का सा अत्याचार होते देख सकते थे ॥

(बिन्यामीन की उत्पत्ति और राहेल की मृत्यु का वर्णन।)

३५. फिर परमेश्वर ने याकूब से कहा यहां से कूंच करके बेतेल को जा और वहीं रह और वहां मेरी एक बेदी बना में तो वही ईश्वर हूं जिस ने तुझे उस समय दर्शन दिया जब तू अपने भाई एसाव के डर से भागा जाता था ॥ २। यह आज्ञा पाके याकूब ने अपने घराने से और उन सब से भी जो उस के संग थे कहा तुम्हारे बीच में जो पराये देवता हैं सो निकाल फेंको और अपने अपने को शुद्ध करो और अपने वस्त्र बदल डालो ॥ ३। और आओ हम यहां से कूंच करके बेतेल को जावें वहां मैं उस ईश्वर की एक बेदी बनाऊंगा जिस ने संकट के दिन मेरी सुन लिई और जिस मार्ग से मैं चलता था उस में मेरे संग संग रहा ॥ ४। यह सुनके उन्हों ने पराये देवताओं की जितनी मूर्त्तियां उन के पास थीं और जो कुण्डलियां उन के कानों में थीं सो भी याकूब को दिईं और उस ने उन को उस बांज बृक्ष के नीचे जो शकेम के पास है गाड़ दिया ॥ ५। तब उन्हों ने कूंच कर दिया और उन को चारों ओर के नगरनिवासियों के मन में परमेश्वर की ओर से ऐसा भय समा गया कि उन्हों ने याकूब के पुत्रों का पीछा न किया ॥ ६। इस रीति याकूब उन सब समेत जो उस के संग थे कनान देश के लूज नगर को आया। वह नगर बेतेल भी कहावता है ॥ ७। वहां उस ने एक बेदी बनाई और उस स्थान का नाम एलबेतेल रक्खा क्योंकि जब वह अपने भाई के डर से भागा जाता था तब परमेश्वर उस को वहीं प्रगट हुआ था ॥ ८। उन दिनों रिबका की दूध पिलानेहारी धाई दबोरा मर गई और बेतेल के नीचे के बांज बृक्ष के तले उस को मिट्टी दिई गई और याकूब ने उस बांज का नाम अल्लोनबक्कूत रक्खा ॥

९। फिर याकूब के पद्दनराम से आने के पीछे परमेश्वर ने दूसरी बार उस को दर्शन देके आशीष दिई ॥ १०। और परमेश्वर ने उस से कहा अब लों तो तेरा नाम याकूब है पर आगे को तेरा नाम याकूब न रहेगा तू इस्राएल कहावेगा। इसी प्रकार उस ने उस का नाम इस्राएल रक्खा ॥ ११। फिर परमेश्वर ने उस से कहा मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूं तू फूले फले और बढ़े और तुझ से एक जाति बल्कि जातियों की एक मण्डली भी उत्पन्न होवे और तेरे

बंश में राजा उत्पन्न होवें ॥ १२ । और जो देश मैं ने इब्राहीम और इसहाक को दिया है वही देश तुझे देता हूं और तेरे पीछे तेरे बंश को भी देऊंगा ॥ १३ । इतना कह परमेश्वर उस स्थान में जहां उस ने याकूब से बातें किईं उस के पास से ऊपर चढ़ गया ॥ १४ । और जिस स्थान में परमेश्वर ने याकूब से बातें किईं उसी में याकूब ने पत्थर का एक खंभा खड़ा किया और उस पर अर्घ देके तेल डाल दिया ॥ १५ । और जहां परमेश्वर ने याकूब से बातें किईं उस स्थान का नाम उस ने बेतेल रक्खा ॥ १६ । फिर उन्हों ने बेतेल से कूंच किया और जब उन्हें एफ्राता को पहुंचने में थोड़ी ही दूर रंह गई तब राहेल को जनने की बड़ी पीरें आने लगीं ॥ १७ । जब उस को बड़ी बड़ी पीरें उठती थीं तब जनाई धाई ने उस से कहा मत डर अब की बेर भी तेरे बेटा ही होवेगा ॥ १८ । तब वह मर गई और प्राण निकलते निकलते उस ने तो उस बेटे का नाम बेनोनी रक्खा पर उस के पिता ने उस का नाम बिन्यामीन रक्खा ॥ १९ । यों राहेल मर गई और एफ्राता जो बेतलेहेम भी कहावता है तिस के मार्ग में उस को मिट्टी दिई गई ॥ २० । और याकूब ने उस की कबर पर एक खंभा खड़ा किया राहेल की कबर का वही खंभा आज लों बना है ॥ २१ । फिर इस्राएल ने कूंच किया और एदेर नाम गुम्मट के आगे बढ़के अपना तंबू खड़ा किया ॥ २२ । जब इस्राएल उस देश में बसा था तब एक दिन रूबेन ने जाके अपने पिता की सुरैतिन बिल्हा के साथ कुकर्म्म किया और यह बात इस्राएल के सुनने में आई ॥

२३ । याकूब के बारह पुत्र हुए । उन में से लेआ के तो पुत्र ये हुए अर्थात् याकूब का जेठा रूबेन फिर शिमोन लेवी यहूदा इस्साकार और जबूलून ॥ २४ । और राहेल के पुत्र ये हुए अर्थात् यूसुफ और बिन्यामीन ॥ २५ । और राहेल की लौण्डी बिल्हा के पुत्र ये हुए अर्थात् दान और नप्ताली ॥ २६ । और लेआ की लौण्डी जिल्पा के पुत्र ये हुए अर्थात् गाद और आशेर याकूब के ये ही पुत्र हुए जो उस से पद्दनराम में जन्मे ॥

२७ । निदान याकूब किर्यतर्बा के पासवाले ममरे में अपने पिता इसहाक के पास आया वह स्थान हेब्रोन भी कहावता है और वहीं इब्राहीम और इसहाक परदेशी होके रहे थे ॥ २८ । इसहाक की अवस्था तो एक सौ अस्सी बरस की हुई ॥ २९ । निदान इसहाक का पुरनिया और दीर्घायु होने पर प्राण छूट गया और वह अपने लोगों में जा मिला और उस के पुत्र एसाव और याकूब ने उस को मिट्टी दिई ॥

(एसाव की बंशावली ।)

३६ एसाव जो एदोम भी कहावता है तिस की यह बंशावली है ॥ २ । एसाव ने तो कनानी लड़कियां ब्याह लिईं अर्थात् हित्ती एलोन की बेटी आदा को और ओहोलीबामा को जो अना की बेटी और हिव्वी सिबोन की नतिनी थी ॥ ३ । फिर उस ने इश्माएल की बेटी बासमत को भी जो नबायोत की बहिन थी ब्याह लिया ॥ ४ । आदा तो एसाव के जन्माये एलीपज को और बासमत रूएल को जनी ॥ ५ । और ओहोलीबामा यूश यालाम और कोरह को जनी एसाव के ये ही पुत्र कनान देश में जन्मे ॥ ६ । पीछे एसाव अपनी स्त्रियों और बेटों बेटियों बल्कि घर के सब प्राणियों और अपनी भेड़ बकरी गाय बैल आदि सब पशुओं निदान अपनी सारी संपत्ति को जो उस ने कनान देश में संचय किई थी लेके अपने भाई याकूब के पास से दूसरे देश को चला गया ॥ ७ । क्योंकि उन की संपत्ति इतनी हो गई थी कि वे एकट्ठे न रह सके और पशुओं की बहुतायत के मारे उस देश में जहां वे परदेशी होके रहते थे उन की समाई न रही ॥ ८ । यों एसाव जो एदोम भी कहावता है सो सेईर नाम पहाड़ी देश में रहने लगा ॥ ९ । सेईर नाम पहाड़ी देश में रहनेहारे एदोमियों के मूलपुरुष एसाव की बंशावली यह है ॥ १० । एसाव के पुत्रों के नाम ये हैं अर्थात् एसाव की स्त्री आदा का पुत्र एलीपज और उसी एसाव की स्त्री बासमत का पुत्र रूएल ॥ ११ । और एलीपज के ये पुत्र हुए अर्थात् तेमान ओमार सपो गाताम और कनज ॥ १२ । और एसाव के पुत्र एलीपज के तिम्ना नाम एक सुरैतिन थी जो एलीपज

के जन्माये अमालेक को जनी एसाव की स्त्री आदा के बंश में ये ही हुए ॥ १३ । और रूएल के ये पुत्र हुए अर्थात् नहत जेरह शम्मा और मिज्जा एसाव की स्त्री बासमत के बंश में ये ही हुए ॥ १४ । और ओहोलीबामा जो एसाव की स्त्री और सिबोन की नतिनी और अना की बेटी थी तिस के ये पुत्र हुए अर्थात् वह एसाव के जन्माये यूश यालाम और कोरह को जनी ॥ १५ । एसाववंशियों के अधिपति ये हुए अर्थात् एसाव के जेठे एलीपज के बंश में से तो तेमान अधिपति ओमार अधिपति सपो अधिपति कनज अधिपति ॥ १६ । कोरह अधिपति गाताम अधिपति अमालेक अधिपति एलीपजबंशियों में से एदोम देश में ये ही अधिपति हुए और ये ही आदा के बंश में हुए ॥ १७ । और एसाव के पुत्र रूएल के बंश में ये हुए अर्थात् नहत अधिपति जेरह अधिपति शम्मा अधिपति मिज्जा अधिपति रूएलबंशियों में से एदोम देश में ये ही अधिपति भये और ये ही एसाव की स्त्री बासमत के बंश में हुए ॥ १८ । और एसाव की स्त्री ओहोलीबामा के बंश में ये हुए अर्थात् यूश अधिपति यालाम अधिपति कोरह अधिपति अना की बेटी ओहोलीबामा जो एसाव की स्त्री थी तिस के बंश में ये ही हुए ॥ १९ । एसाव जो एदोम भी कहावता है तिस के बंश ये ही हैं और उन के अधिपति भी ये ही हुए ॥

२० । सेईर जो होरी नाम जाति का था तिस के ये पुत्र उस देश में पहिले से रहते थे अर्थात् लोतान शोबाल सिबोन अना ॥ २१ । दीशोन एसेर और दीशान एदोम देश में सेईर के ये ही होरी जातिवाले अधिपति हुए ॥ २२ । और लोतान के पुत्र होरी और हेमाम भये और लोतान की बहिन तिम्ना थी ॥ २३ । और शोबाल के ये पुत्र हुए अर्थात् अल्वान मानहत एबाल शपो और ओनाम ॥ २४ । और सिबोन के ये पुत्र हुए अर्थात् अय्या और अना यह वही अना है जिस को बन में अपने पिता सिबोन के गदहों को चराते चराते तप्तकुण्ड मिले ॥ २५ । और अना के दीशोन नाम पुत्र हुआ और उसी अना के ओहोलीबामा नाम बेटी हुई ॥ २६ । और दीशोन के ये पुत्र हुए अर्थात् हेमदान एश्बान यित्रान और करान ॥ २७ । एसेर के ये पुत्र हुए अर्थात् बिल्हान जावान और अकान ॥ २८ । दीशान के ये पुत्र हुए अर्थात् ऊस और अरान ॥ २९ । होरियों के अधिपति ये हुए अर्थात् लोतान अधिपति शोबाल अधिपति सिबोन अधिपति अना अधिपति ॥ ३० । दीशोन अधिपति एसेर अधिपति दीशान अधिपति सेईर देश में होरी जातिवाले ये ही अधिपति हुए ॥

३१ । फिर जब इस्राएलबंशियों पर किसी राजा ने राज्य न किया था तब भी एदोम के देश में ये राजा हुए अर्थात् ॥ ३२ । बेर के पुत्र बेला ने एदोम में राज्य किया और उस की राजधानी का नाम दिन्हाबा है ॥ ३३ । बेला के मरने पर बोसानिवासी जेरह का पुत्र योबाब उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ३४ । और योबाब के मरने पर तेमानियों के देश का निवासी हूशाम उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ३५ । फिर हूशाम के मरने पर बदद का पुत्र हदद उस के स्थान पर राजा हुआ यह वही है जिस ने मिद्यानियों को मोआब के देश में मार लिया और उस की राजधानी का नाम अवीत है ॥ ३६ । और हदद के मरने पर मसेकाबासी सम्ला उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ३७ । फिर सम्ला के मरने पर शाऊल जो महानद के तटवाले रहोबोत नगर का था सो उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ३८ । और शाऊल के मरने पर अकबोर का पुत्र बाल्हानान उस के स्थान पर राजा हुआ ॥ ३९ । और अकबोर के पुत्र बाल्हानान के मरने पर हदर उस के स्थान पर राजा हुआ और उस की राजधानी का नाम पाऊ है और उस की स्त्री का नाम महेतबेल है जो मेजाहाब की नतिनी और मत्रेद की बेटी थी ॥ ४० । फिर एसाववंशियों के अधिपतियों के कुलों और स्थानों के अनुसार उन के नाम ये हैं अर्थात् तिम्ना अधिपति अल्वा अधिपति यतेत अधिपति ॥ ४१ । ओहोलीबामा अधिपति एला अधिपति पीनोन अधिपति ॥ ४२ । कनज अधिपति तेमान अधिपति मिबसार अधिपति ॥ ४३ । मग्दीएल अधिपति ईराम अधिपति । एदोमबंशियों ने जो देश अपना कर लिया था उस के निवासस्थानों में उन के ये ही अधिपति हुए । और एदोमी जाति का मूलपुरुष एसाव है ॥

(यूसुफ के बेचे जाने का वर्णन.)

३७. याकूब तो उसी कनान देश में रहता था जिस में उस का पिता परदेशी होके रहा था ॥ २ । और याकूब के वंश का वृत्तान्त यह है कि यूसुफ सत्तरह बरस का होके अपने भाइयों के संग भेड़ बकरियों को चराने लगा और वह लड़का यूसुफ जो अपने पिता की स्त्री बिल्हा और जिल्पा के पुत्रों के संग रहा करता था सो उन की बुराइयों का समाचार उन के पिता के पास पहुंचाया करता था ॥ ३ । यूसुफ जो इस्राएल के बुढ़ापे का पुत्र था इस से वह अपने सब पुत्रों से अधिक उसी से प्रीति रखता था और उस के लिये रंगबिरंगा अंगरखा बनवाया ॥ ४ । सो जब उस के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता हम सब भाइयों से अधिक उसी से प्रीति रखता है तब उन्हों ने उस से बैर किया और उस के साथ मेल की बातें न कर सकते थे ॥ ५ । उन दिनों यूसुफ ने एक स्वप्न देखके अपने भाइयों से उस का वर्णन किया उन्हों ने उसे सुनके उस से और भी अधिक बैर किया ॥ ६ । अर्थात् उस ने उन से कहा कृपा करके सुनो कि मैं ने क्या स्वप्न देखा है ॥ ७ । मानो क्या देखता हूं कि हम लोग चौगान में पूले बांध रहे हैं फिर क्या देखा कि मेरा पूला उठके खड़ा हो गया फिर क्या हुआ कि तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को घेरके उसे दण्डवत किया ॥ ८ । यह सुनके उस के भाइयों ने उस से कहा क्या सचमुच तू हमारे ऊपर राज्य करेगा अथवा सचमुच तू हम पर प्रभुता करेगा सो उन्हों ने उस के स्वप्नों और उस की बातों के कारण उस से और भी अधिक बैर किया ॥ ९ । फिर उस ने एक और स्वप्न देखा और अपने भाइयों से उस का भी यों वर्णन किया कि सुनो मैं ने एक और स्वप्न देखा है कि सूर्य्य और चन्द्रमा और ग्यारह तारे मुझे दण्डवत कर रहे हैं ॥ १० । यह स्वप्न उस ने अपने पिता और भाइयों दोनों से वर्णन किया तब उस के पिता ने उस को डपटके कहा यह कैसा स्वप्न है जो तू ने देखा है क्या सचमुच मैं और तेरी माता और तेरे भाई सब जाकर तेरे आगे भूमि पर गिरके दण्डवत करेंगे ॥ ११ । उस के भाई तो उस से डाह रखते थे पर उस के पिता ने उस के उस बचन को स्मरण रक्खा ॥ १२ । पीछे उस के भाई अपने पिता की भेड़ बकरियों को चराने के लिये शकेम को गये ॥ १३ । तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा तेरे भाई तो शकेम में चरा रहे होंगे सो जा मैं तुझे उन के पास भेजता हूं उस ने कहा जो आज्ञा ॥ १४ । उस ने उस से कहा जा अपने भाइयों और भेड़ बकरियों का हाल देखके मेरे पास समाचार ले आ यह कहके उस ने उस को हेब्रोन के खड्ड में बिदा कर दिया और वह जाके शकेम के पास पहुंचा था ॥ १५ । कि किसी जन ने उस को चौगान में भ्रमते हुए पाके उस से पूछा तू क्या ढूंढ़ता है ॥ १६ । उस ने कहा मैं तो अपने भाइयों को ढूंढ़ता हूं कृपा करके मुझे बता कि वे कहां चरा रहे हैं ॥ १७ । उस जन ने कहा वे तो यहां से चले गये हैं और मैं ने उन को यह कहते सुना कि आओ हम दोतान को चलें इतना सुनके यूसुफ अपने भाइयों के पास चला और उन्हें दोतान में पाया ॥ १८ । जब उन्हों ने उस को आते दूर से देखा तब उस के निकट आने से पहिले उसे मार डालने को छल की युक्ति बिचारने लगे ॥ १९ । अर्थात् वे आपस में कहने लगे देखो वह स्वप्न देखनेहारा आ रहा है ॥ २० । सो आओ हम उस को घात करके किसी गड़हे में डाल देवें तब कहेंगे कि कोई दुष्ट जन्तु उस को खा गया फिर देखेंगे कि उस के स्वप्नों का क्या फल होता है ॥ २१ । यह सुनके रूबेन ने उस को उन के हाथ से बचाने की मनसा से कहा हम उस को प्राण से तो न मारें ॥ २२ । फिर रूबेन ने उन से कहा उस का लोहू तो मत बहाओ हां उस को बन के उस गड़हे में डाल तो दो पर उस पर हाथ मत उठाओ यह बात उस ने इस मतलब से कही कि उस को उन के हाथ से छुड़ाके पिता के पास फिर पहुंचावे ॥ २३ । सो जब यूसुफ अपने भाइयों के पास पहुंच गया तब उन्हों ने उस का

अंगरखा जो वह रंगबिरंगा पहिने था उतार लिया ॥ २४ । और यूसुफ को उठाके एक गड़हे में डाल दिया गड़हा तो सूखा था उस में कुछ भी जल न था ॥ २५ । ऐसा करके वे रोटी खाने को बैठ गये और जो आंखें उठाईं तो क्या देखा कि इश्माएलियों का एक दल ऊंटों पर सुगन्धद्रव्य बलसान और गन्धरस लादे हुए गिलाद से मिस्र को चला जा रहा है ॥ २६ । उसे देखके यहूदा ने अपने भाइयों से कहा अपने भाई को घात करने और उस का खून छिपाने से क्या लाभ होगा ॥ २७ । आओ हम उसे उन इश्माएलियों के हाथ बेच डालें और अपना हाथ उस पर न उठावें क्योंकि भाई तो अपना हाड़ ही मांस है यह सुनके उस के भाइयों ने उस की मानी ॥ २८ । इतने में वे मिद्यानी व्योपारी लोग उधर से होके पहुंचे सो यूसुफ के भाइयों ने उस को उस गड़हे में से खींचके निकाला और इश्माएलियों के हाथ रूपे के बीस टुकड़ों में बेच दिया और वे यूसुफ को मिस्र में ले गये ॥ २९ । पीछे रूबेन ने गड़हे पर लौटके क्या देखा कि यूसुफ गड़हे में नहीं है सो उस ने अपने बस्त्र फाड़े ॥ ३० । अपने भाइयों के पास लौटके कहा लड़का तो नहीं है अब मैं किधर जाऊं ॥ ३१ । फिर उन्हों ने यूसुफ का अंगरखा ले एक बकरे को बध करके उस को उस के लोहू में बोड़ दिया ॥ ३२ । और उस रंगबिरंगे अंगरखे को अपने पिता के पास भेजके कहला दिया कि यह हम को मिला है सो देखके पहिचान ले कि तेरे पुत्र का अंगरखा है कि नहीं ॥ ३३ । उस ने उस को पहिचान लिया और कहा हां मेरे पुत्र ही का तो अंगरखा है किसी दुष्ट जन्तु ने उस को खा लिया होगा निःसन्देह यूसुफ फाड़ डाला गया होगा ॥ ३४ । इतना कह याकूब ने अपने बस्त्र फाड़के कटि में टाट पहिना और अपने पुत्र के लिये बहुत दिन लों बिलाप करता रहा ॥ ३५ । यह देखके उस के सब बेटों बेटियों ने उस को शांति देने का यत्न तो किया पर उस को शांति आई ही नहीं और वह कहता रहा नहीं नहीं मैं तो बिलाप करता हुआ अपने पुत्र के पास अधोलोक में उतर जाऊंगा इस भांति उस का पिता उस के लिये रोता रहा ॥ ३६ । फिर मिद्यानियों ने यूसुफ को मिस्र में ले जाके पोतीपर नाम फिरौन के एक खोजे और जल्लादों के प्रधान के हाथ बेच डाला ॥

(यहूदा के पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन.)

३८. उन्हीं दिनों में यहूदा अपने भाइयों के पास से चला गया और जाते जाते हीरा नाम एक अदुल्लामवासी पुरुष के पास डेरा किया ॥ २ । वहां यहूदा ने शू नाम एक कनानी पुरुष की बेटी को देखा और उस को ब्याहके उस के पास गया ॥ ३ । वह गर्भवती होके एक पुत्र जनी और यहूदा ने उस का नाम एर रक्खा ॥ ४ । और वह फिर गर्भवती होके एक पुत्र और जनी और उस का नाम ओनान रक्खा ॥ ५ । फिर वह एक पुत्र और जनी और उस का नाम शेला रक्खा और जिस समय वह इस को जनी उस समय यहूदा कजीब में रहता था ॥ ६ । जब यहूदा का जेठा एर सियाना हुआ तब उस ने तामार नाम एक स्त्री से उस का बिवाह तो कर दिया ॥ ७ । पर यहूदा का वह जेठा एर जो यहोवा के लेखे में दुष्ट था इस लिये यहोवा ने उस को मार डाला ॥ ८ । यह देखके यहूदा ने ओनान से कहा अपनी भौजाई के पास जा और उस के साथ देवर का धर्म्म करके अपने भाई के लिये सन्तान जन्मा ॥ ९ । ओनान तो जानता था कि सन्तान मेरा न ठहरेगा सो जब वह अपनी भौजाई के पास गया तब उस ने भूमि पर स्खलित करके नष्ट किया न हो कि उस को अपने भाई के लिये सन्तान उत्पन्न करना पड़े ॥ १० । यह जो काम उस ने किया सो यहोवा को बुरा लगा सो उस ने उस को भी मार डाला ॥ ११ । यह हाल देखके यहूदा ने इस डर के मारे कि कहीं ऐसा न हो कि अपने भाइयों की नाईं शेला भी मरे अपनी बहू तामार से कहा जब लों मेरा पुत्र शेला समर्थ न होवे तब लों अपने पिता के घर में बिधवा ही बैठी रह सो तामार जाके अपने पिता के घर में बैठी रही ॥ १२ । बहुत

दिन के बीतने पर यहूदा की स्त्री जो शू की बेटी थी सो मर गई फिर यहूदा शोक से छूटके अपने मित्र हीरा अदुल्लामवासी समेत तिम्ना को अपनी भेड़ बकरियों का रोआं कतराने के लिये गया ॥ १३ । जब तामार को यह समाचार मिला कि तेरा ससुर तिम्ना को अपनी भेड़ बकरियों का रोआं कतराने के लिये जा रहा है ॥ १४ । तब उस ने यह सोचके कि शेला समर्थ तो हुआ है पर मैं उस को स्त्री नहीं होने पाई अपना बिधवापन का पहिरावा उतारा और बुर्का डालके अपने को ढांप लिया और एनैम नगर के फाटक के पास जो तिम्ना के मार्ग में है जा बैठी ॥ १५ । उस को देखके यहूदा ने बेश्या समझा क्योंकि वह अपना मुंह ढांपे हुए थी ॥ १६ । सो उस ने उसे अपनी बहू न जानकर मार्ग ही में उस की ओर फिरके कहा कृपा करके मुझे अपने पास आने दे उस ने कहा मैं तुझ को अपने पास आने देऊं तो तू मुझे क्या देगा ॥ १७ । उस ने कहा मैं अपनी भेड़ बकरियों में से बकरी का एक बच्चा तेरे पास भेज दूंगा फिर उस ने कहा भला उस के भेजने लों क्या तू मेरे पास बन्धक रख जावेगा ॥ १८ । उस ने पूछा मैं कौन सा बन्धक तेरे पास रख जाऊं उस ने कहा अपनी वह छांप और डोरी और अपने हाथ की छड़ी दे दे यह सुनके उस ने उस को ये वस्तें दिईं तब वह उस के पास गया और वह उस से गर्भवती हुई ॥ १९ । फिर वह उठके चली गई और अपना बुर्का उतारके अपना बिधवापन का पहिरावा फिर पहिन रही ॥ २० । तब यहूदा ने बकरी का एक बच्चा अपने मित्र उस अदुल्लामवासी के हाथ भेज दिया कि वह बंधक को उस स्त्री के हाथ से छुड़ा ले आवे और उस को न पाके ॥ २१ । उस ने वहां के लोगों से पूछा कि वह देवदासी कहां है जो एनैम में मार्ग की एक ओर बैठी थी उन्हों ने कहा यहां तो कोई देवदासी न थी ॥ २२ । सो उस ने यहूदा के पास लौटके कहा मुझे तो वह नहीं मिली बल्कि उस स्थान के लोगों ने भी कहा कि यहां तो कोई देवदासी न रही ॥ २३ । यह सुनके यहूदा ने कहा अच्छा वह बंधक उसी के पास रहने दे नहीं तो हम लोग तुच्छ गिने जावेंगे देख मैं ने बकरी का यह बच्चा भेज तो दिया पर वह तुझे नहीं मिली ॥ २४ । तीन महीने के पीछे यहूदा को यह समाचार मिला कि तेरी बहू ने व्यभिचार किया बल्कि वह व्यभिचार से गर्भवती भी हुई यह सुनके यहूदा ने कहा उस को बाहर ले आओ कि वह जलाई जावे ॥ २५ । जब उसे निकाल रहे थे तब उस ने अपने ससुर के पास कहला भेजा कि जिस पुरुष की ये वस्तें हैं उसी से मैं गर्भवती हूं फिर उस ने यह भी कहलाया कि पहिचान तो सही कि यह छाप और डोरी और छड़ी किस की हैं ॥ २६ । यहूदा ने उन्हें पहिचानके कहा वह तो मुझ से कम दोषी है क्योंकि मैं ने जो उसे अपने पुत्र शेला को न ब्याह दिया इसी से उस ने यह काम किया । सो उस ने उस से फिर कभी प्रसंग न किया ॥ २७ । जब तामार के जनने का समय आया तब क्या जान पड़ा कि उस के गर्भ में जुड़वे हैं ॥ २८ । फिर जब वह जनने लगी तब एक बालक ने अपना हाथ बढ़ाया और जनाई धाई ने लाल सूत लेके उस के हाथ में यह कहती हुई बांध दिया कि पहिले यही निकला ॥ २९ । जब उस ने हाथ समेट लिया तब उस का भाई निकल पड़ा और उसे देखके जनाई धाई ने कहा तू ने क्यों दरार कर लिया है इस कारण उस का नाम पेरेस रक्खा गया ॥ ३० । पीछे उस का भाई भी निकला जिस के हाथ में वह लाल सूत बंधा था और उस का नाम जेरह रक्खा गया ॥

(यूसुफ के बन्दीगृह में पड़ने और उस से छूटने का वर्णन.)

३९. जब यूसुफ मिस्र में पहुंचाया गया तब पोतीपर नाम एक मिस्री जो फिरौन का खोजा और जल्लादों का प्रधान था उस ने उस को उस के ले आनेहारे इश्माएलियों के हाथ से मोल लिया ॥ २ । जब यूसुफ अपने उस मिस्री स्वामी के घर में रहा तब यहोवा उस के संग संग रहा सो वह भाग्यमान पुरुष हो गया ॥ ३ । जब यूसुफ के स्वामी ने देखा कि यहोवा उस के संग

संग रहता है और जो काम वह करता है उस को यहोवा उस के हाथ से सुफल कर देता है ॥ ४ । तब उस की अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई और वह उस का टहलुआ ठहराया गया फिर पोतीपर ने उस को अपने घर का अधिकारी किया बल्कि अपना सर्वस्व उस के हाथ में सौंप दिया ॥ ५ । और जब से उस ने उस को अपने घर और अपने सर्वस्व का अधिकारी किया तब से यहोवा यूसुफ की खातिर उस मिस्री के घर पर आशीष देने लगा और क्या घर में क्या चौगान में उस का जो कुछ था सब पर यहोवा की आशीष होती थी ॥ ६ । यह देखकर पोतीपर ने अपना सब कुछ यूसुफ के हाथ में यहां तक छोड़ दिया कि अपने खाने की रोटी को छोड़ वह अपनी संपत्ति का हाल कुछ न जानता था ॥ ७ । इन बातों के पीछे यूसुफ जो सुन्दर और रूपवान था इस कारण उस के स्वामी की स्त्री ने उस की ओर आंख लगाई और कहा मेरे साथ सो ॥ ८ । उस ने नकारके अपने स्वामी की स्त्री से कहा सुन जो कुछ इस घर में मेरे हाथ में है उस का हाल मेरा स्वामी कुछ नहीं जानता और उस ने अपना सर्वस्व मेरे हाथ में सौंप दिया है ॥ ९ । इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं और उस ने मुझ से कुछ नहीं रख छोड़ा हां तू जो उस की स्त्री है सो तुझ को तो रख छोड़ा पर और कुछ नहीं फिर मैं ऐसी बड़ी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्यों बनूं ॥ १० । यह सुनने पर भी वह तो दिन दिन यूसुफ से बोलती रही पर उस ने उस की न सुनी कि कहीं उस के पास लेटे अथवा उस के संग रहे ॥ ११ । एक दिन क्या हुआ कि वह अपना काम काज करने को घर में गया और घर के सेवकों में से कोई घर में न था ॥ १२ । तब उस स्त्री ने उस का बस्त्र पकड़के कहा मेरे साथ सो सुनते ही वह अपना बस्त्र उस के हाथ ही में छोड़के भागा और बाहर निकल गया ॥ १३ । यह देखके कि वह अपना बस्त्र मेरे हाथ में छोड़के बाहर भाग गया ॥ १४ । उस स्त्री ने अपने घर के सेवकों को बुलाके कहा देखो यह एक इब्री मनुष्य को हम से ठठोली करने के लिये हमारे पास ले आया है वह तो मेरे साथ सोने के मतलब से मेरे पास आया और मैं ऊंचे स्वर से चिल्ला उठी ॥ १५ । और मेरी बड़ी चिल्लाहट सुनके वह अपना बस्त्र मेरे पास छोड़कर भागा और बाहर निकल गया ॥ १६ । यह कहके वह यूसुफ का बस्त्र यूसुफ के स्वामी के घर आने लों अपने पास रक्खे रही ॥ १७ । उस के आने पर उस ने उस से इस प्रकार की बातें कहीं कि वह इब्री दास जिस को तू हमारे पास ले आया है सो मुझ से ठठोली करने को मेरे पास आया था ॥ १८ । और जब मैं ऊंचे स्वर से चिल्ला उठी तब वह अपना बस्त्र मेरे पास छोड़के बाहर भाग गया ॥ १९ । अपनी स्त्री की ये बातें सुनके कि तेरे दास ने मुझ से ऐसा ऐसा काम किया यूसुफ के स्वामी का कोप भड़का ॥ २० । और उस ने उस को पकड़ाके एक गुम्मट में जहां राजा के बंधुए बन्धे रहते थे डलवा दिया सो वह उस गुम्मट में रहने लगा ॥ २१ । वहां भी यहोवा यूसुफ के संग संग रहा और उस पर करुणा किई और गुम्मट के दारोगा से उस पर अनुग्रह की दृष्टि कराई ॥ २२ । बल्कि गुम्मट के दारोगा ने उन सब बन्धुओं को जो गुम्मट में थे यूसुफ के हाथ में सौंप दिया और जो जो काम वे वहां करते थे उन का करानेहारा वही होता था ॥ २३ । उस के बश में जो कुछ था उस में से गुम्मट के दारोगा को कोई बस्तु देखनी न पड़ती थी क्योंकि यहोवा यूसुफ के साथ साथ रहता था और जो कुछ वह करता था यहोवा उस को सुफल कर देता था ॥

४०. इन बातों के पीछे मिस्र के राजा के पिलानेहारे और पकानेहारे ने अपने उस स्वामी का कुछ कुछ अपराध किया ॥ २ । तब फिरौन ने अपने उन दो खोजों पर अर्थात् पिलानेहारों के प्रधान और पकानेहारों के प्रधान पर क्रोधित हो ॥ ३ । उन्हें कैद कराके जल्लादों के प्रधान के घर में के उसी गुम्मट में जहां यूसुफ बन्धुआ था डलवा दिया ॥ ४ । तब जल्लादों के

प्रधान ने उन को यूसुफ के हाथ सौंपा और वह उन की टहल करने लगा इस रीति वे कुछ दिन लों बन्दीगृह में रहे ॥ ५ । एक दिन मिस्र के राजा का पिलानेहारा और पकानेहारा जो गुस्सट में बन्धुए थे उन दोनों ने एक ही रात में अपने अपने होनहार के अनुसार स्वप्न देखे ॥ ६ । बिहान को जब यूसुफ उन के पास गया तब उन पर जो दृष्टि किई तो क्या देखा कि वे उदास हैं ॥ ७ । सो उस ने फिरौन के उन खोजों से जो उस के साथ उस के स्वामी के घरवाले बन्दीगृह में थे पूछा कि आज तुम्हारे मुंह क्यों सूखे हैं ॥ ८ । उन्हों ने उस से कहा हम दोनों ने एक एक स्वप्न देखा है और उन के फल का कोई कहनेहारा नहीं । यूसुफ ने उन से कहा क्या स्वप्नों का फल कहना परमेश्वर का काम नहीं है कृपा करके मुझ से अपना अपना स्वप्न बर्णन करो ॥ ९ । यह सुनके पिलानेहारों का प्रधान अपना स्वप्न यूसुफ से बर्णन यों करने लगा कि मुझे स्वप्न में क्या देख पड़ा कि मेरे साम्हने एक दाखलता है ॥ १० । और उस दाखलता में तीन डालियां हैं और जब उस में मानो कलियां लगीं तब वह फूली भी और उस के गुच्छों में दाख लगके पक गईं ॥ ११ । और मानो फिरौन का कटोरा मेरे हाथ में था सो मैं ने उन दाखों को लेके फिरौन के कटोरे में निचोड़ा और कटोरे को फिरौन के हाथ में दिया ॥ १२ । यूसुफ ने उस से कहा इस का फल यह है कि तीन डालियों का अर्थ तीन दिन है ॥ १३ । सो अब से तीन दिन के भीतर फिरौन तुझे बढ़ाके तेरे पद पर फेर ठहरावेगा और तू आगे की नाईं फिरौन का पिलानेहारा होके उस का कटोरा उस के हाथ में फिर दिया करेगा ॥ १४ । सो जब तेरा भला होवे तब मुझे अपने मन में रक्खे रहना और मुझ पर कृपा करके फिरौन से मेरी चर्चा चलाना और इस घर से मुझे छुड़वा देना ॥ १५ । क्योंकि सचमुच मैं इब्रियों के देश से चुराया गया और यहां भी मैं ने कोई ऐसा काम नहीं किया जिस के हेतु मैं इस गड्ढे में डाला जाऊं ॥ १६ । यह देखके कि उस स्वप्न का फल अच्छा निकला पकानेहारों के प्रधान ने यूसुफ से कहा मैं ने भी स्वप्न देखा है सो यह है कि मानो मेरे सिर पर श्वेत रोटी की तीन टोकरियां हैं ॥ १७ । और ऊपर की टोकरी में फिरौन के लिये सब प्रकार की पकी पकाई वस्तुएं हैं और पक्षी मेरे सिर पर की टोकरी में से उन वस्तुओं को नोच नोचके खा रहे हैं ॥ १८ । यूसुफ ने कहा इस का फल यह है कि तीन टोकरियों का अर्थ तीन दिन हैं ॥ १९ । सो अब से तीन दिन के भीतर फिरौन तेरा सिर कटवाके तुझे एक वृक्ष पर टंगवा देगा और पक्षी तेरी धड़ के मांस को नोच नोचके खावेंगे ॥ २० । तीसरे दिन जो फिरौन का जन्मदिन था उस ने अपने सब कर्म्मचारियों की जेवनार किई और उन में से पिलानेहारों के प्रधान और पकानेहारों के प्रधान दोनों को बन्दीगृह से निकलवाया ॥ २१ । और पिलानेहारों के प्रधान को तो पिलानेहारे का पद फेर दिया सो वह कटोरे को फिरौन के हाथ में देने लगा ॥ २२ । पर पकानेहारों के प्रधान को उस ने टंगवा दिया यों जैसा यूसुफ ने उन के स्वप्नों का फल उन से कहा था तैसा ही हुआ ॥ २३ । इस पर भी पिलानेहारों के प्रधान ने यूसुफ को स्मरण न रक्खा भूल ही गया ॥

४१ पूरे दो बरस के बीते पर फिरौन ने यह स्वप्न देखा कि मैं मानो नील

नदी के तीर पर खड़ा हूं ॥ २ । और उस नदी में से सात सुन्दर और मोटी मोटी गायें निकलकर कछार की घास चरने लगीं ॥ ३ । फिर क्या देखा कि उन के पीछे और सात गायें जो कुरूप और डांगर हैं नदी से निकली आती हैं और ये उन गायों के निकट नदी के तीर पर खड़ी हुईं ॥ ४ । तब मानो इन कुरूप और डांगर गायों ने उन सात सुन्दर और मोटी मोटी गायों को खा डाला । इतने में फिरौन जाग उठा ॥ ५ । फिर वह सो गया और दूसरा स्वप्न देखा कि एक डंठी में से सात मोटी और अच्छी अच्छी बालें निकली आती हैं ॥ ६ । फिर क्या देखा कि उन के पीछे सात बालें पतली और पुरवाई से मुर्झाई हुई निकली आती हैं ॥ ७ । और

मानो इन पतली बालों ने उन सातों मोटी और अन्न से भरी हुई बालों को निगल लिया । तब फिरौन ने जागके देखा कि यह स्वप्न हुआ ॥ ८ । भोर को फिरौन का मन व्याकुल हुआ और उस ने मिस्र के सब ज्योतिषियों और पण्डितों को बुलवा भेजा और उन से अपने स्वप्नों का बर्णन तो किया पर उन में से कोई उन का फल फिरौन से न कह सका ॥ ९ । इस दशा में पिलानेहारों का प्रधान फिरौन से बोल उठा कि मुझे आज के दिन अपने अपराध चेत आते हैं ॥ १० । हे फिरौन जब तू हम अपने दासों से क्रोधित हुआ था और मुझे और पकानेहारों के प्रधान को कैद कराके जल्लादों के प्रधान के घरवाले बन्दीगृह में डाल दिया था ॥ ११ । तब वहां हम दोनों जनों ने एक ही रात में अपने अपने होनहार के अनुसार एक एक स्वप्न देखा ॥ १२ । और वहां हमारे साथ एक इब्री जवान था जो जल्लादों के प्रधान का दास था सो हम ने अपना अपना स्वप्न उस से बर्णन किया और उस ने हमारे स्वप्नों का फल हम से कहा हम में से एक एक के स्वप्न का फल उस ने बता दिया ॥ १३ । और जैसा जैसा फल उस ने हम से कहा तैसा ही तैसा निकला भी अर्थात् मुझ को तो महाराज ने मेरा पद फेर दिया पर उस को टंगवा दिया ॥ १४ । यह सुनके फिरौन ने यूसुफ को बुलवा भेजा और वह झटपट गड्ढे में से निकाला गया और बाल मुंड़वा वस्त्र बदलके फिरौन के पास आया ॥ १५ । यूसुफ को देखके फिरौन ने कहा मैं ने एक स्वप्न देखा और उस के फल का कहनेहारा कोई नहीं मिला और मैं ने तेरे विषय में सुना है कि यूसुफ स्वप्न सुनते ही उस का फल कह सकता है ॥ १६ । यूसुफ ने फिरौन से कहा मैं तो कुछ नहीं कर सकता परमेश्वर ही महाराज के लिये मंगल का बखान करावे ॥ १७ । सो फिरौन यूसुफ से कहने लगा मैं ने अपने स्वप्न में क्या देखा कि मानो मैं नील नदी के तीर पर खड़ा हूं ॥ १८ । फिर क्या देखा कि नदी में से सात मोटी और सुन्दर सुन्दर गायें निकलके कछार की घास चरने लगीं ॥ १९ । फिर क्या देखा कि उन के पीछे सात और गायें निकली आती हैं जो दुबली और बहुत कुरूप और डांगर हैं मैं ने तो सारे मिस्र देश में ऐसी कुडौल गायें कभी नहीं देखीं ॥ २० । और मानो इन डांगर और कुडौल गायों ने उन पहिली सातों मोटी मोटी गायों को खा डाला ॥ २१ । और जब वे उन के पेट में गईं तब यह समझ न पड़ा कि वे उन के पेट में हैं क्योंकि उन का रूप पहिले के बरोबर बुरा ही रहा इतना देखके मैं जाग उठा ॥ २२ । फिर मैं ने दूसरा स्वप्न देखा कि मानो एक ही डंठी में सात अच्छी अच्छी और अन्न से भरी हुई बालें निकली आती हैं ॥ २३ । फिर क्या देखता हूं कि उन के पीछे और सात बालें छूछी छूछी और पतली और पुरवाई से मुर्झाई हुई निकलती हैं ॥ २४ । और मानो इन पतली बालों ने उन सात अच्छी अच्छी बालों को निगल लिया । इन स्वप्नों का बर्णन जब मैं ने ज्योतिषियों से किया तो इन का समझानेहारा कोई नहीं मिला ॥ २५ । इतना सुन यूसुफ ने फिरौन से कहा हे फिरौन तेरे दोनों स्वप्न एक ही अर्थ के हैं परमेश्वर जो काम किया चाहता है सो उस ने महाराज को जताया है ॥ २६ । उन सात अच्छी अच्छी गायों का अर्थ सात बरस है और उन सात अच्छी अच्छी बालों का भी अर्थ सात बरस है स्वप्नों का अर्थ तो एक ही है ॥ २७ । फिर उन के पीछे जो डांगर और कुडौल गायें निकलीं और जो सात छूछी और पुरवाई से मुरझाई हुई बालें हुईं उन दोनों का भी फल सात बरस है अर्थात् अकाल के सात बरस होंगे ॥ २८ । हे फिरौन यह वही बात है जो मैं तुझ से कह चुका हूं कि परमेश्वर जो काम किया चाहता है सो उस ने महाराज को दिखाया है ॥ २९ । सुन सारे मिस्र देश में बड़े सुकाल के सात बरस आनेहारे हैं ॥ ३० । और उन के पीछे अकाल के सात बरस आवेंगे और उस समय मिस्र देश में वह सारा सुकाल बिसर जावेगा और अकाल से देश नष्ट होवेगा ॥ ३१ । और उस अकाल के कारण जो पीछे आवेगा यह सुकाल देश में स्मरण न रहेगा क्योंकि अकाल अत्यन्त भारी होवेगा ॥ ३२ । और

महाराज ने जो यह स्वप्न दो बार देखा इस का भेद यह है कि यह बात परमेश्वर की ओर से स्थिर किई हुई है और परमेश्वर इसे शीघ्र ही पूरा करेगा ॥ ३३ । सो अब महाराज किसी प्रवीण और बुद्धिमान पुरुष की खोज करके उसे मिस्र देश पर प्रधान ठहरावे ॥ ३४ । इस से अधिक महाराज देश पर अधिकारियों को ठहराके उन के द्वारा जब लों सुकाल के सात बरस रहेंगे तब लों मिस्र देश की उपज का पंचमांश लिया करे ॥ ३५ । इस भांति वे इन आनेहारे अच्छे बरसों में सब प्रकार की भोजनबस्तु बटोर बटोरकर नगर नगर में अन्न की राशियां भोजन के लिये महाराज के बश में करके उन की रक्षा करें ॥ ३६ । और वह भोजनबस्तु अकाल के उन सात बरसों के लिये जो मिस्र देश में आवेंगे देश के भोजन के निमित्त रक्खी रहे इस प्रकार यह देश उस अकाल से उच्छिन्न न होवेगा ॥ ३७ । यूसुफ का यह बचन फिरौन और उस के सारे कर्म्मचारियों को अच्छा लगा ॥ ३८ । सो फिरौन ने अपने कर्म्मचारियों से कहा इस पुरुष के समान क्या और कोई ऐसा मिलेगा कि परमेश्वर का आत्मा उस में इस के बराबर रहता हो ॥ ३९ । फिर फिरौन ने यूसुफ से कहा परमेश्वर ने जो तुझे इतना ज्ञान दिया है और तेरे तुल्य कोई प्रवीण और बुद्धिमान नहीं ॥ ४० । इस कारण तू ही मेरे घर का अधिकारी हो और तेरी ही आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा चलेगी केवल राजगद्दी के विषय में तुझ से बड़ा ठहरूंगा ॥ ४१ । फिर फिरौन ने यूसुफ से कहा सुन मैं तुझ को मिस्र के सारे देश के ऊपर ठहरा देता हूं ॥ ४२ । यह कहके फिरौन ने अपने हाथ से अंगूठी निकालके यूसुफ के हाथ में पहिना दिई और उस को सूदम सनी के बस्त्र पहिनवा दिये और उस के गले में एक सोने की गोप डाल दिई ॥ ४३ । और उस को अपने दूसरे रथ पर चढ़वाया और लोग उस के आगे आगे यह पुकारते चले कि घुटने टेक घुटने टेक इस भांति वह मिस्र के सारे देश के ऊपर ठहराया गया ॥ ४४ । फिर फिरौन ने यूसुफ से कहा फिरौन तो मैं हूं और सारे मिस्र देश में कोई तेरी आज्ञा बिना हाथ पांव न हिलावेगा ॥ ४५ । उस समय से यूसुफ निकलके मिस्र देश में घूमने फिरने लगा । और फिरौन ने यूसुफ का नाम साफनत्पानेह रक्खा और ओन नगर के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत से उस का ब्याह करा दिया ॥ ४६ । जब यूसुफ मिस्र के राजा फिरौन के सन्मुख खड़ा किया गया और फिरौन के सन्मुख से निकलके मिस्र के सारे देश में दौरा करने लगा तब वह तीस बरस का था ॥ ४७ । सुकाल के सातों बरसों में तो भूमि मनमाना अन्न उपजाती रही ॥ ४८ । सो यूसुफ उन सातों बरसों में सब प्रकार की भोजनबस्तु जो मिस्र देश में होती थीं बटोर बटोरके नगरों में रखता गया अर्थात् एक एक नगर की चारों ओर के खेतों की भोजनबस्तुओं को वह उसी नगर में संचय करता गया ॥ ४९ । इस रीति यूसुफ ने अन्न को समुद्र की बालू के कनकों के समान अत्यन्त बहुतायत से राशि राशि करके रक्खा यहां लों कि उस ने उन का गिनना छोड़ दिया क्योंकि वे असंख्य हो गईं ॥ ५० । अकाल के प्रथम बरस के आने से पहिले यूसुफ के दो पुत्र ओन के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत से जन्मे ॥ ५१ । और यूसुफ ने अपने जेठे का नाम तो यह कहके मनश्शे रक्खा कि परमेश्वर ने मुझ से मेरा सारा क्लेश और मेरे पिता का सारा घराना भी बिसरवा दिया है ॥ ५२ । और दूसरे का नाम उस ने यह कहके एप्रैम रक्खा कि मुझे दुःख भोगने के देश में परमेश्वर ने फुलाया फलाया है ॥ ५३ । निदान मिस्र देश के सुकाल के वे सात बरस निपट गये ॥ ५४ । और अकाल के सात बरस यूसुफ के कहे के अनुसार आने लगे सो सब देशों में अकाल तो पड़ा पर सारे मिस्र देश में अन्न था ॥ ५५ । जब मिस्र का सारा देश भूखों मरने लगा तब प्रजा फिरौन से चिल्ला चिल्लाके रोटी मांगने लगी और वह सब मिस्रियों से कहा करता था यूसुफ के पास जाओ और जो कुछ वह तुम से कहे सोई करो ॥ ५६ । सो जब अकाल सारी पृथिवी पर तो फैल गया और मिस्र देश में घोर हो गया तब यूसुफ

सब भण्डारों को खोल खोलके मिस्रियों के हाथ अन्न बेचने लगा ॥ ५७ । सो सारी पृथिवी के लोग मिस्र में अन्न मोल लेने को यूसुफ के पास आने लगे क्योंकि सारी पृथिवी पर घोर अकाल था ॥

(यूसुफ के भाइयों के उस से मिलने का वर्णन.)

४२ जब याकूब ने सुना कि मिस्र में अन्न है तब उस ने अपने पुत्रों से कहा तुम एक दूसरे का मुंह क्यों ताकते हो ॥ २ । फिर उस ने कहा मैं ने तो सुना है कि मिस्र में अन्न है सो तुम लोग वहां जाके हमारे लिये अन्न मोल ले आओ जिस्तें हम मरें नहीं जीते रहें ॥ ३ । यह आज्ञा पाके यूसुफ के दस भाई तो अन्न मोल लेने के लिये मिस्र को गये ॥ ४ । पर यूसुफ के भाई बिन्यामीन को याकूब ने यह सोचके भाइयों के साथ भेजना नकारा कि कहीं ऐसा न हो कि उस पर कोई बिपत्ति पड़े ॥ ५ । सो और और आनेहारों की भांति इस्राएल के पुत्र भी अन्न मोल लेने आये क्योंकि कनान देश में भी अकाल था ॥ ६ । उस समय तो मिस्र देश का अधिकारी यूसुफ था और उस देश के सब लोगों के हाथ वही अन्न बेचता था सो जब यूसुफ के भाई आये तब भूमि पर मुंह के बल गिरके उस को दण्डवत किया ॥ ७ । उन को देखके यूसुफ ने पहिचान तो लिया पर उन के साम्हने अनजान बनके कठोरता के साथ उन से पूछा तुम कहां से आते हो उन्हों ने कहा हम तो कनान देश से अन्न मोल लेने को आये हैं ॥ ८ । जानना चाहिये कि यद्यपि यूसुफ ने अपने भाइयों को पहिचान लिया तौभी उन्हों ने उस को न पहिचाना ॥ ९ । सो यूसुफ अपने वे स्वप्न स्मरण करके जो उस ने उन के विषय देखे थे उन से कहने लगा तुम भेदिये हो इस देश की दुर्दशा को देखने के लिये आये हो ॥ १० । उन्हों ने उस से कहा नहीं नहीं हे प्रभु हम तेरे दास भोजनबस्तु मोल लेने को आये हैं ॥ ११ । हम सब एक ही पुरुष के पुत्र हैं हम सीधे मनुष्य हैं हम तेरे दास भेदिये नहीं ॥ १२ । उस ने उन से कहा नहीं नहीं तुम इस देश की दुर्दशा देखने ही को आये हो ॥ १३ । उन्हों ने कहा हम तेरे दास बारह भाई हैं और कनान देश-बासी एक ही पुरुष के पुत्र हैं और छुटका जो है सो इस समय हमारे पिता के पास है और एक जो था सो रहा नहीं ॥ १४ । यूसुफ ने उन से कहा मैं ने जो तुम से कहा कि तुम भेदिये हो उस की जांच अब किई जावेगी ॥ १५ । इसी से तुम परखे जाओगे फिरौन के जीवन की सों जब लों तुम्हारा छुटका भाई यहां न आवे तब लों तुम यहां से न निकलने पाओगे ॥ १६ । सो अपने में से एक को भेज दो कि वह तुम्हारे भाई को ले आवे और तब लों तुम लोग बन्धुआई में रहो इस रीति तुम्हारी बातें परखी जावेंगी कि तुम में सच्चाई है कि नहीं न होने से फिरौन के जीवन की सों निश्चय तुम भेदिये ही ठहरोगे ॥ १७ । यह कहके उस ने उन को बन्दीगृह में एक साथ डाल दिया और तीन दिन लों वहीं रक्खा ॥ १८ । तीसरे दिन यूसुफ ने उन से कहा एक काम करो तब जीते रहोगे क्योंकि मैं भी परमेश्वर का भय मानता हूं ॥ १९ । यदि तुम सीधे मनुष्य हो तो तुम सब भाइयों में से एक जन इस बन्दीगृह में बन्धुआ रहे बाकी अपने घरवालों की भूख बुझाने के लिये अन्न ले जाओ ॥ २० । और अपने छुटके भाई को मेरे पास ले आओ यों तुम्हारी बातें सच्ची ठहरेंगी और तुम मार डाले न जाओगे सो उन्हों ने वैसा ही करने को मान लिया ॥ २१ । तब उन्हों ने आपस में कहा निःसन्देह हम अपने भाई के विषय में दोषी हैं कि जब उस ने हम से गिड़गिड़ाके बिनती किई और हम ने यह देखने पर भी कि उस का जीव कैसे संकट में पड़ा है उस की न सुनी इसी कारण हम भी अब इस संकट में पड़े हैं ॥ २२ । रूबेन ने उन से कहा क्या मैं ने तुम से न कहा था कि लड़के के अपराधी मत होओ और तुम ने न सुना सो देखो अब उस के लोहू का पलटा लिया जाता है ॥ २३ । यूसुफ की और उन की बातचीत जो एक दुभाषिया के द्वारा होती थी इस से उन को तो मालूम न था कि वह हमारी समझता है ॥ २४ । पर वह जो सब समझता था सो उन के पास

से हटके रोने लगा फिर उन के पास लौटके और उन से बातचीत करके उन में से शिमोन को निकाला और उन के साम्हने बंधवा रक्खा ॥ २५ । इस पर यूसुफ ने आज्ञा दिई कि उन के बोरे अन्न से भरो और एक एक जन के बोरे में उस के रूपे को भी रख दो और उन को मार्ग के लिये सीधा भी देओ सो उन से ऐसा ही व्यवहार किया भी गया ॥ २६ । तब वे अपना अन्न अपने गदहों पर लादके वहां से चल दिये ॥ २७ । सराय में जब एक ने अपने गदहे को चारा देने के लिये अपना बोरा खोला तब उस का रूपा बोरे के मोहड़े पर रक्खा हुआ देख पड़ा ॥ २८ । यह देख उस ने अपने भाइयों से कहा मेरा रूपा तो फेर दिया गया है देखो वह मेरे बोरे में है यह सुनके उन के जी में जी न रहा और वे यह कहके एक दूसरे की ओर भय से ताकने लगे कि परमेश्वर ने यह हम से क्या किया है ॥ २९ । निदान वे कनान देश में अपने पिता याकूब के पास आये और अपना सारा वृत्तान्त उस से यों बर्णन किया कि ॥ ३० । जो पुरुष उस देश का स्वामी है उस ने हम से कठोरता के साथ बात किई और हम को देश के भेदिये ठहराया ॥ ३१ । यह सुनके हम ने उस से कहा हम तो सीधे लोग हैं हम भेदिये नहीं ॥ ३२ । हम बारह भाई और एक ही पुरुष के पुत्र हैं एक तो रह नहीं गया और कुटका इस समय कनान देश में हमारे पिता के पास है ॥ ३३ । सुनते ही उस पुरुष ने जो उस देश का स्वामी है हम से कहा इसी से मैं जान लूंगा कि तुम सीधे मनुष्य हो अपने में से एक को मेरे पास छोड़के अपने घरवालों की भूख बुझाने के लिये कुछ ले जाओ ॥ ३४ । और अपने कुटके भाई को मेरे पास ले आओ तब मैं जानूंगा कि तुम भेदिये नहीं सीधे लोग हो और तब मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें फेर दूंगा और तुम इस देश में लेन देन करने पाओगे ॥ ३५ । फिर जब वे अपने अपने बोरे से अन्न निकालने लगे तब क्या देखा कि एक एक जन के रूपे की थैली उसी के बोरे में रक्खी है सो रूपे की थैलियों को देखके वे और उन का पिता डर गये ॥ ३६ । फिर उन के पिता याकूब ने उन से कहा मुझी को तुम निर्बंश कर देते हो देखो यूसुफ नहीं रहा और शिमोन भी नहीं आया और अब तुम बिन्यामीन को भी ले जाने चाहते हो ये सब बिपत्तियां मेरे ही ऊपर आ पड़ी हैं ॥ ३७ । यह सुनके रूबेन ने अपने पिता से कहा यदि मैं उस को तेरे पास न लाऊं तो मेरे दोनों पुत्रों को मार डालना तू उस को मेरे हाथ में सौंप तो दे मैं उसे तेरे पास फेर पहुंचा दूंगा ॥ ३८ । उस ने कहा नहीं नहीं मेरा पुत्र तुम्हारे संग न जावेगा क्योंकि उस का भाई मर गया और वह अकेला रह गया सो जिस मार्ग से तुम जाओगे उस में यदि उस पर कोई बिपत्ति आ पड़े तो तुम्हारे कारण मैं इस पक्के बाल की अवस्था में शोक के साथ अधोलोक में उतर जाऊंगा ॥

४३. इतने में अकाल उस देश में और भारी हो गया ॥ २ । सो जब वह अन्न जो यूसुफ के भाई मिस्र से ले आये चुक गया तब यूसुफ के भाइयों के पिता ने उन से कहा फिर जाके हमारे लिये थोड़ी सी भोजनबस्तु मोल ले आओ ॥ ३ । यह सुनके यहूदा ने उस से कहा उस पुरुष ने हम से चिता चिताके कहा कि यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे संग न आवे तो तुम मेरे सन्मुख न आने पाओगे ॥ ४ । सो यदि तू हमारे भाई को हमारे संग भेजे तब तो हम जाके तेरे लिये भोजनबस्तु मोल ले आवेंगे ॥ ५ । पर यदि तू उस को न भेजे तो हम न जावेंगे क्योंकि उस पुरुष ने हम से कहा कि यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे संग न रहे तो तुम मेरे सन्मुख न आने पाओगे ॥ ६ । इतना सुन इस्राएल ने अपने पुत्रों से कहा तुम ने उस पुरुष को यह बताके कि हमारे एक और भाई है क्यों मुझ से बुरा बर्ताव किया ॥ ७ । उन्हों ने कहा जब उस पुरुष ने हमारी और हमारे कुटुम्बियों की दशा की इस रीति पूछपाछ किई कि क्या तुम्हारा पिता अब लों जीता है क्या तुम्हारे कोई और भाई भी है तब हम ने इन प्रश्नों के अनुसार उस से बर्णन किया फिर क्या हम कुछ भी

जान सकते थे कि वह कहेगा अपने भाई को यहां ले आना ॥ ८ । फिर यहूदा ने अपने पिता इस्राएल से कहा उस लड़के को मेरे संग भेज दे कि हम चले जावें इस से हम और तू और हमारे बालबच्चे मरने न पावेंगे जीते रहेंगे ॥ ९ । मैं उस का जामिन होता हूं मेरे ही हाथ से तू उस को फेर लेना यदि मैं उस को तेरे पास पहुंचाके साम्हने न खड़ा कर दूं तो मैं सदा के लिये तेरा अपराधी ठहरूंगा ॥ १० । देख यदि हम लोग बिलम्ब न करते तो अब लों दूसरी बार भी लौटके आ चुकते ॥ ११ । यह सुन उन के पिता इस्राएल ने उन से कहा यदि सचमुच ऐसी ही बात हो तो एक काम करो इस देश की उत्तम उत्तम बस्तुओं में से कुछ कुछ अपने बोरों में उस पुरुष के लिये भेंट ले जाओ जैसे थोड़ा सा बलसान और थोड़ा सा मधु और कुछ सुगन्ध द्रव्य और गंधरस पिस्ते और बादाम ॥ १२ । फिर अपने अपने साथ दूना रूपा ले जाओ अर्थात् जो रूपा तुम्हारे बोरों के मोहड़े पर फेर दिया गया उस को भी लेते जाओ क्या जानिये वह भूल से फेर दिया गया हो ॥ १३ । और अपने भाई को भी संग लेके चलो । तुम तो इसी रीति उस पुरुष के पास जाओ ॥ १४ । और सर्बशक्तिमान ईश्वर उस पुरुष को तुम पर दयालु करे कि वह तुम्हारे दूसरे भाई को और बिन्यामीन को भी आने देवे और मैं निर्बंश हुआ तो हुआ ॥

१५ । यह सुनके उन मनुष्यों ने वह भेंट और दूना रूपा अपने साथ लिया और बिन्यामीन को भी संग लेके चल दिये और मिस्र में पहुंचकर यूसुफ के साम्हने खड़े हुए ॥ १६ । उन के साथ बिन्यामीन को देखके यूसुफ ने अपने घर के अधिकारी से कहा उन मनुष्यों को घर में पहुंचा और पशु मारके भोजन तैयार कर क्योंकि वे लोग दो पहर को मेरे संग भोजन करेंगे ॥ १७ । सो वह जन यूसुफ के कहने के अनुसार करके उन पुरुषों को यूसुफ के घर में ले चला ॥ १८ । वे जो यूसुफ के घर को पहुंचाये जाने लगे इस से डरकर कहने लगे जो रूपा पहिली बार हमारे बोरों में फेर दिया गया उसी के कारण हम भीतर पहुंचाये जाते हैं जिस्तें वह पुरुष हम पर टूट पड़े और दबाके अपने दास बनावे और हमारे गदहों को छीन लेवे ॥ १९ । ऐसा सोचकर वे यूसुफ के घर के अधिकारी के निकट घर के द्वार पर जाके यों कहने लगे कि ॥ २० । हे हमारे प्रभु बिनती सुन जब हम पहिली बार अन्न मोल लेने को आये थे ॥ २१ । तब लौटती बार हम ने सराय में पहुंचके जो अपने बोरों को खोला तो क्या देखा कि एक एक जन का पूरा रूपा उस के बोरे के मोहड़े पर रक्खा है सो हम उस को अपने साथ फेर लेते आये हैं ॥ २२ । और दूसरा रूपा भी भोजनबस्तु मोल लेने को ले आये हैं हम नहीं जानते कि हमारा रूपा हमारे बोरों में किस ने रख दिया था ॥ २३ । उस ने कहा तुम्हारा कुशल होवे मत डरो तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हारे पिता का भी परमेश्वर है उसी ने तुम को तुम्हारे बोरों में छिपाके धन दिया होगा तुम्हारा रूपा मुझ को तो मिल गया था यह कहकर उस ने शिमोन को निकालके उन के संग कर दिया ॥ २४ । तब उस जन ने उन मनुष्यों को यूसुफ के घर में ले जाके जल दिया और उन्हों ने अपने पांवों को धोया और उस ने उन के गदहों के लिये चारा भी दिया ॥ २५ । इस के पीछे यह सुनके कि आज हम को यहीं भोजन करना होगा उन्हों ने यूसुफ के आने के समय लों अर्थात् दो पहर लों उस भेंट को सजाय रक्खा ॥ २६ । जब यूसुफ घर आया तब वे उस भेंट को जो उन के हाथ में थी उस के सन्मुख घर में ले गये और भूमि पर गिरके उस को दण्डवत किया ॥ २७ । उस ने उन का कुशल पूछा और कहा क्या तुम्हारा वह पुरनिया पिता जिस की तुम ने चर्चा किई थी कुशल से है क्या वह अब लों जीता है ॥ २८ । उन्हों ने कहा हां तेरा दास हमारा पिता कुशल से है और अब लों जीता है इतना कहके उन्हों ने सिर झुकाके फिर दण्डवत किई ॥ २९ । तब उस ने आंखें उठाके और अपने सहोदर भाई बिन्यामीन को देखके पूछा क्या तुम्हारा वह कुटका भाई जिस की चर्चा तुम ने मुझ से किई थी

यही है फिर उस ने कहा हे मेरे पुत्र परमेश्वर तुझ पर अनुग्रह करे ॥ ३० । तब अपने भाई के स्नेह से मन भर आने के कारण और यह सोचके कि मैं कहां रोऊं यूसुफ फुर्ती से अपनी कोठरी में गया और वहां रो दिया ॥ ३१ । फिर अपना मुंह धोके निकल आया और अपने को रोकके कहा भोजन परोसो ॥ ३२ । सो दासों ने उस के लिये तो अलग और भाइयों के लिये अलग और जो मिस्री लोग उस के संग खाते थे उन के लिये अलग परोसा इस लिये कि मिस्री इब्रियों के साथ भोजन नहीं कर सकते बल्कि मिस्री ऐसा करने से घिन भी करते हैं ॥ ३३ । सो यूसुफ के भाई उस के साम्हने अपनी अपनी अवस्था के अनुसार क्रम से बैठाये गये अर्थात् बड़े बड़े पहिले और छोटे छोटे पीछे यह देख वे बिस्मित होके एक दूसरे की ओर ताकने लगे ॥ ३४ । तब यूसुफ अपने साम्हने से भोजनवस्तु उठा उठाके उन के पास भेजने लगा और बिन्यामीन को अपने एक एक भाई की भोजनवस्तु से पंचगुणी मिली । और उन्हों ने उस के संग मनमाना पिया ॥

४४· फिर यूसुफ ने अपने घर के अधिकारी को आज्ञा दिई कि इन मनुष्यों के बोरों में जितनी भोजनवस्तु समा सके उतनी भर दे और एक एक जन के रूपे को भी उस के बोरे के मोहड़े पर रख दे ॥ २ । और मेरा चान्दी का कटोरा कुटके के बोरे के मोहड़े पर उस के अन्न के मोलवाले रूपे के साथ रख दे यूसुफ की इस आज्ञा के अनुसार अधिकारी ने किया ॥ ३ । बिहान को भोर होते ही वे मनुष्य अपने गदहों समेत बिदा किये गये ॥ ४ । वे नगर से निकले ही थे और दूर न जाने पाये कि यूसुफ ने अपने घर के अधिकारी से कहा उन मनुष्यों का पीछा कर और उन को पाके उन से कह कि तुम ने भलाई की सन्ती बुराई क्यों किई है ॥ ५ । क्या यह वह बस्तु नहीं जिस में मेरा स्वामी पीता है और जिस से वह शकुन भी बिचारा करता है तुम ने यह जो किया है सो बुरा किया ॥ ६ । यह आज्ञा पाकर उस ने उन्हें जा लिया और ऐसी ही बातें उन से कहीं ॥ ७ । सुनकर उन्हों ने उस से कहा हे हमारे प्रभु तू ऐसी बातें क्यों कहता है ऐसा काम करना हम तेरे दासों से दूर रहे ॥ ८ । देख जो रूपा हमारे बोरों के मोहड़े पर निकला था जब हम ने उस को कनान देश से ले आके तुझे फेर दिया तब भला तेरे स्वामी के घर में से हम कोई चान्दी वा सोने की बस्तु क्योंकर चुरा ले आ सकते हैं ॥ ९ । हम तेरे दासों में से जिस किसी के पास वह निकले सो मार डाला जावे और हम भी अपने उस प्रभु के दास हो जावें ॥ १० । उस ने कहा तुम्हारा ही कहना सही जिस के पास वह निकले सो मेरा दास होगा और तुम लोग निरपराध ठहरोगे ॥ ११ । इस पर वे फुर्ती से अपने अपने बोरे को उतार भूमि पर रखके उन्हें खोलने लगे ॥ १२ । तब वह ढूंढ़ ढांढ़ करने लगा और बड़के के बोरे से लेके कुटके के बोरे लों खोज किई और कटोरा बिन्यामीन के बोरे में मिला ॥ १३ । यह देखके उन्हों ने अपने बस्त्र फाड़े और अपना अपना गदहा लादके नगर को लौट गये ॥ १४ । अपने भाइयों समेत यूसुफ के घर में पहुंचकर यहूदा ने उसे तब लों वहीं ठहरा हुआ पाया और वे उस के साम्हने भूमि पर गिरे ॥ १५ । यूसुफ ने उन से कहा तुम लोगों ने यह कैसा काम किया है क्या तुम मुझ को न जानते थे कि मुझ सा मनुष्य शकुन बिचार कर सकता है ॥ १६ । यहूदा ने कहा हम लोग तुझ अपने प्रभु से क्या कहें हम क्या कहके अपने को निर्दोष ठहरावें परमेश्वर ने हम तेरे दासों के अधर्म्म को पकड़ लिया है सुन हम और जिस के पास कटोरा निकला सो भी हम सब के सब तुझ अपने प्रभु के दास ही हैं ॥ १७ । उस ने कहा ऐसा करना मुझ से दूर रहे जिस जन के पास कटोरा निकला सोई मेरा दास होगा और तुम लोग अपने पिता के पास कुशल क्षेम से चले जाओ ॥

१८ । इतना सुन यहूदा उस के पास जाके कहने लगा हे मेरे प्रभु बिनती सुन मुझ तेरे दास को तुझ अपने प्रभु से एक बात कहने की आज्ञा हो और

तेरा कोप मुझ तेरे दास पर न भड़के तू तो फिरौन ही के तुल्य है ॥ १९ । हे मेरे प्रभु तू ने हम अपने दासों से पूछा था कि क्या तुम्हारे पिता वा भाई है ॥ २० । और हम ने तुझ अपने प्रभु से कहा हां हमारे वृद्ध पिता तो है और उस के बुढ़ापे का एक छोटा सा बालक भी है और इस का भाई मर गया सो वह अपनी माता का अकेला रह गया और उस का पिता उस से स्नेह रखता है ॥ २१ । यह सुनके तू ने हम अपने दासों से कहा था कि उस को मेरे पास ले आओ कि मैं उस को देखूं ॥ २२ । तब हम ने तुझ अपने प्रभु से कहा था कि वह लड़का अपने पिता को नहीं छोड़ सकता नहीं तो उस का पिता मर जावेगा ॥ २३ । और तू ने हम अपने दासों से कहा यदि तुम्हारा छुटका भाई तुम्हारे संग न आवे तो तुम मेरे सन्मुख फिर आने न पाओगे ॥ २४ । सो जब हम तेरे दास अपने पिता के पास गये तब हम ने उस से तुझ अपने प्रभु की बातें कहीं ॥ २५ । पीछे हमारे पिता ने कहा फिर जाके हमारे लिये थोड़ी सी भोजनवस्तु मोल ले आओ ॥ २६ । हम ने कहा हम नहीं जा सकते हां यदि हमारा छुटका भाई हमारे संग रहे तब तो हम जावेंगे नहीं तो नहीं क्योंकि यदि हमारा छुटका भाई हमारे संग न रहे तो हम उस पुरुष के सन्मुख न जाने पावेंगे ॥ २७ । यह सुनके तेरे दास मेरे पिता ने हम लोगों से कहा तुम तो जानते हो कि मेरी स्त्री दो पुत्र जनी ॥ २८ । और उन में से एक तो मुझे छोड़ ही गया और मैं ने निश्चय कर लिया कि वह फाड़ डाला गया होगा और तब से मैं ने उस का मुंह न देख पाया ॥ २९ । सो यदि तुम इस को भी मेरी आंख की ओट ले जाओ और कोई विपत्ति इस पर पड़े तो तुम्हारे कारण मैं इस पक्के बाल की अवस्था में दुःख के साथ अधोलोक में उतर जाऊंगा ॥ ३० । सो हे मेरे प्रभु यदि मैं अब तेरे दास अपने पिता के पास पहुंचूं और यह लड़का संग न रहे तो उस का प्राण जो इसी पर अटका रहता है ॥ ३१ । इस कारण यह देखके कि लड़का नहीं है वह तुरन्त ही प्राण छोड़ देगा इस रीति तेरे इन दासों के कारण तेरा दास हमारा पिता जो पक्के बालों की अवस्था का है सो शोक के साथ अधोलोक में उतर जावेगा ॥ ३२ । फिर देख मैं तेरा दास अपने पिता के यहां यह कहके इस लड़के का जामिन हुआ हूं कि यदि मैं इस को तेरे पास न पहुंचा दूं तो सदा के लिये तेरा अपराधी ठहरूंगा ॥ ३३ । सो अब मेरी बिनती यह है कि मैं तेरा दास इस लड़के की सन्ती तुझ अपने प्रभु का दास होके रहने पाऊं और यह लड़का अपने भाइयों के संग जाने पावे ॥ ३४ । क्योंकि लड़के के बिना संग रहे मैं क्योंकर अपने पिता के पास जा सकूंगा ऐसा न होवे कि मेरे पिता पर जो दुःख पड़ेगा सो मुझे अपनी आंखों से देखना पड़े ॥

४५· इतना सुनके यूसुफ उन सब के साम्हने जो उस के आस पास खड़े थे अपने को और रोक न सका तब पुकारके कहा मेरे आस पास से सब लोगों को निकाल देओ । जब इस आज्ञा के माने जाने से उस के भाइयों के साम्हने अपने को प्रगट करने के समय यूसुफ के संग और कोई न रहा ॥ २ । तब वह चिल्ला चिल्लाके रोने लगा और मिस्रियों ने सुना और फिरौन के घर के लोगों को भी इस का समाचार मिला ॥ ३ । फिर यूसुफ अपने भाइयों से कहने लगा मैं यूसुफ हूं क्या मेरा पिता अब लों जीता है इस का उत्तर उस के भाई न दे सके क्योंकि वे उस के साम्हने घबरा गये थे ॥ ४ । फिर यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा मेरे निकट आओ यह सुनके वे निकट गये फिर उस ने कहा मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूं जिस को तुम ने मिस्र आनेहारों के हाथ बेच डाला था ॥ ५ । अब तुम लोग मत पछताओ और तुम ने जो मुझे यहां आनेहारों के हाथ बेच डाला इस से उदास मत होओ क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे प्राण बचाने के लिये मुझे आगे से भेज दिया ॥ ६ ॥ देखो अब दो बरस से इस देश में अकाल है और अब पांच बरस और ऐसे ही होवेंगे कि उन में न तो हल चलेगा और न अन्न काटा जावेगा ॥

७। सो परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे इसी लिये
भेजा कि तुम पृथिवी पर बचे रहो और तुम्हारे
प्राण बचने से तुम्हारा बंश बढ़े ॥ ८। इस रीति
अब मुझ को यहां पर भेजनेहारे तुम नहीं परमेश्वर
ही ठहरा और उसी ने मुझे फिरौन का पिता सा
और उस के सारे घर का स्वामी और सारे मिस्र
देश पर प्रभुता करनेहारा ठहरा दिया है ॥ ९। सो
शीघ्र मेरे पिता के पास जाके कहो तेरा पुत्र यूसुफ
यों कहता है कि परमेश्वर ने मुझे सारे मिस्र का
स्वामी ठहराया है सो तू मेरे पास बिना बिलम्ब
किये चला आ ॥ १०। और तेरा निवास गोशेन देश
में होगा और तू बेटे पोतों भेड़ बकरियों गाय बैलों
निदान अपने सर्वस्व समेत मेरे निकट रहेगा ॥
११। और अकाल के जो पांच बरस और होंगे उन
में मैं वहीं तेरा पालन पोषण करूंगा ऐसा न हो
कि तू और तेरा घराना बल्कि जितने तेरे हैं सो
भूखों मरें ॥ १२। और हे मेरे भाइयो तुम अपनी
आंखों से देखते हो और मेरा भाई बिन्यामीन भी
अपनी आंखों से देखता है कि जो हम से बोल रहा
है सो यूसुफ है ॥ १३। और तुम मेरे सब ऐश्वर्य्य
का जो मिस्र में है और जो कुछ तुम ने देखा है
उस सब का मेरे पिता से बर्णन करना और बेग
मेरे पिता को यहां ले आना ॥ १४। इतना कहके
वह अपने भाई बिन्यामीन के गले में लिपटके रोया
और बिन्यामीन भी उस के गले में लिपटके रोया ॥
१५। फिर वह अपने और सब भाइयों को चूमके
उन से मिलकर रोया और इस के पीछे उस के भाई
उस से बात करने लगे ॥

१६। इतने में इस बात की चर्चा कि यूसुफ के
भाई आये हैं फिरौन के भवन तक पहुंच गई और
यह सुनके फिरौन और उस के कर्म्मचारी प्रसन्न हुए ॥
१७। सो फिरौन ने यूसुफ से कहा अपने भाइयों से
कह कि एक काम करो अपने पशुओं को लादके
कनान देश में चले जाओ ॥ १८। और अपने पिता
और अपने अपने घर के लोगों को लेके मेरे पास
आना और मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है
सो मैं तुम्हें दूंगा और तुम्हें देश के उत्तम से उत्तम
पदार्थ खाने को मिलेंगे ॥ १९। हे यूसुफ मेरी आज्ञा
पाके तू अपने भाइयों से कह कि तुम एक काम
करो मिस्र देश से अपने बालबच्चों और स्त्रियों के
लिये गाड़ियां ले जाओ और अपने पिता को चढ़ाके
ले आना ॥ २०। और अपनी सामग्री का मोह न
करना क्योंकि सारे मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से
अच्छा है सो तुम्हारा ही है ॥ २१। इस आज्ञा के
अनुसार इस्राएल के पुत्रों ने किया और यूसुफ ने
फिरौन की मानके उन्हें गाड़ियां दिईं और मार्ग के
लिये सीधा भी दिया ॥ २२। उन में से एक एक
जन को तो उस ने एक एक जोड़ा बस्त्र दिया और
बिन्यामीन को तीन सौ रूपे के टुकड़े और पांच जोड़े
बस्त्र दिये ॥ २३। फिर अपने पिता के पास उस ने
जो भेजा सो यह है अर्थात् मिस्र की अच्छी बस्तुओं
से लदे हुए दस गदहे और अन्न और रोटी और उस
के पिता के मार्ग के लिये भोजनबस्तु से लदी हुई
दस गदहियां ॥ २४। इसी रीति उस ने अपने भाइयों
को बिदा किया और वे चल दिये और उन के चलते
ही उस ने उन से कहा मार्ग में कहीं झगड़ा न
करना ॥ २५। मिस्र से चलके वे कनान देश में अपने
पिता याकूब के पास पहुंचे ॥ २६। और उस से
यह बर्णन किया कि यूसुफ अब लों जीता है और
सारे मिस्र देश पर प्रभुता वही करता है यह सुनने
पर भी उस ने उन की प्रतीति न किई और वह
अपने आपे में न रहा ॥ २७। यह देखके उन्हों ने
अपने पिता याकूब से यूसुफ की सारी बातें जो उस
ने उन से कही थीं कह दिईं और जब उस ने उन
गाड़ियों को देखा जो यूसुफ ने उस के ले आने के
लिये भेजीं तब उस का चित्त स्थिर हो गया ॥ २८।
और इस्राएल ने कहा बस मेरा पुत्र यूसुफ अब लों
जीता होगा मैं अपनी मृत्यु से पहिले जाके उस को
देखूंगा ॥

(याकूब के सारे परिवार समेत मिस्र में बस जाने का बर्णन.)

४६. इस के पीछे इस्राएल अपना सर्वस्व
ले कूंच करके बेर्शेबा को गया
और वहां अपने पिता इसहाक के परमेश्वर को

बलिदान चढ़ाये ॥ २। तब परमेश्वर ने इस्राएल से
रात के दर्शन में कहा हे याकूब हे याकूब उस ने कहा
क्या आज्ञा ॥ ३। उस ने कहा मैं ईश्वर तेरे पिता
का परमेश्वर हूं तू मिस्र में जाने से मत डर क्योंकि
मैं तुझ से वहां एक बड़ी जाति उपजाऊंगा ॥ ४। मैं
तेरे संग संग मिस्र को चलता हूं और मैं तुझे वहां
से फिर निश्चय ले आऊंगा और तेरी अन्तक्रिया
यूसुफ के हाथ से होगी ॥ ५। यह सुनके याकूब
बेर्शेबा से चला और इस्राएल के पुत्र अपने उसी
पिता याकूब और अपने बालबच्चों और स्त्रियों को
उन गाड़ियों पर जो फिरौन ने उन के ले आने को
भेजी थीं चढ़ाके ले चले ॥ ६। और वे अपनी भेड़
बकरी गाय बैल निदान कनान देश में अपने बटोरे
हुए सारे धन को लेके मिस्र में आये ॥ ७। और
याकूब अपने बेटों बेटियों पोते पोतियों निदान अपने
बंश भर को अपने संग मिस्र में ले आया ॥

८। याकूब के साथ जो इस्राएलबंशी अर्थात्
उस के बेटे पोते आदि मिस्र में आये उन के नाम
ये हैं याकूब का जेठा तो रूबेन था ॥ ९। और
रूबेन के पुत्र हनोक पल्लू हेस्रोन और कर्म्मी थे ॥
१०। और शिमोन के पुत्र यमूएल यामीन ओहद
याकीन सोहर और एक कनानी स्त्री का जना हुआ
शाऊल भी था ॥ ११। और लेवी के पुत्र गेर्शोन
कहात और मरारी थे ॥ १२। और यहूदा के एर
ओनान शेला पेरेस और जेरह नाम पुत्र हुए तो थे
पर एर और ओनान कनान देश में मर गये थे और
पेरेस के पुत्र हेस्रोन और हामूल थे ॥ १३। और
इस्साकार के पुत्र तोला पुव्वा योब और शिम्रोन
थे ॥ १४। और जबूलून के पुत्र सेरेद एलोन और
यहलेल थे ॥ १५। लेआ के पुत्र जिन्हें वह याकूब
से पद्दनराम में जनी उन के बेटे पोते ये ही थे और
इन से अधिक वह उस की जन्माई एक बेटी दीना
को भी जनी यहां लों तो याकूब के सब बंशवाले
तेंतीस प्राणी हुए ॥ १६। फिर गाद के पुत्र सिप्योन
हाग्गी शूनी एसबोन एरी अरोदी और अरेली थे ॥
१७। और आशेर के पुत्र यिम्ना यिश्वा यिश्वी और
बरीआ थे और उन की बहिन सेरह थी और बरीआ
के पुत्र हेबेर और मल्कीएल थे ॥ १८। जिल्पा जिसे
लाबान ने अपनी बेटी लेआ को दिया उस के बेटे
पोते आदि ये ही थे सो उस के द्वारा याकूब के
सोलह प्राणी जन्मे ॥ १९। फिर याकूब की स्त्री
राहेल के पुत्र यूसुफ और बिन्यामीन थे ॥ २०। और
मिस्र देश में ओन के याजक पोतीपेरा की बेटी
आसनत के जने यूसुफ के ये पुत्र जन्मे अर्थात् मनश्शे
और एप्रैम ॥ २१। और बिन्यामीन के पुत्र बेला
बेकेर अशबेल गेरा नामान एही रोश मुप्पीम हुप्पीम
और आर्द थे ॥ २२। राहेल के पुत्र जिन्हें वह
याकूब से जनी उन के ये ही पुत्र थे उस के ये सब
बेटे पोते चौदह प्राणी हुए ॥ २३। फिर दान का
पुत्र हूशीम था ॥ २४। और नप्ताली के पुत्र यहसेल
गूनी येसेर और शिल्लेम थे ॥ २५। बिल्हा जिसे
लाबान ने अपनी बेटी राहेल को दिया उस के बेटे
पोते ये ही हैं उस के द्वारा याकूब के बंश में सात
प्राणी हुए ॥ २६। इस रीति याकूब के निज बंश
के जो प्राणी मिस्र में आये सो तो उस की बहुओं
को छोड़ सब मिलके छियासठ प्राणी भये ॥ २७।
और यूसुफ के पुत्र जो मिस्र में उस के जन्मे सो दो
प्राणी थे निदान याकूब के घराने के जो प्राणी
मिस्र में आये सो सब मिलके सत्तर भये ॥

२८। मिस्र में पहुंचने से आगे इस्राएल ने यहूदा
को यूसुफ के पास भेज दिया जिस्तें यूसुफ उस को
गोशेन का मार्ग दिखावे इस रीति याकूब परिवार
समेत गोशेन देश में आया ॥ २९। तब यूसुफ
अपना रथ जुतवाके अपने पिता इस्राएल से भेंट
करने के लिये गोशेन देश को गया और उस से भेंट
करके उस के गले में लिपटा और कुछ बेर लों उस
के गले में लिपटा हुआ रोता रहा ॥ ३०। तब
इस्राएल ने यूसुफ से कहा मैं अब मरने से भी प्रसन्न
हूं क्योंकि तुझ जीते जागते का मुंह देख चुका ॥
३१। फिर यूसुफ ने अपने भाइयों से और अपने
पिता के घराने के और लोगों से भी कहा मैं जाके
फिरौन को यह कहके समाचार देऊंगा कि मेरे भाई
बल्कि मेरे पिता के सारे घराने के लोग जो कनान
देश में रहते थे सो मेरे पास आ गये हैं ॥

३२। और वे लोग चरवाहे हैं बल्कि सदा से पशुओं को चराते आये हैं सो वे अपनी भेड़ बकरी गाय बैल और जो कुछ उन का है सब ले आये हैं ॥ ३३ । देखो यदि फिरौन तुम को बुलाके पूछे कि तुम्हारा उद्यम क्या है ॥ ३४ । तो कहना कि हम तेरे दास लड़कपन से लेके आज लों पशुओं को चराते आये हैं बल्कि हमारे पुरखा लोग भी हम से पहिले ऐसा ही करते थे यह सुनके फिरौन तुम को गोशेन देश में रहने देगा क्योंकि सब चरवाहों से मिस्री लोग घिन करते हैं ॥

४७. **पीछे** यूसुफ ने फिरौन के पास जाकर यह कहके समाचार दिया कि मेरा पिता और मेरे भाई और उन की भेड़ बकरियां गाय बैल और जो कुछ उन का है सब कनान देश से आ गया है और अभी तो वे गोशेन देश में हैं ॥ २ । फिर उस ने अपने भाइयों में से पांच जन छांटके फिरौन के साम्हने खड़े कर दिये ॥ ३ । फिरौन ने उस के भाइयों से पूछा कि तुम्हारा उद्यम क्या है उन्हों ने फिरौन से कहा हम तेरे दास चरवाहे हैं और हम से पहिले हमारे पुरखा लोग भी ऐसे ही रहे ॥ ४ । फिर उन्हों ने फिरौन से कहा हम लोग इस देश में परदेशी की भांति रहने के लिये आये हैं क्योंकि कनान देश में भारी अकाल होने के कारण हम तेरे दासों की भेड़बकरियों के लिये चराई नहीं रही सो कृपा करके हम अपने दासों को गोशेन देश में रहने दे ॥ ५ । यह सुनके फिरौन ने यूसुफ से कहा तेरा पिता और तेरे भाई जो तेरे पास आ गये हैं ॥ ६ । सो मिस्र देश तेरे साम्हने पड़ा है इस देश का जो सब से अच्छा भाग होवे उस में अपने पिता और भाइयों को बसा दे अर्थात् वे गोशेन ही देश में रहें और यदि तू जानता हो कि उन में से चैतन्य पुरुष हैं तो उन्हें मेरे पशुओं के अधिकारी ठहरा दे ॥ ७ । फिर यूसुफ ने अपने पिता याकूब को ले आके फिरौन के सन्मुख खड़ा किया और याकूब ने फिरौन को आशीर्बाद दिया ॥ ८ । तब फिरौन ने याकूब से पूछा तेरी अवस्था कितने दिन की हुई है ॥ ९ । याकूब ने फिरौन से कहा मैं तो एक सौ तीस बरस परदेशी होके अपना जीवन बिताता चुका हूं मेरे जीवन के दिन थोड़े और दुःख से भरे हुए भी थे और मेरे बापदादे परदेशी होके जितने दिन लों जीते रहे उतने दिन का मैं अभी नहीं भया ॥ १० । इतना कह याकूब फिरौन को फिर आशीर्बाद देके उस के सन्मुख से चला गया ॥ ११ । तब यूसुफ ने अपने पिता और भाइयों को बसा दिया और फिरौन की आज्ञा के अनुसार मिस्र देश के अच्छे से अच्छे भाग में अर्थात् रामसेस नाम देश में भूमि देके उन की निज कर दिई ॥ १२ । तब से यूसुफ अपने पिता को और एक एक के बालबच्चों की गिनती के अनुसार अपने भाइयों को निदान अपने पिता के सारे घराने को भोजन दिला दिलाके उन का पालन पोषण करने लगा ॥

१३ । उस के पीछे उस सारे देश में खाने को कुछ न रहा क्योंकि अकाल बहुत भारी था और अकाल के कारण मिस्र और कनान दोनों देश अत्यन्त हार गये ॥ १४ । और जितना रूपा मिस्र और कनान देश में था सब को यूसुफ ने उस अन्न की सन्ती जो उन के निवासी मोल लेते थे एकट्ठा करके फिरौन के भवन में पहुंचा दिया ॥ १५ । सो जब मिस्र और कनान देश का रूपा चुक गया तब सब मिस्री लोग यूसुफ के पास आ आके कहने लगे हम को भोजनवस्तु दे क्या हम रूपे के न रहने से तेरे रहते हुए मर जावें ॥ १६ । यूसुफ ने कहा अच्छा जो रूपा न हो तो अपने पशु दे दो और मैं उन की सन्ती तुम्हें खाने को देऊंगा ॥ १७ । यह सुनके वे अपने पशु यूसुफ के पास ले आये और यूसुफ उन को घोड़ों भेड़ बकरियों गाय बैलों और गदहों की सन्ती खाने को देने लगा सो उस बरस में वह सब जाति के पशुओं की सन्ती भोजन दे देके उन का पालन पोषण करता रहा ॥ १८ । वह बरस तो यों कटा तब अगले बरस में उन्हों ने उस के पास आके कहा हे हमारे प्रभु हमें तुझ से यह बात खोलके कहनी है कि हमारा रूपा तो चुक ही गया है और अब हमारे सब प्रकार के पशु भी तेरे पास आ चुके हैं सो अब हे हमारे प्रभु तेरे साम्हने हमारे

अपना अपना चोला और भूमि छोड़के और कुछ नहीं रहा ॥ १९ । तौभी तेरे रहते हुए हम क्यों मरें और हमारी भूमि क्यों उजड़ जावे हम को और हमारी भूमि को भोजनवस्तु की सन्ती मोल ले कि हम अपनी भूमि समेत फिरौन का धन होके उस की सेवा करें और हम को बीज दे कि हम मरने न पावें जीते रहें और हमारी भूमि न उजड़े ॥ २० । यह सुनके यूसुफ ने मिस्र की सारी भूमि को फिरौन के लिये मोल लिया क्योंकि उस कठिन अकाल के पड़ने से मिस्री लोगों को अपना अपना खेत बेच डालना पड़ा इस रीति सारी भूमि फिरौन की हो गई ॥ २१ । और एक सिवाने से लेके दूसरे सिवाने लों सारे मिस्र देश में जो प्रजा रहती थी उस को उस ने नगरों में ले आ ले आके बसा दिया ॥ २२ । हां याजकों की भूमि तो उस ने न मोल लिई क्योंकि याजकों के लिये फिरौन की ओर से नित्य भोजन का बन्दोबस्त था और जो नित्य भोजन फिरौन उन को देता था सोई वे खाते थे इस कारण उन को अपनी भूमि बेचनी न पड़ी ॥ २३ । फिर यूसुफ ने प्रजा के लोगों से कहा सुनो मैं ने आज के दिन तुम को और तुम्हारी भूमि को भी फिरौन के लिये मोल लिया है देखो तुम्हारे लिये यहां बीज है इसे भूमि में बोओ ॥ २४ । और इस से जो कुछ उपजे उस का पंचमांश फिरौन को देना बाकी चार अंश तुम्हारे रहेंगे कि तुम उसे अपने खेतों में बोओ और अपने अपने बालबच्चों और घर के और लोगों समेत खाया करो ॥ २५ । उन्हों ने कहा तू ने हम को जिलाय लिया है हे हमारे प्रभु तेरी अनुग्रह की दृष्टि हम पर बनी रहे और हम फिरौन के दास होके रहेंगे ॥ २६ । इस प्रकार यूसुफ ने मिस्र की भूमि के विषय में यह एक ऐसा नियम ठहराया जो आज के दिन लों चला आता है कि पंचमांश फिरौन को मिला करे केवल याजकों ही की भूमि फिरौन की नहीं हो गई ॥ २७ । तब से इस्राएलवंशी मिस्र देश में के गोशेन देश में रहने लगे और उस में की भूमि निज कर लेने लगे और फूले फले और अत्यन्त बढ़ गये ॥

(इस्राएल के आशीर्बादों और मृत्यु का वर्णन.)

२८ । मिस्र देश में याकूब सतरह बरस जीता रहा सो याकूब की सारी आयुर्दा एक सौ सैंतालीस बरस की हुई ॥ २९ । जब इस्राएल के मरने का दिन निकट आ गया तब उस ने एक दिन अपने पुत्र यूसुफ को बुलवाके कहा यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो तो अपना हाथ मेरी जांघ के तले रखके किरिया खा कि मैं तेरे साथ कृपा और सच्चाई का यह काम करूंगा कि तुझे मिस्र में मिट्टी न दूंगा ॥ ३० । जब तू अपने बापदादों के संग सो जावेगा तब मैं तुझे मिस्र से उठा ले जाके उन्हीं के कबरिस्तान में रक्खूंगा यह सुनके यूसुफ ने कहा मैं तेरे बचन के अनुसार ही करूंगा ॥ ३१ । फिर उस ने कहा मुझ से ऐसी किरिया भी खा सो उस ने उस से वैसी ही किरिया खाई तब इस्राएल ने खाट के सिरहाने की ओर फिरके ईश्वर को दण्डवत किया ॥

४८. **इन** बातों के पीछे एक दिन किसी ने यूसुफ से कहा सुन तेरा पिता बीमार है यह सुनकर वह मनश्शे और एप्रैम नाम अपने दोनों पुत्रों को संग लेके उस के पास चला ॥ २ । इतने में किसी ने याकूब को बता दिया कि सुन तेरा पुत्र यूसुफ तेरे पास आ रहा है यह सुनके इस्राएल अपने को संभालके खाट पर बैठ गया ॥ ३ । जब यूसुफ पहुंचा तब याकूब ने उस से कहा सर्वशक्तिमान ईश्वर ने कनान देश के लूज नगर के पास मुझे दर्शन देके आशीष दिई ॥ ४ । और कहा सुन मैं तुझे फुला फलाके बढ़ाऊंगा और तुझे जाति जाति की मण्डली का मूल बनाऊंगा और तेरे पीछे तेरे बंश को यह देश ऐसा दूंगा कि वह सदा लों उस की निज भूमि रहेगी ॥ ५ । और अब तेरे दोनों पुत्र जो मिस्र में मेरे आने से पहिले जन्मे सो मेरे ही ठहरेंगे अर्थात् जिस रीति रूबेन और शिमोन मेरे हैं उसी रीति एप्रैम और मनश्शे भी मेरे ठहरेंगे ॥ ६ । और उन के पीछे अब जो सन्तान तू जन्मावेगा सो तेरे तो ठहरेंगे पर भाग पाने के समय वे अपने भाइयों ही के बंश में गिने जावेंगे ॥ ७ । फिर जब

मैं पद्दान से आता था तब एप्राता पहुंचने से थोड़ी ही दूर पहिले राहेल कनान देश में मार्ग ही में मेरे साम्हने मर गई और मैं ने उसे वहीं अर्थात् एप्राता जो बेतलेहेम भी कहावता है उसी के मार्ग में मिट्टी दिई ॥ ८ । इतना कहके इस्राएल को यूसुफ के पुत्र देख पड़े और उस ने पूछा वे कौन हैं ॥ ९ । यूसुफ ने अपने पिता से कहा वे मेरे पुत्र हैं जो परमेश्वर ने मुझे यहां दिये हैं उस ने कहा उन को मेरे पास ले आ कि मैं उन्हें आशीर्बाद देऊं ॥ १० । इस्राएल के नेत्र तो बुढ़ापे के कारण धुन्धले हो गये थे यहां लों कि उसे कम सूझता था सो यूसुफ उन्हें उस के पास ले गया और उस ने उन्हें चूमके गले लगा लिया ॥ ११ । तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा मैं सोचता तो न था कि तेरा मुख फिर देखने पाऊंगा पर क्या देखता हूं कि परमेश्वर ने मुझे तेरा बंश भी दिखाया है ॥ १२ । फिर यूसुफ ने उन्हें अपने घुटनों के बीच से हटाकर और अपने मुंह के बल भूमि पर गिरके दण्डवत किई ॥ १३ । तब यूसुफ ने उन दोनों को पकड़ लिया अर्थात् एप्रैम को तो अपने दहिने हाथ से जिस्तें वह इस्राएल के बाएं हाथ पड़े और मनश्शे को अपने बाएं हाथ से कि वह इस्राएल के दहिने हाथ पड़े और इसी प्रकार उन्हें उस के पास ले गया ॥ १४ । तब इस्राएल ने अपना दहिना हाथ तो बढ़ाके एप्रैम के सिर पर जो छुटका था और अपना बायां हाथ बढ़ाके मनश्शे के सिर पर रख दिया उस ने तो जान बूझके ऐसा किया नहीं तो जेठा मनश्शे ही था ॥ १५ । फिर उस ने यूसुफ को आशीर्बाद देके कहा परमेश्वर जिस को मेरे बापदादे इब्राहीम और इसहाक अपने साम्हने जानके चलते थे और वही परमेश्वर मेरे जन्म से लेके आज के दिन लों मेरा चरवाहा बना है ॥ १६ । और वही दूत मुझे सारी बुराई से छुड़ाता आया है सोई अब इन लड़कों को आशीष देवे और ये मेरे और मेरे बापदादे इब्राहीम और इसहाक के कहलावें और पृथिवी में बहुतायत से बढ़ें ॥ १७ । यह देखके कि मेरे पिता ने अपना दहिना हाथ एप्रैम के सिर पर रक्खा है यूसुफ को बुरा लगा सो उस ने अपने पिता का हाथ इस मनसा से पकड़ लिया कि एप्रैम के सिर पर से उठाके मनश्शे के सिर पर धरा देवे ॥ १८ । और यूसुफ ने अपने पिता से कहा हे पिता ऐसा नहीं क्योंकि जेठा यही है अपना दहिना हाथ इसी के सिर पर रख ॥ १९ । उस के पिता ने नकारके कहा हे पुत्र मैं इस बात को भली भांति जानता हूं यद्यपि इस से भी मनुष्यों का एक समुदाय उत्पन्न होवेगा और यह भी महान हो जावेगा तौभी इस का छुटका भाई इस से अधिक महान हो जावेगा और उस के बंश से बहुत सी जातियां निकलेंगी ॥ २० । फिर उस ने उसी दिन यह कहके उन को आशीर्बाद दिया कि हे यूसुफ इस्राएली लोग तेरा पटतर दे देके ऐसा आशीर्बाद दिया करेंगे कि परमेश्वर तुझे एप्रैम और मनश्शे के समान बना देवे इस रीति उस ने मनश्शे से पहिले एप्रैम का नाम लिया ॥ २१ । तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा देख मैं तो मरता हूं परन्तु परमेश्वर तुम लोगों के संग रहेगा और तुम को तुम्हारे पितरों के देश में फेर पहुंचा देगा ॥ २२ । और मैं तो तुझ को तेरे भाइयों से अधिक भूमि का एक भाग देता हूं जिस को मैं ने एमोरियों के हाथ से अपनी तलवार और धनुष के बल से लिया है ॥

४९. फिर

याकूब ने अपने पुत्रों को यह कहके बुलाया कि एकट्ठे हो जाओ मैं तुम को बताऊंगा कि अन्त के दिनों में तुम्हारे बंश पर क्या क्या बीतेगा ॥ २ । हे मुझ याकूब के पुत्रो एकट्ठे होके सुनो मुझ अपने पिता इस्राएल की ओर कान लगाओ सो जब वे एकट्ठे भये तब वह कहने लगा ॥ ३ । हे रूबेन तू मेरा जेठा मेरा बूता और मेरे पौरुष का पहिला फल तो है प्रतिष्ठा का उत्तम भाग और शक्ति का भी उत्तम भाग तू तो है ही ॥ ४ । पर तू जो जल की नाईं उबलनेहारा है इस लिये औरों से श्रेष्ठ न ठहरेगा क्योंकि तू मुझ अपने पिता की खाट पर चढ़ा तब तू ने उस को अशुद्ध किया फिर कहता हूं तू मेरे

बिछौने पर चढ़ गया ॥ ५ । शिमोन और लेवी तो भाई भाई हैं उन की तलवारें उपद्रव के हथियार हैं ॥ ६ । हे मेरे जीव उन के मर्म्म में न पड़ हे मेरी महिमा उन की सभा में मत मिल क्योंकि उन्हों ने कोप से मनुष्यों को घात किया और अपनी ही इच्छा पर चलके बैलों की खूंच काटी है ॥ ७ । धिक्कार उन के कोप को जो प्रचण्ड था और उन के रोष को जो निर्दय था सो मैं कहता हूं कि वे याकूब-बंशियों में अलग अलग और इस्राएलबंशियों में तित्तर बित्तर हो जावेंगे ॥ ८ । हे यहूदा तेरे भाई तेरा धन्यबाद करेंगे और तेरा हाथ तेरे शत्रुओं की गर्दन पर पड़ेगा और मुझ तेरे पिता के पुत्र तुझे दण्डवत करेंगे ॥ ९ । हे यहूदा तू सिंह का डांवरू ठहरा है हे मेरे पुत्र तू अहेर करके गुफा में गया है तू सिंह अथवा सिंहिनी की नाईं दबकके बैठ गया फिर कौन तुझ को छेड़ेगा ॥ १० । जब लों शीलो न आवे तब लों न तो तुझ यहूदा से राजदण्ड छूटेगा न तेरे बंश से ब्यवस्थादायक अलग होगा और जाति जाति के लोग तेरे ही अधीन हो जावेंगे ॥ ११ । तू अपने जवान गदहे को दाखलता में और अपनी गदही के बच्चे को उत्तम जाति की दाखलता में बांधा करेगा तू अपने बस्त्र दाखमधु में और अपना पहिरावा दाखों के रस में धोया करेगा ॥ १२ । तेरी आंखें दाखमधु से चमकीली और तेरे दांत दूध से श्वेत होवेंगे ॥ १३ । जबूलून समुद्र के तीर पर बास करेगा वह जहाजों के लिये घाट का काम देगा और उस का परला भाग सीदोन के निकट पहुंचेगा ॥ १४ । इस्साकार मानो एक बड़ा और बलवन्त गदहा है जो पशुओं के बाड़ों के बीच में दबका रहता है ॥ १५ । उस ने एक विश्रामस्थान देखके कि अच्छा है और एक देश कि मनोहर है अपने कन्धे को बोझ उठाने के लिये झुकाया और बेगारी में दास का सा काम करने लगा ॥ १६ । दान इस्राएल का एक गोत्र होके अपने जातिभाइयों का न्याय करेगा ॥ १७ । दान मार्ग में का एक सांप और बाट में का एक नाग ठहरेगा जो घोड़े की नली को ऐसा डंसता है कि जो उस पर चढ़ा होवे सो पछाड़ खाके गिर पड़ता है ॥ १८ । हे यहोवा मैं तुझी से उद्धार पाने की बाट जोहता आया हूं ॥ १९ । गाद जो है उस पर एक दल चढ़ाई तो करेगा पर वह उसी दल की पिछाड़ी पर छापा मारेगा ॥ २० । आशेर से जो अन्न उत्पन्न होवेगा सो उत्तम होगा और वह राजा के योग्य स्वादिष्ठ भोजन दिया करेगा ॥ २१ । नप्ताली एक छूटी हुई हरिणी के समान है वह सुन्दर बातें बोलता है ॥ २२ । यूसुफ फलवन्त लता की एक शाखा फिर कहता हूं सोते के पास लगी हुई फलवन्त लता की एक शाखा ठहरा उस लता के सूत भीत पर से चढ़के फैल जाते हैं ॥ २३ । हां धनुर्धारियों ने यूसुफ के मन को खेदित किया और उस पर बाण मारे और उस के पीछे तो पड़े हैं ॥ २४ । पर उस का धनुष दृढ़ रहा और उस की बांह और हाथ मुझ याकूब के उसी शक्तिमान ईश्वर के हाथों के द्वारा फुर्तीले भये जिस के पास से वह चरवाहा उत्पन्न होवेगा जो इस्राएल का पत्थर भी ठहरेगा ॥ २५ । हे यूसुफ तेरे पिता का ईश्वर जो तेरी सहायता करेगा वह सर्बशक्तिमान जो तुझे ऊपर से आकाश में की आशीषें और नीचे से गहिरे जल में की आशीषें और स्तनों और गर्भ की आशीषें देवेगा तिस के हाथों के द्वारा तू सामर्थी भया ॥ २६ । तेरे पिता के आशीर्बाद मेरे पितरों के आशीर्बादों से अधिक बढ़ गये हैं और सनातन पहाड़ियों की मनचाही बस्तें जब लों रहेंगी तब लों वे भी बने रहेंगे ये सब आशीर्बाद तुझ यूसुफ के सिर पर फिर कहता हूं तू जो अपने भाइयों में से न्यारा हुआ सो तेरे ही चोण्डे पर आवेंगे ॥ २७ । बिन्यामीन हुण्डार की नाईं फाड़ा करेगा सबेरे तो वह अहेर भक्षण करेगा और सांझ को लूट बांट लेवेगा ॥

२८ । इस्राएल के बारहों गोत्र ये ही हैं और उन के मूलपुरुष ने जिस जिस बचन से उन को आशीर्बाद दिया सो ये ही हैं जो जो आशीर्बाद जिस जिस पर फलनेहारा था सो सो उस ने उन को दिया ॥ २९ । तब उस ने यह कहके उन को आज्ञा दिई कि मैं तो अब अपने लोगों के साथ मिलने पर हूं सो मुझे हित्ती एप्रोन की भूमिवाली गुफा में मेरे बापदादों के साथ ही मिट्टी देना ॥